

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180136

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No.

H84

M32A

Accession No.

H636

Author

मार्डन, स्वेट

Title

आगे बढ़ो. अनु. नाथूराम शुक्ल

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रकाशक
बृहस्पति उपाध्याय,
हिन्दी मन्दिर, प्रयाग ।

सप्तवां संस्करण : १९४७

मूल्य
सवा रुपया

मुद्रक
भगवन्त किशोर
द्वीपक प्रिन्टिंग प्रेस,
दिल्ली ।

विषय-सूची

	पृष्ठ
१—मनुष्य और अवसर	३
२—अभागे बालक	१३
३—फुरसत की घड़ी	२७
४—प्रतिकूल परिस्थिति	३५
५—जीवन का उद्देश्य	४२
६—एकाग्रता	४३
७—वक्त की पाबन्दी	५६
८—शिष्टाचार	६६
९—उत्साह	७४
१०—व्यवहार-कुशलता	८१
११—आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास	८६
१२—चरित्र-बल	९१
१३—यथार्थता	१०४
१४—अध्यवसाय	११५
१५—संचेप	१२२

दो शब्द

दस वर्ष पहले की बात है। मैं शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा में लखनऊ गया था। हृदय में साहसमात्र था। कुछ दिन बाद मुझे आर्थिक संकट में पड़ जाना पड़ा और चारों ओर निराशा-ही निराशा दिखाई देने लगी। न कोई सहायक था और न कोई सहानुभूति के दो शब्द ही कहने वाला। मुझे एक कविता की ये पंक्तियाँ बार-बार याद आती थीं—

भला सुनेगा यहाँ कौन अब मेरी करुण कहानी।

जीवन की उलझन में भूले जग के गंगे प्राणी ॥

सच है, उस वैभवपूर्ण नगरी में कौन किसीकी सुननेवाला था? एक बाजार में घूमते-घूमते स्वेट माइने की "पुशिंग टु दि फ्रंट" (Pushing to the Front) नामक पुस्तक रद्दी कागजों में हाथ लगी। थोड़े-से मूल्य पर मैंने पुस्तक खरीद ली और एक रात में ही उसे पढ़ डाला।

पुस्तक पढ़ने पर ऐसा मालूम हुआ कि कर्मयोगी वीरों के लिए निराशा नाम की तो कोई चीज ही नहीं है। पुस्तक क्या थी, उच्च विचारों का खजाना था। वह एक अमोघ शक्ति सिद्ध हुई। पतन और असफलता में तो उसका एक-एक शब्द जादू का काम करता था। इस फटी हुई पुस्तक ने मेरे जीवन की काया पलट दी। कई बार पुस्तक को भारतीय नवयुवकों के हाथ में पहुँचाने की इच्छा हुई परन्तु अनेक विषम परिस्थितियों में पड़े रहने के कारण यह स्वप्न सफल न हो सका।

पाठक-बन्धु, जब आपका भाग्य अन्धकारमय दीखता हो, जब विपत्तियों के बादल चारों ओर घिर रहे हों, जब आप कर्तव्य-भ्रष्ट हो रहे हों, जब जीवन की नौका, इस बेकारी के युग में, डोंवाडोल हाँकर डूबना चाहती हो, तब आप "आगे बढ़ो" को उठाइए। एक बार आदि से अन्त तक पढ़ जाइए। आपको साहस की संजीवनी शक्ति प्राप्त होगी। आपका मार्गकष्टमय होने हुए सो आशा और सुख की प्रभा से दीप्त हो जाएगा।

आप अपने ध्येय को और दृढ़ता से बढ़ सकेंगे। मेरे इन शब्दों की सचाई आपको यह पुस्तक पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगी। सच तो यह है—आप विद्यार्थी हों, व्यापारी हों, नौकर हों, युवा हों, बूढ़े हों, गरीब हों, अमीर हों, सुख में हों, दुःख में हों,—कहीं कैसी भी परिस्थिति में हों, यह ग्रन्थ आपकी मदद करेगा, आपका सच्चा मित्र सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में संसार के महान् पुरुषों के जीवन-चरितों का, चुने हुए उदाहरणों का, बड़े ही रोचक ढंग से समावेश हुआ है ! उनके जीवन-चरितों की ये चुनी हुई बातें हरेक के जीवन को लाभ-दायक और उन्नति के पथ पर ले जाने वाली हैं। आप उन्नति के शिखर पर चढ़ना चाहते हों तो इन बातों का मनन कीजिए और इन्हें अपने जीवन में प्रयोग कर देखिए। ये चरण-चिह्न अमर चिह्न हैं। इनपर भूले-भटके लोग सफलता के द्वार पर अवश्य पहुँच सकेंगे।

जिस ग्रन्थ से लाखों ने लाभ उठाया उससे आप भी लाभ उठा अपने जीवन को सुखी बनाने में समर्थ हों—यही मेरी कामना है।

जबलपुर

१-६-३१

}

नाथूराम शुक्ल

आगे बढ़ो

—एक—

मनुष्य और अवसर

“कोई भी आदमी जबतक किसी चीज के लिए मेहनत नहीं करेगा तबतक वह चीज उसे मिल नहीं सकती।” — गारफील्ड

“सतर्कता से अवसर की ताक में रहना; कौशल और साहस से अवसर को प्राप्त करना; शक्ति और हृदय के द्वारा अवसरों को सर्वोत्तम सफलता पर पहुँचाना—निश्चय ही सफलता को देने वाले प्रधान सद्गुण हैं।” — आस्टिन फेल्लम

“क्या तुम सच्चे हृदय से उद्योगी हो ? तो इस मिनट को व्यर्थ मत जाने दो। जिस बात को तुम कर सकते हो अथवा जिस बात का तुम स्वप्न देख सकते हो, उसे शुरू कर दो।”

“मैं रास्ता ढूँढ़ लूँगा या अपना रास्ता स्वयं बना लूँगा”—वरले नील नदी का युद्ध-समय पास आ रहा था। नेलसन ने अपने सेना नायकों के सामने लड़ाई का नक्शा रक्खा। कप्तान बेरी उसे देखकर हर्षित हो उठा और बोला—“यदि हमारी जीत हो गई तो दुनिया क्या कहेगी ?”

नेलसन चुप न रह सका। बोला—“यदि के लिए कोई स्थान नहीं है, जीत निश्चय ही हमारी होगी। हाँ, हमारी विजय की कहानी कहने वाला कोई बचेगा या नहीं, यह प्रश्न दूसरा है।” थोड़ी देर में जब कप्तान जाने लगे, तब निश्चयपूर्वक नेलसन ने कहा—“कल इस समय के पहले ही या तो मुझे विजय प्राप्त हो जावेगी या मेरे लिए वेस्टमिंस्टर के गिर्रों में कब्र तैयार हो जायगी।”

सब लोग चले गए। जिस बात में उसके अन्य साथियों को डार की

सम्भावना दी जाती थी। वहीं नेल्सन की तीव्र दृष्टि और माहसी आत्मा को एक शानदार विजय का अवसर दीख रहा था।

सेन्ट बरनार्ड की घाटी का निरीक्षण करके खोटे हुए इंग्लिशियों से नेपोलियन ने पूछा—“क्या रास्ता पार करना सम्भव है?” इंग्लिशियों ने कुछ क्षिप्त होते हुए कहा—“जी, शायद हम पार कर सकें।”

“मिपाहियां, आगे बढ़ो” सामने दिखाई देनेवाली बहुत-सी महान कठिनाइयों की ओर किञ्चित् ध्यान दिखे बिना नेपोलियन के मुँह से निकल पड़ा। इंग्लैण्ड और आस्ट्रिया के लोग इस नाटे कद के नवयुवक की बातों को सुनकर हैसते थे और कहते थे कि साठ हजार मनुष्यों की सेना, सैकड़ों मन युद्धास्त्र के साथ, आरम्भ पहाड़ को भला कैसे पार कर सकती है? परन्तु उसी समय जेनेवा में उसका साथी मासेना शत्रुओं से घिरा भूखों मर रहा था। विजयी आस्ट्रियन नील के फाटकों पर धावा कर रहे थे। क्या ऐसे संकट के समय नेपोलियन अपने साथियों से मुँह मोड़ सकता था?

जब वह असम्भव बात सम्भव हो गई तो लोग कहने लगे—“वाह! यह कौन-सी बड़ी बात है; ऐसा तो पहले भी हो सकता था।” दूसरे लोग राह की भीषण कठिनाइयों के कारण उसे दुस्तर कार्य कहते थे। बहुत-से सेनानायकों के पास भी सेना, हथियार और अन्य उपयोगी सामग्रियाँ थीं, परन्तु उनके पास वह दृढ़ इच्छा-शक्ति नहीं थी जिसके कारण नेपोलियन का कलेजा कठिनाइयों को देखकर चञ्चल हो जाता था। वह बड़ी-से-बड़ी आपत्ति के आ जाने पर अपनी आवश्यकताओं के द्वारा ही अपने अवसरों का मालिक बन बैठता था।

क्या ये सब बातें अपने-आप हो गईं, जब हॉरेशस ने केवल दो साथियों के बल पर नब्बे हजार टुकसनों की सेना को टाइबर के पुल के टूटने तक रोक लिया था; जब लियोनिडास ने थर्मोपली पर जरजेक को रोक रखा था; जब सीजर ने हार हॉन देख भागा छिपे हुए आगे बढ़कर युद्ध

की काया-पलट कर दी थी; जब विकल रीट ने अपनी छाती को आस्ट्रेलियन भालों के सामने करके स्वतन्त्रता का मार्ग खोल दिया था; जबकि वर्षों तक नेपोलियन किसी युद्ध में पराजित नहीं हुआ था ?

इतिहास के पन्ने ऐसे हजारों उदाहरणों से भरे पड़े हैं जिनसे पता चलता है कि शीघ्र निर्णय और आत्मा की पुकार पर किए हुए कार्य के सामने संसार में कोई बाधा ठहर नहीं सकती ।

कई लोग असाधारण अवसर की बात जोहा करते हैं । साधारण अवसर उनकी दृष्टि में उपयोगी नहीं रहते । परन्तु वास्तव में कोई अवसर छोटा-बड़ा नहीं है । छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसीमें भिड़ा देने से, वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है ।

ई० एच० चेपिन ने ठीक ही लिखा है कि सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं जो अवसरों की बात देखते रहते हैं, परन्तु वे हैं जो अवसर को अपना दास बना लेते हैं । लाखों अवसरों का खोजने से शायद ही ऐसा अवसर मिले जो खासतौर पर तुम्हारी सहायता कर सके । परन्तु तुम्हारे सामने हमेशा ही अवसर उपस्थित रहते हैं । यदि तुममें इच्छा-शक्ति है, काम करने की ताकत है, तब तो तुम स्वयं ही उनसे फायदा उठा सकते हो । ईश्वर की कृपा-रूपी इस बहती हुई गंगा में स्नान करके अपने जीवन को क्यों नहीं सफल कर लेते ?

अवसर न मिलने की शिकायत कमजोर और हिचकिचाते वाले मनुष्य ही हमेशा किया करते हैं । अवसर ! स्कूल अथवा कालेज का प्रत्येक पाठ एक अवसर है । प्रत्येक परीक्षा जीवन का एक अवसर है । कठिनाई का प्रत्येक पल एक अवसर है । प्रत्येक सदुपदेश एक अवसर है । प्रत्येक व्यापार-सम्बन्धी बात एक अवसर है । उस अवसर से तुम नम्र हो सकते हो, मनुष्यत्व प्राप्ति कर सकते हो, ईमानदार हो सकते हो और मित्र बना सकते हो । विश्वासपात्रता का हरेक मन्त्र एक अवसर है । तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे ईमान पर छोड़ा हुआ उत्तरदायित्व अमूल्य है । जीवन अवसरों की एक धारा है ।

आलसी आदमी ही शिकायत किया करते हैं कि उन्हें समय नहीं है, उन्हें अवसर प्राप्त नहीं है। पर काम करने वाले ऐसी बातें कभी नहीं कहते। कुछ नवयुवक छोटे-मोटे अवसरों को उपयोग में लाकर इतना काम कर डालते हैं कि जितना दूसरे सारे जीवन में भी नहीं कर पाते। शहद की मक्खियों के समान वे नवयुवक हरेक फूल से शहद इकट्ठा करते हैं। प्रत्येक मिलने वाला व्यक्ति दिन की प्रत्येक घटना, उनके ज्ञान-भण्डार को या उनके व्यक्तित्व को बढ़ाती है।

कार्डिनल ने कहा है कि ऐसा कोई भी व्यक्ति संसार में नहीं है जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो, परन्तु जब वह देखता है कि यह व्यक्ति उसका स्वागत करने के लिए तैयार नहीं है तब वह उल्टे पैर लौट जाता है।

राकफेलर ने अपना अवसर पेट्रोलियम (मिट्टी का तेल) में देखा। उसकी आँखों के सामने मन्द-मन्द दीपक के प्रकाश में जाग्रत होने वाले सैकड़ों घर थे। पेट्रोलियम बहुत था, किन्तु उसको साफ करने की क्रिया इतनी रही थी कि उससे साफ तेल न निकलता था। यही राकफेलर का अवसर था। उसने मेन्युअल एण्ड्रूज़ नामक पोर्टर को अपना हिस्सेदार बनाया। उसने एक अच्छी विधि में तेल को साफ करना शुरू किया। उसका तेल बहुत साफ होता था। शीघ्र ही उसकी वृद्धि होने लगी। उसने फ्लागर नामक एक तीसरे हिस्सेदार को शामिल कर लिया। परन्तु एण्ड्रूज़ शीघ्र ही असन्तुष्ट होगया। एक दिन राकफेलरने उसमें पूछा—“तुम क्या लोगे?”

एण्ड्रूज़ ने बेपरवाही से एक पुरजे पर लिख दिया—“१० लाख डालर।” २४ घण्टों के अन्दर राकफेलर ने दस लाख डालर का चेक देने हुए कहा—“एक करोड़ की अपेक्षा दस लाख देकर मरने ही में निपट गए।” बीस वर्षों में वह छोटा-सा तेल साफ करने का कारखाना—जिसके यन्त्र की कीमत मुश्किल से एक हजार डालर होगी—स्टैन्डर्ड-आइल-

स्टाक में परिवर्तित हो गया जिसका मूलधन ६ करोड़ डालर है, जिसके स्ट्राक का मूल्य १७ करोड़ डालर था और बाजार-भाव से जिसकी कीमत १ अरब ५ करोड़ डालर है।

ऐसे अनेक लोग हैं जो अवसर को पकड़कर धनवान् हो गए और करोड़पति कहलाने लगे। परन्तु अवसरों का क्षेत्र यहां समाप्त नहीं हो जाता। नई पीढ़ी के सामने ऐसे-ऐसे अवसर हैं जिनका उपयोग करके वे इंजीनियर, विद्वान्, कला-विशारद, कवि आदि बन सकते हैं। यद्यपि अवसरों के उपयोग से धन कमाना अच्छा काम है, परन्तु धन से भी कहीं श्रेष्ठ कार्य सामने हैं। धन ही जीवन के प्रयत्नों का अन्त नहीं है, मनुष्य-जीवन के लक्ष्य की चरम सीमा नहीं है, बल्कि एक घटना है। अतएव दूसरे प्रकार के अवसरों पर ध्यान देकर तुम अपने को गौरव-शाली व्यक्ति बना सकते हो।

एलिजाबेथ फ्राय नामक देवी ने इंग्लैण्ड के जेलखानों में अवसर देखा। सन् १८१३ में लन्दन के जेलखानों की बड़ी बुरी अवस्था थी। एक ही कमरे में लगभग ३०० औरतें अर्ध-नग्न अवस्था में बन्द कर दी जाती थीं। उनका न बिस्तर मिलते थे और न कपड़े। बूढ़ी, युवती और बालिकाएँ सभी घास, कचरे और चिथड़ों में सोया करती थीं। कोई उनकी परवाह नहीं करता था। जिन्दा रखने मात्र के लिए सरकार उन्हें भोजन देती थी। श्रीमती फ्राय ने जेलखाने में शिक्षा का प्रचार करना अपने जीवन का मुख्य काम बना लिया। जेल की स्त्रियाँ पहले तो यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गईं। कौन सोचता था कि इस भयंकर विकारपूर्ण दल के उद्धार के लिए कोई आगे बढ़ेगा? किये मालूम था कि माता के महान् प्रेम के द्वारा कोई रमणी इन पाप और अज्ञान में डूबी हुई स्त्रियों को हृदय से लगावेगी? किन्तु अन्त में शिक्षा का काम शुरू हो गया। शिक्षा ने बड़ा परिवर्तन किया। तीन महीने में वे भयंकर पशु शान्त और निर्दोष हो गए। सुधार का विस्तार होने लगा।

अन्त में सरकार ने इस बात को कानूनन जारी कर दिया। एक सदी बीत गई और आज श्रीमती फ्राय की योजना सम्भव संसार भर में काम में लाई जाती है।

एक लड़का कहीं जा रहा था। रास्ते में मोटर के धक्के से वह गिर पड़ा। उसकी एक नस टूट गई और खून बड़े जोर से बहने लगा। किसीको कुछ नहीं सूझता था कि क्या करें। यदि थोड़ी देर और खून बहता तो सम्भव था कि लड़का वही बुरी अवस्था में पड़ जाता। परन्तु उसी समय एक आस्ट्रेल नामक युवक की नजर उसपर पड़ी। उसने तब के ऊपरी हिस्से को बांध दिया। इससे खून का जाना बन्द हो गया। लड़के की जान बच गई। लोग युवक की खूब प्रशंसा करने लगे। आस्ट्रेल को छाती फूँक कर दूनी हो गई। इसी उस्माह ने उसे संसार का एक प्रसिद्ध सर्जन बना दिया।

एक दिन हाथार्न और लांगफेलो भोजन कर रहे थे। उनके एक मित्र जेम्स फील्डस भी वहाँ मौजूद थे। उन्होंने कहा—“देखो, मैं कितने दिन से हाथार्न से एक आर्कैडियन दन्तकथा के आधार पर कहानी लिखने के लिए कह रहा हूँ। कथानक यों है कि आर्कैडियन लोगों की भाग-दौड़ में एक लड़का अपने प्रेमी से जुदा हो गई। उसने अपना सारा जीवन उसे ढूँढ़ने में बिता दिया और अन्त में एक अस्पताल में मृत्यु-शय्या पर उसे पाया।” यह सुनकर लांगफेलो आश्चर्य में पड़ गया। उसने हाथार्न से कहा—“अगर तुम्हारा विचार इस कहानी को लिखने का नहीं है तो क्या तुम मुझे इसपर कविता बनाने की आज्ञा देते हो?” हाथार्न ने स्वीकार कर लिया। लांगफेलो ने अवसर से लाभ उठाया और संसार के सामने “इवेजेलिन” नामक काव्य उपस्थित कर दिया।

आखें खोलकर देखो और हरेक जगह तुम्हें अवसर मिलेंगे! कान खुले रखने वालों के पास अमहाय मरनेवालों की आवाजें पहुँचे बिना न रहेगी। खुले हृदय वालों को मुक्त हृदय से दान देने योग्य सुन्दर

वस्तुओं की कमी नहीं होगी और खुले हाथों के लिए महान कार्य करने के अवसर की कमी न होगी।

भला कौन नहीं जानता कि पानी से भरे किसी बर्तन में कोई एक ठोस चीज डुबोई जाती है तो थोड़ा पानी बह जाता है, परन्तु कोई अपने इस ज्ञान का उपयोग न कर सका। आर्किमिडीज की नजर इस चीज पर पड़ी। उसने देखा कि प्रत्येक पदार्थ अपने आयतन के अनुसार ही पानी बाहर फेंक देता है। उसी दिन से संसार को सब प्रकार के पदार्थों का आयतन निकालने का तरीका मिला गया।

कौन नहीं जानता था कि कोई भी लटकता हुआ पदार्थ जब हिल्ला दिया जाता है तो वह इधर-उधर हिलता है। उसकी यह गति धीरे-धीरे हवा के विरोध और घर्षण से बन्द हो जाती है। किसीने भी इस घटना का मूल्य नहीं समझा, परन्तु बालक गैलिलियो ने एक दिन पाइजानगर के गिरजाघर में ऊँचाई से लटकते हुए चिराग को देखा। हवा के झोंके के कारण चिराग झूलने लगा था। इसी झूलने की गति ने 'पेन्डुलम' के सिद्धान्त को जन्म दिया।

यह सब जानते हैं कि कोई भी चीज ऊपर से नीचे की ओर गिरती है। लेकिन पेड़ पर से सेब को नीचे गिरते देखकर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त न्यूटन ने ही खोजा था।

अवसर कोई पकी-पकाई रोटी तो है ही नहीं कि झूट और लिया और खाने लगे। उसे आँखें खोलकर पहचानना पड़ता है, उसमें उचित सुधार करना पड़ता है और कार्य और उद्देश्य के अनुकूल बनाना पड़ता है। अवसर का उपयोग तो बीजने के समान है। इस बीज से वृक्ष तैयार होता है, फिर फल लगते हैं, इन फलों से दूसरे लाभ उठाते हैं। भूतकाल में उद्योग करने वालों ने ज्ञान और उपयोग की अगणित चीजों को तैयार किया और आज ये अप्राप्य वस्तुएँ गली-गली मारी-मारी फिरने लगीं।

वर्तमान युग में एक पढ़े-लिखे संशयी युवक के सामने, एक चपरासी

क्रे लड़के के सामने, एक क्लार्क के सामने, एक गली-गली भटकनेवाले अनाथ के सामने, पचासों बड़े-बड़े सुगम मार्ग खुले पड़े हैं। पहले इने-गिने थे, आज अनेक हैं। जो बातें भूतकाल में इस श्रेणी के मनुष्यों को सीमा के बाहर थीं वे ही आज उनका स्वागत करने के लिए खड़ी हैं। अवसरों की सीमा नहीं, भाग्य पलट देनेवाली घटनाओं की कमी नहीं, कमी है तो केवल कार्यशील दृढ़ युवकों की।

चित्रशाला में एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। बहुत चित्र ठगें दिख-
लाए गए। एक चित्र में एक चेहरा बालों से ढका हुआ था। पैर में पंख लगे हुए थे।

दर्शक ने पूछा—“यह किसकी तस्वीर है?”

मूर्तिकार ने कहा—“अवसर की।”

“इसका मुँह क्यों छिपा हुआ है?”

“क्योंकि जब यह मनुष्यों के सामने आता है तो वे इसे पहचान नहीं सकते।”

“इसके पैरों में पंख क्यों लगे हैं?”

“क्योंकि यह जल्दी चला जाता है और एक बार चला जाता है तब उसको फिर कोई नहीं पा सकता।”

एक लेटिन लेखक ने लिखा है—“अवसर के चेहरे के सामने बाल रहते हैं और पीछे वह गंजा रहता है। यदि तुम सामने के बालों को पकड़ लो तो उसे पकड़े रह सकते हो, परन्तु यदि तुम भाग जाने दोगे तो स्वयं देवता भी फिर न पकड़ सकेंगे।”

परन्तु जो लोग अवसर का उपयोग नहीं कर सकते, जो अवसरों का उपयोग करना नहीं चाहते और जो अवसरों का उपयोग भविष्य में भी नहीं करेंगे, उनके लिए उम्दा-से-उम्दा अवसर का भी क्या उपयोग हो सकता है।

जिसे हम जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घड़ी कहते हैं वह अरनाल्ड

महोदय के कहने के अनुसार एक ऐसा अवसर है जहाँ हमारी पहले की सुरक्षित सारी ताकतों को इकट्ठा कर उनके द्वारा काम निकालता है। आकस्मिक घटनाएँ केवल उन्हीं लोगों के काम की हैं जिनके पास उनसे काम लेने का ज्ञान पहले से ही मौजूद है। दूसरे अन्य लोगों के पास से ऐसी घटनाएँ यों ही निकल जाती हैं।

हमारी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि हम हमेशा एक ऐसे बहुत अच्छे अवसर की फिराक में रहते हैं जिसके द्वारा हम क्षण-भर में महान् हो जायें। जुए के दाव के समान हम बिना कोशिश के ही विजय और धन-दौलत प्राप्त करना चाहते हैं। हम बिना काम किये उस काम में पारंगत कहलाना चाहते हैं, अध्ययन से दूर रहने पर भी ज्ञानवान् कहलाना चाहते हैं, उधार के धन पर श्रीमन्त बनना चाहते हैं। कैसा कपटपूर्ण व्यापार है ! इस तरह की धोखे की टट्टी कबतक टिक सकेगी ? इस प्रकार जीवन का क्यों सत्बानाश करते हो ?

सारा दिन आप आलस्य में क्यों बिताते हैं ? हाथ पैर हिलाइए। काम कीजिए और ज्ञान की बढ़ती हुई सम्पत्ति में और वृद्धि करके अपने को कृतार्थ कीजिए। मनुष्य बनिए।

ऐसे जमाने और ऐसे देश में आपका जन्म हुआ है कि जहाँ जगह-जगह पर कहीं न पाए जाने वाले साधन और अवसर आपके सामने पड़े हैं। काम करने की शक्ति और बुद्धि आपको ईश्वर ने दी है। तब आज्ञा मांगने के लिए क्यों रुकना चाहिए ? इस जगत् में आपके करने को बहुत-सा काम पड़ा है।

मानव-प्रकृति ऐसी बनी है कि बहुधा एक सुन्दर शब्द या एक तुच्छ सहायता किसी भाई की जीवन-नौका को आपत्ति से बचा सकती है, अथवा उसके जीवन को सफलता के पथ पर ले जा सकती है। हमारे सामने अगणित वीरों के उदाहरण हमें साहस देने और उत्साहित करने के लिए मौजूद हैं। ऐसे संसार और समय में, हरेक क्षण, हमें किसी-न-किसी नए अवसर के दरवाजे पर ले जाकर खड़ा कर देता है।

अपने अवसर ही बात मत देखो, उसे स्वयं ही खोजो-पहचानो । फर्ग्युसन नामक गहरिये लहकें के समान अवसर बनाओ । देखो, उसने थोड़े-से कौन के टुकड़ों के द्वारा दूर आकाश के तारों की दूरी का पता लगाया । जावे स्ट्रीफन्स के समान अवसर बनाओ । देखो, उसने खरिया मिट्टी के एक टुकड़े की महायता से कोयले की गाड़ियों के तख्तों पर गणित के नियमों का सीखा था । अपने-अपने अवसर उन हजारों स्वावलम्बी और निराश्रय बालकों के समान बनाओ जिनके पास कुछ नहीं था, कड़ाके की ठण्ड से उनका शरीर कांपता था, मूसलाधार बारिश में वे भीग जाते थे और कड़ा धूप में जो नंगे पैर बिना छाने के दौड़ते-फिरते थे । उनके पास पेट भर अन्न प्राप्त करने की ताकत भी नहीं थी कभी अधपेट रहते तो कभी पानी पीकर ही दिन बिताते थे । उनका कोई सहायक नहीं था । ऊपर एक परमात्मा और उनके हाथ-पैर और हृदय की दृढ़ता ही उनके सहायक थे । इन्हींके बल पर उन्होंने संसार की काया पलट दी । संसार उनका ऋणी है ।

युद्ध और शान्ति के समय में वीरों ने जिस तरह अपने अवसर स्वयं बनाकर सफलता प्राप्त की, वैसा तुम क्यों नहीं करते ? उद्योगी पुरुष साधारण अवसर को भी स्वर्णमय बना लेते हैं ।

जब भाग्य चमक रहा हो और कर्त्तव्य राह बतला रहा हो तो उस मौके को मत जाने दो, भय से काँप कर दूर न हटो, यदि सुख अपनी वाटिका में तुम्हें बुला रहा हो तो भी उधर मत झाँको । वीरता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाओ । अवसर तुम्हारी राह देखता बैठा है ।

—दा—

अभागे बालक

“प्रत्येक आपत्ति आप के समान नहीं होती । जीवन की प्राथमिक आपत्तियां बहुधा आशीर्वाद होती हैं । जीती हुई कठिनाइयां न केवल हमें शिक्षा ही देती हैं, बल्कि वे प्रयत्नों में हमें साहसी बनाती हैं ।” —शार्प

“इसमें सन्देह नहीं कि बड़े-बड़े कारखानों के मालिकों ने अपना जीवन ‘गरीब लड़कपन’ से शुरू किया था ।” —मेथलो

कीटो नामक एक बहरे लड़के ने पढ़ने की इच्छा बताते हुए कहा—
“पिताजी, मेरे भूखों मरने की बात से आप क्यों डरते हैं ? हमारे पास सब कुछ है । मैं भूख दूर करने का तरीका जानता हूँ । हाटेनटाट नामक जंगली बहुत समय तक केवल एक तरह का गोंद ही खाकर जीते थे । जब उन्हें भूख लगती थी तब वे अपने पेट के चारों ओर पट्टी बाँध लेते थे । क्या मैं भी यही काम नहीं कर सकता ? झाड़ियों में बेर और मकोय फलती है, खेती में शलजम पाए जाते हैं । क्या इनसे पेट का काम नहीं चल सकता ।”

यह गरीब और बहरा लड़का एक शराबी पिता का पुत्र था । लोग कहते थे कि वह जूते बनाने के सिवाय कुछ नहीं कर सकता । लेकिन वही लड़का बाइबिल का महान् प्रतिभाशाली पण्डित हो गया ।

क्रियो एक गरीब गुलाम था । उसका दिमाग ललित कलाओं का घर था । सौन्दर्य उसका देवता था । लेकिन ग्रीस में एक कानून बना । इस कानून के अनुसार कोई गुलाम एक स्वाधीन व्यक्ति के समान ललित कलाओं का अध्ययन नहीं कर सकता था । उन दिनों ग्रीस का समाज दो भागों में बँटा था—एक स्वतन्त्र, दूसरा गुलाम । स्वतन्त्र व्यक्ति ही सब

तर्ह की कलाओं और ऐश-आराम के अधिकारी थे। गुलामों के हाथ में कठिन-से-कठिन काम था। जिन दिनों यह कानून जारी किया गया, क्रियो एक सुन्दर मूर्ति-समूह के बनाने में लगा हुआ था। संगमरमर के टुकड़े पर उसने अपना दिमाग निकाल कर रख दिया था, अपना हृदय उसमें उँडेल दिया था और अपनी आत्मा उसमें बिठा दी थी। पेरीक्लीज से इनाम लेना उसका ध्येय था। लेकिन इस कानून ने तो मानो उसके हाथ काट डाले; उसका दिल जैसे टूट गया।

क्रियों की एक बहन थी। उसे भी इस घटना से बड़ा आघात पहुँचा। वह आँखों में आँसू भरकर देवी-देवताओं से प्रार्थना करने लगी कि “हे माता ! हमारे घर की पूज्य देवी ! मेरे भाई की रक्षा करो ! तुम्हारे चरणों में हमारा मस्तक अर्पित है। देवी ! तुम्हारी कृपा ही हमारे जीवन की रक्षा कर सकती है।”

फिर उसने अपने भाई से कहा—“भैया, तुम मकान के भीचे वाले तहखाने में अपनी चीजें लेकर चलो। मैं थोड़ी देर में चिराग और खाना लेकर आती हूँ। तुम अपने काम को जारी रखो। मैं तुम्हारी मदद करूँगी। भगवान् जरूर हमारा साथ देंगे।

क्रियों तहखाने में गया। वहाँ उसकी बहन उसकी सेवा में लगी रहती थी। दिन और रात वह अपने अद्भुत एवं महान् प्रतिभाप्रसूत काम को करता रहा।

इसी समय कला के नमूनों का प्रदर्शन देखने के लिए सारा प्रीम प्रदेश एथेन्स की कला-प्रदर्शनी में निर्मन्त्रित किया गया। इसके लिए एगोगा नामक जगह चुनी गई। पेरीक्लीज उस उत्सव के सभापति बनाए गए। उनके पास ही श्रीमती एस्पेसिया बैठी हुई थी। फीडियस, सुकरात, साफोकलीज आदि सब प्रख्यात पुरुष भी पास में थे।

बहुत-सी उच्च कला-कृतियों के नमूने वहाँ मौजूद थे। लेकिन एक समूह की ओर ही सबका ध्यान अधिक जा रहा था। वह अन्य समूहों की

अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर था और ऐसा मालूम होता था मानो ललित कलाओं के देवता अपोलो ने स्वयं अपने हाथों उसे बनाया हो। दूसरे कला-विशारदों को उसे देखकर जलन हो रही थी।

“इसका बनानेवाला कौन है ?” दर्शकों ने पूछा।

कोई उत्तर नहीं मिला। बार-बार चौबटार ने यह प्रश्न किया, पर कहींसे कोई जवाब न मिलता था। लोग मूर्ति बनानेवाले को जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे और ताड़-तरह की बातें तथा प्रश्न कर रहे थे। इतने में एक लड़का घसीटकर एगोरा में लाई गई। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त हो रहे थे, बाल बिखरे हुए थे, आंठ बन्द थे; परन्तु चेहरे से दृढ़ता टपकती थी।

“यह लड़की कारीगर को जानती है, पर उसका नाम नहीं बतलाती।”—शान्ति-रक्षकों ने कहा।

लड़की स फिर पूछा गया। मगर वह चुप रही। उससे कहा गया कि उत्तर न देने पर तुम्हें भारी सजा मिलेगी। लेकिन फिर भी उसने मुँह न खोला। तब पेरीक्लीज ने कहा—“कानून का अमल जरूर होना चाहिए। इस लड़की को कैदखाने ले जाओ।”

इन शब्दों को निकलते देर न हुई थी कि भीड़ में से एक युवक निकल पड़ा। उसके बाल उड़ रहे थे, आँखों में प्रतिभा की ज्योति चमक रही थी। दाँढ़कर वह पेरीक्लीज के पैरों पर गिर पड़ा और बोला—“क्षमा करो। उस लड़की को बचा लो। वह मेरी बहन है। अपराधी मैं हूँ। इस मूर्ति-समूह को मेरे गुलाम हाथों ने तैयार किया है।”

गुलाम और कला ? क्रुड जन-समूह ने बात भी पूरी न सुनी और चिल्लाकर कहा—“ले जाओ, इसे जल्दी ही जेलखाने में बन्द कर दो।”

लेकिन पेरीक्लीज ने खड़े होकर कहा—“नहीं, जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक ऐसा नहीं हो सकता। एक बार उस कला-समूह को तो देखो ! देखो, कला के देवता भगवान् अपोलो स्वयं निर्णय कर रहे हैं कि ग्रीस

का यह कानून स्मिता जालिम है। कानून का सबसे ऊँचा उद्देश्य कला का विकास होना चाहिए। हमारा बला-प्रेम ही हमें अमर बना सकता है, जेलखाना नहीं। इस युवक का स्थान कैदखाने में नहीं है, मेरे पास है। इसे मेरे पास ले आओ।”

और हजारों आदिमियों के सामने एस्पीसिया ने क्रियों के सिर पर मुकुट रख दिया। लोगों की तुमुल हर्षध्वनि के बीच क्रियों की बहन का श्रीमती एस्पीसिया ने स्नेह से चुम्बन कर लिया।

अमेरिका के राष्ट्रपति विलसन ने कहा था — “गरीबी में मेरा जन्म हुआ था। अभाव में मैं पला था। मैं जानता हूँ कि जब माता के पास रोटी न हो उस समय रोटी माँगना किसे कहते हैं! दस बरस की उम्र में मैंने अपना घर छोड़ दिया और ग्यारह बरस तक उम्मेदवारी में काम करता रहा। साल में केवल एक महीने स्कूल की शिक्षा मिलती थी। ग्यारह बरस की कड़ी मेहनत से मुझे केवल चौरासी डालर मिले। मैंने एक भी डालर अपने सुख के लिए कभी खर्च नहीं किया। इक्कीस बरस की उम्र तक मैं एक-एक पैसे को गिनता रहा। मीलों पैदल चलकर साथ वालों से काम करने की भीख माँगने की वेदना को मैं समझता हूँ। इक्कीस बरस की उम्र के पहले महीनों में जंगलों में घुमा, बेल हाँके और लकड़ियाँ काटीं। मैं सवेरे बहुत तड़के उठता था और शाम तक कठिन श्रम किया करता था। इतना काम करने पर भी मुझे महीने में छः डालर ही मिलते थे। प्रत्येक डालर मुझे उस समय इतना बड़ा दाखता था जितना बड़ा आज की रात का चाँद दीख रहा है।”

आत्म-सुधार और आत्म-शिक्षा के किसी अवसर को विलसन ने नहीं खोया। संसार में बहुत कम आदिमी अवकाश के मिनटों के मूल्य को इतना महान् समझते हैं। विलसन हरेक मिनट को सोने के समान समझते थे, उसे व्यर्थ न जाने देते थे और उससे जितना अधिक हो सकता था उतना लाभ उठाए बिना न रहते थे। इक्कीस वर्ष की उम्र होने

के पहले उन्होंने एक हजार अच्छे-अच्छे ग्रन्थों को पढ़ डाला। इसके बाद नाटिक नामक नगर को जो उनके गांव से १०० मील दूर था, काम करने के लिए रवाना हुए। उन्होंने बोस्टन नगर होते हुए जाना ठीक समझा, जिसमें कि वे रास्ते के ऐतिहासिक स्थानों को देख सकें। सारे सफर में उनके केवल एक डालर छः सेन्ट खर्च हुए।

एक साल में वे नाटिक के वादविवाद सभा के खास वक्ता हो गये। आठ वर्ष भी न बीतने पाये थे कि मसाचुसेट्स की व्यवस्थापिका सभा में गुलामी के विरुद्ध उनका पहला भाषण हुआ। बारह वर्ष के बाद वे वहाँ की राष्ट्रीय कांग्रेस में पहुँच गये। उनका प्रत्येक क्षण महान् अवसर था। उन्होंने जीवन की प्रत्येक घटना को अपनी विजय का साधन बना लिया था।

लगभग एक हजार बरस पहले लार्डान्स नगर में एक भोज दिया गया था। बड़े-बड़े लोग उसमें उपस्थित थे। प्राचीन ग्रीस की पौराणिक कथाओं के चित्रों के सम्बन्ध में कुछ बहस छिड़ गई। मेहमानों में इस तरह से विवाद बढ़ते देखकर गृहस्वामी ने अपने एक नौकर को बुलाया और उस चित्र के विषय में समझाने के लिए कहा। नौकर ने स्पष्ट, संक्षिप्त, सरल और विश्वसनीय भाषा में सारे विषय को समझा दिया। सब आश्चर्य में पड़ गये और साथ ही सारे झगड़े का भी अन्त हो गया।

एक मेहमान ने बड़े आदर के साथ पूछा — “महाशय, आपने किस स्कूल में शिक्षा पाई है? नौजवान नौकर ने नम्रता से उत्तर दिया — “महाशय, मैंने कई स्कूलों में शिक्षा पाई है, परन्तु ‘विपत्ति’ के स्कूल में मैंने सबसे अधिक समय तक अध्ययन किया है।” गरीबी से उसने कितना अच्छा लाभ उठाया। उन दिनों यद्यपि वह एक गरीब नौकर था, पर जल्दी ही यूरोप में उसकी कलम की कीर्ति गूँज उठी। आज कौन-सा सभ्य देश है जो क्रान्तिकारी जीन जेक रूसो के ग्रन्थों से परिचित नहीं है।

आठ बरस तक विलियम कावेट दल चलाया करता था। वहाँ से

भागकर वह लन्दन आया। आठ-नों महीने तक वह कानून-सम्बन्धी कागजों की नकल करता रहा। फिर सेना में भरती हो गया। अपने सैनिक जीवन के प्रथम वर्ष में वह एक पुस्तकालय का सदस्य बन गया और उसकी अधिकांश पुस्तकें पढ़ डालीं। वह स्वयं लिखता है—“जब मैं छः पैसे प्रतिदिन उजरत पाता था तब मैंने व्याकरण सीखा था। मेरी कोंठरी का किनारा मेरे अध्ययन करने का कमरा था, सिपाही का झंला किताबें रखने की अलमारी थी। मेरी गोद में पड़ा हुआ लकड़ी का तख्ता मेरी मेज थी। इस काम में मुझे एक वर्ष से अधिक नहीं लगा। मोमबत्तियाँ और तेल खरीदने के लिए मेरे पास पैसा नहीं था; ठण्ड के दिनों में मुझे अंधेरे में रहना पड़ता था; आग की रोशनी से मैं काम चलाता था। कलम और कागज खरीदने के लिए मुझे अपने खाने के रुपयों में से खर्च करना पड़ता था या आधे पेट ही रह जाना पड़ता था। कभी मुझे ऐसा समय नहीं मिला था जिसे मैं स्वतन्त्रता से अपना कह सकता। दस सिपाहियों की आपस की बातचीत, हसी, गाना-बजाना, सीटी और शोर-गुल के समय ही मुझे पढ़ना पड़ता था। उनकी स्वतन्त्रता पर मेरा कोई अधिकार न था। कलम और स्याही के लिए खर्च हो जाने वाले एक फादिंग को आर मामूली चीज मत समझिए। वह एक फादिंग—आह ! मेरे लिए बड़ी भारी चीज थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा था और मैं खूब व्यायाम करता था। हरेक आदमी के लिए बाजार-खर्च दो पैसे प्रति सप्ताह मिलता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक समय मैंने एकाध पेनी बचाकर जेब में रख ली थी। मेरी इच्छा थी कि सवेरे इसकी एक लाल मछली खरीदूँगा। मुझे बड़ी भूख लगी और मैंने अपनी जेब में हाथ डाला तो वह बिल्कुल खाली थी। वह आध-पेनी गायब हो गई थी। भूख के मारे मेरी जान निकली जा रही थी। लेकिन उपाय क्या था। मैं बिस्तर पर अपना सिर रखकर बच्चे की तरह बिलखता हुआ आंसू बहाता रहा।”

परन्तु कावेट ने अपनी गरीबी और कठिनाइयों का अपने जान और सफलता के ध्येय को पूरा करने में उपयोग किया। वह लिखता है कि यदि मैं ऐसी परिस्थिति में ऐसा काम कर सका तो क्या संसार भर में कोई ऐसा युवक है या हो सकता है जो इस काम को न काने के लिए कोई बहाना ढूँढ़ निकाले ?

थियोडोर पारकर ने एक दिन कहा—“पिताजी, क्या कल मुझे छुट्टी मिलेगी ?” गरीब बाप ने यह बात सुनकर आश्चर्य से अपने झोंटे-से लड़के की ओर देखा, क्योंकि दूसरे दिन काम बहुत था। पर लड़के की सच्ची इच्छा देखकर उसने उसे छुट्टी दे दी। थियोडोर प्रातःकाल जल्दी उठा और दस मील पैदल चलकर हार्वर्ड कालेज पहुँचा। उसने वहाँ प्रवेश-परीक्षा में भरती होने की इच्छा प्रकट की। वह आठ बरस की उम्र से ही नियमपूर्वक स्कूल नहीं जा पाया था। ठण्ड के दिनों में वह केवल तीन महीने जाता था और हमेशा अपना सबक हल चलाते अथवा कोई और काम करते समय याद किया करता था। यहाँ-वहाँ बचा हुआ समय वह अच्छे-अच्छे ग्रन्थों के पढ़ने में लगाता था। बेचारा मांग-मांग कर किताबें पढ़ा करता था। एक किताब वह मांग नहीं सका, पर उसकी उम्र बड़ी ज़रूरत थी। एक दिन गर्मी के मौसम में सूर्योदय से पहले वह उठा और बेगों की लुन थैलों में भरकर बोस्टन के बाजार में बेच आया। उनकी बिक्री से जो पैसे मिले उनसे उसने लेटिन-कोष खरीदा !

जब थियोडोर रात में बड़ी देर से घर लौटकर आया और अपनी सफलता का किस्सा अपने पिता को सुनाया तब पिता ने कहा—“शाबाश थियोडोर ! पर तुम्हें मैं पढ़ने का खर्च देने में तो असमर्थ हूँ।” पुत्र ने ज़रा भी विस्मित न होते हुए कहा—“ठीक है पिताजी ! पर मैं स्कूल में न रहूँगा, मैं घर ही पर पढ़ा करूँगा और अंतिम परीक्षा में बैठकर सनद प्राप्त कर लूँगा।” और उसने ऐसा ही किया। आगे चलकर यही व्यक्ति देश का हार बना।

एल हूबर्ट कहता है—“मेरे जीवन की महत्त्वपूर्ण घड़ी वह थी

जब मैंने होमर की लिखी हुई इलियड की पन्द्रह पंक्तियाँ पढ़ी थीं।” उसका पिता जब मरा था तब उसकी उम्र सोलह साल की थी। वह लुहार का काम सीखता था। दिन में १०-१२ घण्टे रोज़ उसे भाथी का काम करना पड़ता था। भाथी धोकेने समय वह अंकगणित के प्रश्न का हल करता जाता था। दस बरस बाद उसने बुर्स्टर के पुस्तकालय का सहारा लिया। उस समय वह रोज़ अपनी दिनचर्या लिखा करता था। उसकी कुछ सतरों पर दृष्टि डालिए—

“सोमवार जून १८—सिरदर्द, ४० पृष्ठ कुविये की लिखी हुई पृथ्वी-सम्बन्धी बातें, ६४ पृष्ठ फ्रेंच, ११ घण्टे भाथी धोकेना। जून १९—६० सतरें हिब्रू, ३० डेनिश, १० बोहेमियन, ६ पोलिश, १५ ताराओं के नाम, १० घण्टे भाथी का काम। बुधवार जून २०—२५ सतरें हिब्रू, ८ सतरें सीरियक (शामी), ११ घण्टे काम।”

इस तरह से इस बालक का समय बीतता था। गजब का परिश्रम वह करता था। उसने अठारह भाषाएँ और बत्तीस बोलियाँ सीख लीं। वह ‘विद्वान् लुहार’ के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। इस भाग्यहीन बालक के अध्यवसाय को देखकर थोड़ी सुविधावाले लड़के यदि शिक्षा ग्रहण न कर सकते हों तो उन्हें शर्म से मुँह नीचा कर लेने के लिए यह उदाहरण पर्याप्त है।

टाल्पेज युवकों के साथ बातें करते-करते कहा करता था—“नव-युवको, क्या तुम्हें आपत्तियों को देखकर डर लगता है? क्या तुम्हारा गरीबी तुम्हारे रास्ते में बाधक हो रही है? एक बार सोचो, तुम आज उसी जगह खड़े हो जिसपर अन्त में सफलता पानेवाले भी खड़े हैं। मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो और तीस बरस बाद इनपर विचार करना। तुम्हें पता लगेगा कि उस समय जो लोग देश के लखपती धनवान्, प्रभावशाली वक्ता, प्रतिभावान् कवि, ऐश्वर्यशाली सौदागर, मानव-जाति के बड़े-बड़े प्रेमी, राष्ट्र और धर्म के उद्धारक होंगे, वे सब इस समय तुम्हारे

ही बराबर खड़े हैं। एक इन्च ऊँचाई पर भी कोई नहीं है। वे भी बड़ी ही कठिन परिस्थितियों में फंसे हुए हैं।

“यदि पास में कुछ नहीं है, कोई सम्पत्ति नहीं है तो ऐ नवयुवको, किसी पुस्तकालय में जाओ, कुछ पुस्तकें निकालो और उस परमेश्वर के बनाये इस आश्चर्यजनक यन्त्र—अपने शरीर के हाथ-पैर, आँखों और कानों के बारे में पढ़ो, फिर किसी डाक्टर के साथ अस्पताल में जाकर शरीर के भीतरी भागों को देखो और कभी भूलकर अपने मुँह से यह मत निकाला कि हमारे पास जीवन-यात्रा शुरू करने के लिए पूँजी नहीं है। देखो, हरेक गरीब-से-गरीब नवयुवक को खुद ईश्वर ने अच्छी तरह से सुसज्जित कर दुनिया में भेजा है। मेहनत करो और दुनिया में अपनी ज्योति फैलाओ।”

अखबार बेचने का धन्धा जीवन की सफलता और सम्मान पाने के लिए क्या कोई अच्छी शुरुआत है? अखबार बेचकर रोज की रोटी का प्रबन्ध करना कोई बड़ी किस्मत की बात नहीं है। तिसपर भी अमेरिका के व्यापार का पुनरुज्जीवन करनेवाले एडीसन ने ग्राण्ड ट्रंक रेलवे पर अखबार बेचने का काम शुरू किया था। टॉमस एलवा एडीसन उस समय पन्द्रह वर्ष का बालक था। इतनी छोटी उम्र में ही उसने रसायन-शास्त्र का अध्ययन करना शुरू कर दिया था।

एडीसन प्रतियोगिता में सदा सर्वप्रथम निकलता था। थोड़ी उम्र में ही उसने विज्ञान को अपना ध्येय बना लिया था। एक बार जब उसने उसकी सफलता का कारण पूछा गया तब उसने कहा—“मैं हमेशा नशे से दूर और कार्य को छोड़कर दूसरी सब बातों में बिल्कुल संयमी रहा हूँ।” दो अशिक्षित और अज्ञात व्यक्ति एक सस्ते-से होटल में आकर ठहरे। उन्होंने देश के रक्त से रंगी हुई एक बुराई को मिटाने का निश्चय किया था। एक आरंभ थे ये साधनहीन और गरीब युवक और दूसरी ओर थे देश के पढ़े-लिखे विद्वान्, राजनीतिज्ञ, धर्मोपदेशक, धनाढ्य

और वैभवशाली व्यक्ति । राष्ट्र की रूढ़ि के विरुद्ध सफल होने का क्या उनके लिए कोई अवसर था ? हाँ, क्योंकि इन युवकों के दिलों में ऊँचे उद्देश्य की आग जल रही थी । उनका कार्य सच्चा था । उनमें से एक का नाम ब्रेजिमन लॉडे था । उसने ओहियो में 'दि जीनियस ऑव यूनीवर्सल लिबर्टी' (विश्व-स्वतन्त्रता की प्रतिभा) नाम का पत्र निकाला था । हर महीने वह उस पत्र की छपी प्रतियाँ क्लापेग्वाने में बीस मील की दूरी पर पीठ पर लादकर ले जाता था । अपने ग्राहकों की संख्या बढ़ाने के लिए उसने चारसौ मील की यात्रा की थी । वह एक असाधारण व्यक्ति था ।

विलियम लाइड गैरीसन को सहयोगी बनाकर उसने इस काम को और भी अच्छी तरह से चलाया । ग्राम सड़कों पर काम करने वाले गुलामों के दृश्यों ने, घर और कुटुम्ब में अलग किये गये इन अभागों गुलामों से लदे हुये जहाजों ने, नीलाम-घर की हृदय-विदारक बातों ने गैरीसन के हृदय पर अमिट छाप डाल दी थी । गरीब माता के इस बाल ने, जिसे स्कूल की शिक्षा नहीं मिली थी, पर बचपन ही में अ-याचार का विरोध करना सिखाया गया था, गुलामों को आजादी दिलाने के लिए अपने जीवन को अर्पण करने का निश्चय कर लिया था ।

पत्र के पहले ही अंक में गैरीसन ने "गुलामों से शीघ्र मुक्ति" विषय पर एक जोरदार अग्रलेख लिखा । सारे समाज ने उसे गालियाँ देना शुरू किया । वह पकड़ लिया गया और जेलग्वाने में ठूस दिया गया । यह खबर उसके मित्र जान जी० विहियर को मिली । उसने अपने एक धनी मित्र हेनरी बले को लिखा कि आप मेहरबानी करके सुर्मांना देकर गैरीसन को छुड़ा लीजिये । ४९ दिन की कैद के बाद वह छोड़ दिया गया । गैरीसन को चौबीस वर्ष की उम्र में अपने स्वाधीन विचारों के कारण जेल भोगनी पड़ी थी । उसने अपनी ज़बानी में राष्ट्र की एक बुराई का जोरों से विरोध किया था ।

बिना पैमे, दास्त और किर्मा जान-पहचान के उसने बोस्टन में 'लिबरेटर' नामक पत्र निकालना शुरू किया। जरा इस युवक की पहली घोषणा को तो पढ़िए। वह लिखा है—“मैं सत्य के समान कठोर और न्याय के समान दृढ़ रहूँगा। मैं हृदय में सत्य कहता हूँ; मैं व्यर्थ के शब्दों का जंजाल न रचूँगा। मैं क्षमा नहीं करूँगा। मैं एक इंच पीछे न हटूँगा। मेरी बातें सुननी पड़ेंगी।” जिस युवक के खिलाफ सारी दुनिया हाँ उसके लिए ये कितनी ठिठोई की बातें हैं।

दक्षिण करोलिना के आनरेबल राबर्ट हेने ने बोस्टन के मेयर को लिखा—“मेरे पास किसीने 'लिबरेटर' की एक प्रति भेजी है। कृपया उसके प्रकाशक का नाम लिख भेजिये।” मेयर को पता लगा कि एक युवक उसे एक कोठरी में छापता है। उसके साथ एक हड्डी लड़का रहता है और कुछ और आदमी भी काम करते हैं।

परन्तु इसी युवक ने एक कोठरी में 'लिबरेटर' निकालकर सारे संसार के विचारों में क्रान्ति मचा दी। लोगों ने सोचा कि इसे जरूर दबाना चाहिये। करोलिना के 'विजिलेन्स असोसियेशन' ने 'लिबरेटर' की प्रतियाँ बेचनेवाले को पकड़ने के लिये पन्द्रह-सौ डालर का इनाम रक्खा। एक-दो रियासतों के गवर्नरों ने सम्पादकों के मिर के लिये इनाम की घोषणा की। जाजिया की कानून-सभा ने पाँच हजार डालर का इनाम उसे पकड़ने और अपराधी साबित करने के लिए रखा।

गरीबन और उसके साथियों की हर जगह से धमकी दी जाती थी। पर वे अपने उद्देश्य पर दृढ़ ही रहे। अन्त में सफलता मिली और सारे राष्ट्र ने उनका सम्मान किया।

लन्दन की एक घुड़माल में माइकल फ्राडे नाम का एक लड़का रहता था। वह अलवार बेचा करता था। सात वर्ष की उम्र में वह एक जिल्दसाज की दुकान में काम करने लगा 'इनसाइक्लोपीडिया' नामक पुस्तक की जिल्द बाँधते समय उसकी निगाह बिजली के एक लेख पर

पड़ी। उसने उमे पढ़ा और छोटी-मोटी चीजें इकट्ठी करके प्रयोग करना शुरू किया। एक ग्राहक उम लड़के के उद्योग को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे सर हेम्प्री डेवी का भाषण सुनाने के लिये ले गया। माइकेल ने भाषण पर नोट लिख लिये और फिर उन्हें डेवी के पास भेज दिया। उस महान् व्यक्ति ने इसे अपने यहां यन्त्रों को व्यवस्थित रूप से रखने के लिये नौकर रख लिया। बालक डेवी के प्रयोगों को बड़े ध्यान से देखा करता था। कुछ समय में यही भाग्यहीन बालक एक बड़ी भारी सभा में भाषण करने को निमन्त्रित किया गया। बाद में वह बूलविच को रायल एकेडेमी का अध्यापक नियुक्त हो गया और विज्ञान-संसार में चमत्कार दिखाने लगा।

भाग्यहीन बालक डिजरायली ने कहा था—“जो बातें एक बार हां चुकी हैं वे ही फिर से हो सकती हैं। मैं गुलाम नहीं हूँ, कैदी नहीं हूँ, और अपनी ताकत से बाधाओं को दूर कर सकता हूँ।” उसके खिलाफ सब कुछ था, उत्साह देने के लिये केवल हजारों वर्षों के उदाहरणमात्र थे। वह सोचता था कि जब जोसफ नाम का यह गरीब यहूदी चार हजार वर्ष पहले परिश्रम से मिश्र का प्रधानमंत्री हां गया था तब क्या मैं भी प्रधानमंत्री नहीं हो सकता। वह छोटे दर्जे वालों के बीच से आगे बढ़ा, मध्यम दर्जे वालों के बीच से आगे बढ़ा, ऊँचे दर्जेवालों के बीच से ऊपर उठा और राजनीति तथा सामाजिक शक्ति का मालिक बन बैठा। पार्लमेंट में लोगों ने उसकी हंसी उड़ाई, उसे घृणा की दृष्टि से देखा, अपनी अनिच्छा का प्रदर्शन किया, परन्तु उसने केवल यही कहा—“समय आयेगा जब तुम मेरी बात सुनोगे।” और समय आया जब वह भाग्यहीन बालक इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री हो गया। लगभग पच्चीस वर्ष तक वह ब्रिटिश साम्राज्य का भाग्य-विधाता बना रहा।

एक गरीब विधवा थी। उसके तीन लड़के थे। पर उन तीनों के पास पढ़ने को दो ही पायजामे थे। उमे बड़ी चिन्ता रहती थी कि ये किसी तरह लिख-पढ़ जायें। इसलिए वह अपने हिस्से में उन्हें स्कूल भेजती थी।

शिक्षक को मालूम हो गया कि हरेक लड़का तीन दिन में केवल एक दिन स्कूल आता है। उस गरीब ने जैसी कुछ बन सकी उनको शिक्षा दी। एक लड़का प्रोफेसर, दूसरा डाक्टर और तीसरा पादरी हो गया। “अवसर नहीं है,” “हम भाग्यहीन हैं”—इस तरह की पुकार मचाकर जीवन नष्ट करने वालों के लिए कैसा सुन्दर उदाहरण है !

सफलता पाने के लिए कुछ ही रास्ते हैं, उन्हीं रास्तों से लोग विजयी हो सकते हैं। नवयुवक में दृढ़ इच्छा-शक्ति होनी चाहिए। उसे किसी काम में धृष्टता नहीं करनी चाहिए, किसी भी ईमानदारी से किये गये काम से उसकी जाति नहीं घट सकती। ऊँचे कुल का लड़का बड़ई का काम करने से बड़ई नहीं हो जाता। क्या तुम बाधाओं का सामना कर सकते हो ? क्या तुम नाकामयाब होने पर भी नाकामयाबी के कारणों को ढूँढ़-कर फिर से आगे बढ़ने के इच्छुक हो ? क्या तुम अपने पैरों पर अपने को खड़ा करने की ताकत रखते हो ? क्या तुम मनुष्य के महान् भविष्य पर विश्वास करते हो ? यदि हाँ, तो तुम्हारे मार्ग को गरीबी रोक नहीं सकती; भूख और प्यास तुम्हारी आकांक्षाओं को दबा नहीं सकती; धन और सहायता की कमी तुम्हारे उत्साह को नष्ट नहीं कर सकती; जनता की हंसी और मजाक से तुम अपने कार्यों को नहीं छोड़ सकते। तुम्हारे स्वागत के लिए कहीं दूरी पर नकली बादलों की ओट में छिपे हुए मन्दिर में सफलता की देवी खड़ी है। केवल दृढ़ता से उस ओर बढ़ने भर की जरूरत है !

एक गरीब लड़का था। उसे स्कूल की शिक्षा नहीं मिली थी। परन्तु अपने कार्यों से वह मानव जाति की प्रशंसा का पात्र हो सका। अमेरिका के युद्ध के समय वह वहाँ का सभापति था और उसने चार लाख गुलामों को मुक्त कर दिया।

इस लम्बे कद के, दुबले-पतले, भड़ी सूरतवाले नवयुवक को पेड़ काटते हुए कल्पना कीजिए। सोचिए, उसके मकान का फर्श अच्छा

नहीं है। उसमें खिड़कियाँ नहीं हैं, वह सांझ के समय आग के उजाले में गणित और व्याकरण का अध्ययन कर रहा है। ब्लेकस्टोन का ग्रन्थ पढ़ने की इच्छा से वह चार मील की यात्रा करता है और उस अमूल्य पुस्तक को लाता है। रास्ते में वह मौ पृष्ठ पढ़ लेता है। यही अब्राहम लिंकन अमेरिका का भाग्य-विधाता बना।

ओहियाँ के जंगल की एक झोपड़ी में एक विधवा अठारह मास के बालक को लेकर चिन्ता कर रही थी कि किस तरह भेड़िये से बच्चे की रक्षा हो सकेगी। थोड़े दिनों में लड़का बड़ा हो जाता है, लकड़ी काटता, खेत जोतता और माता की मदद करता है। फुरसत के हरेक घण्टे को वह मंगनी ली हुई पुस्तकों के अध्ययन में खर्च करता है। सोलह वर्ष की उम्र में वह खच्चर हांकने का काम करता है। जल्दी ही वह एक पुस्तकालय में भाड़ू लगाने और घण्टा बजाने के काम के लिए दुर्लभस्त देता है। वह मंजूर होती है और इसमें उसका कुछ खर्च निकल आता है। फिर दूसरी जगह वह एक डालर प्रति सप्ताह पर कपड़े धोने और सामान लाने आदि का काम करने लगता है।

शीघ्र ही वह विलियम कालेज में जा पहुँचता है और दो साल में सम्मान-सहित पास हो जाता है। छब्बीस वर्ष की उम्र में वह कांग्रेस में प्रवेश करता है। इस तरह से हेरम कालेज में घण्टे बजाने का काम करने वाला लड़का जेम्स ए० गारफील्ड सत्ताईस वर्ष में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति हो जाता है।

नवयुवको, सबके लिए संसार में स्थान है। सबके लिए प्रसिद्धि और ख्याति पाने के साधन हैं। गरीब होते हुए भी लोग जगत् में बड़े-बड़े लेखक हुए, कवि बने, राष्ट्र-निर्माता हो गये, लक्ष्मीवान् बने और चित्रकार हुए। फिर तुम क्यों उदास बैठे भाग्य को कोस रहे हो ? आगे बढ़ो। सफलता तुम्हारी राह देख रही है।

—तीन—

फुरसत की घड़ी

“क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है ? तब समय को व्यर्थ नष्ट मत करो, क्योंकि जीवन उमीसे बना है ।” —फ्रॉकलिन ।

“मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है ।” —शेक्सपियर ।

बड़ी देर तक बेंजमिन फ्रॉकलिन की दूकान के सामने घूमने वाले एक आदमी ने अन्त में पूछा—

“इस किताब की क्या कीमत है ?”

क्लर्क ने उत्तर दिया—“एक डालर ।”

“एक डालर ! इससे कम नहीं !”

“नहीं ।”

खरीदनेवाले ने थोड़ी देर इधर-उधर देखने के बाद उससे पूछा—

“क्या मि० फ्रॉकलिन भीतर हैं ?”

“हां, अभी काम में लगे हुए हैं ।”

“मैं जरा उनसे मिलना चाहता हूं ।”

मालिक बुलाये गये और खरीदार ने पूछा—“श्री० फ्रॉकलिन, आप इस पुस्तक की कम-से-कम क्या कीमत लेंगे ?”

“सवा डालर ।”

“सवा डालर ! अभी तो आपका क्लर्क एक डालर कहता था ।”

“ठीक है, पर अपना काम छोड़कर आने में मेरा समय भी तो खर्च हुआ न ?”

खरीदार आश्चर्य में पड़ गया और अपनी बातचीत को खत्म करने

के विचार से उसने फिर पृच्छा—“अच्छा, अब इसकी कम-से-कम कीमत बता दीजिए तो मैं ले लूँ।”

“डेढ़ डालर।”

“डेढ़ डालर ! वाह, अभी तो आप सवा डालर ही कह रहे थे।”

“हां, मैंने वह कीमत उस समय कही थी। पर अब तो डेढ़ डालर होगी। और ज्यों-ज्यों आप देर करते जायेंगे, किताब की कीमत बढ़ती जायगी।”

ग्राहक ने जेब से पैसे निकालकर दे दिये और किताब लेकर घर का रास्ता लिया। उसे आज समय की धन अथवा विद्या में परिवर्तित कर देनेवाले स्वामी से एक उत्तम शिक्षा मिल गई।

एल० हूबरिट कहता है—“ये सब बातें जो मैंने करके दिग्वा दीं अथवा जिन्हें कर दिखाने का मैं अभिलाषी हूँ, सब धीरे-धीरे धैर्य से और चींटी के समान सतत कार्य-तत्परता के द्वारा पूरी की गई हैं, अथवा की जायेंगी। मैं एक घटना के बाद दूसरी घटना, एक विचार के बाद दूसरे विचार के बल पर आगे बढ़ा हूँ और यदि मैं महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित हो उठता हूँ तो इसी आशा से कि अपने देश के नवयुवकों के सामने ऐसा उदाहरण उपस्थित करूंगा जिसके द्वारा वे समय के उन अमूल्य टुकड़ों को, जिन्हें क्षण कहते हैं, काम में लाना सीखें।”

जो लोग संसार में आगे बढ़े हैं उन सबने समय के मूल्य को समझा है। जब और लोग सोते थे तब एल० हूबरिट काम करता था, जब दूसरे ऐश-आराम में मग्न होते थे तब वह सिर झुकाये अपने काम में लगा रहता था। पार्लमेण्ट में बर्क का चक्रित कर देनेवाला भाषण सुनकर उसके भाई ने कहा था—“बड़े आश्चर्य की बात है कि ‘नेड’ ने कुटुम्ब की सारी प्रतिभा पर अपना ही अधिकार जमा लिया है; पर मुझे याद आता है कि जब हम लोग खेला करते थे तब वह काम करता रहता था।”

दिन मित्रों के वेश में हमारे सामने आते हैं और प्रकृति की

अमूल्य भेंट लाते हैं। अगर हम उनका उपयोग न करें तो वे चुपचाप लौट जायेंगे।

प्रत्येक सुन्दर प्रभात सुन्दर चीजें लेकर उपस्थित होता है, पर यदि हमने कल तथा परमों के प्रभात की कृपा से लाभ नहीं उठाया तो आज के प्रभात से लाभ उठाने की हमारी शक्ति क्षीण होती जायगी। और यही रफता रही तो फिर हम इस शक्ति को बिल्कुल ही गंवा बैठेंगे। किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि खोई हुई सम्पत्ति कम-खर्ची और परिश्रम से प्राप्त की जा सकती है, भूला हुआ ज्ञान अध्ययन से प्राप्त हो सकता है, गंवाया हुआ स्वास्थ्य दवा और संयम से लौटाया जा सकता है, परन्तु नष्ट किया हुआ समय सदा के लिए चला जाता है। वह बस स्मृति की एक चीज़ हो जाता है और अतीत की एक छाया-मात्र रह जाता है।

“अरे! अब भोजन के समय में दस-पांच ही मिनट तो रह गये हैं। भाई, अब कोई काम नहीं हो सकता।”—यह बात घर-घर सुनी जाती है। लोग यह कभी नहीं सोचते कि इन्हीं क्षणों के द्वारा भाग्यहीन कहलानेवाले बालकों ने दुनिया में बड़े-बड़े काम किये हैं। अब भाई यदि हम इन घण्टों का उपयोग कर सकें तो निश्चय ही सफलता हमारी होगी।

हैरेट वीचरस्टोच ने अपनी सर्वोत्तम रचना “टाम काका की कुटिया” को घर-गृहस्थी के झगड़ों के बीच में ही लिखा था। भोजन का इन्तज़ार करने में जो समय बीतता था उसी समय में वीचर ने फ्राउड की रचना ‘इंग्लैण्ड’ को पढ़ा था। जितनी देर में कहवा उबलता था उतने समय का प्रतिदिन उपयोग करके लांगफेलो ने ‘इनफरनो’ नामक ग्रन्थ का अनुवाद कर डाला था।

कवि बनर्से ने खेतों पर काम करते समय अपनी अमर कीर्ति से साहित्य का अलंकृत किया। ‘पैरेडाइज़ लास्ट’ का लेखक महाकवि मिल्टन

ब्रिटिश "कामनवेल्थ" और "प्रोटेक्टरेट" का मंत्री था। उसने अपने काम-काज के समय के क्षणों का उपयोग करके अमर महाकाव्य की रचना की। जान स्टुअर्ट मिल ने अपना सर्वोत्तम ग्रंथ ईस्ट इंडिया हाउस के क्लर्क के जीवन में लिखा था। गेलीलियो डाक्टरों करता था, परन्तु इसके बचे हुए क्षणों के उपयोग द्वारा हुए आविष्कारों से संसार ने कितना लाभ उठाया। ग्रेडस्टन सीखा प्रतिभाशाली व्यक्ति अपनी जेब में एक छोटी-सी पुस्तक हमेशा लेकर निकलता था। उन्हें चिन्ता रहती थी कि कहीं कोई घड़ी व्यर्थ न चला जाय। तब हम जैसे साधारण अवस्था के मनुष्यों को अपने अमूल्य समय को नष्ट होने से बचाने के लिए क्या न करना चाहिए? एक-एक क्षण संचित करने वाले इन लोगों का जीवन हम हजारों मनुष्यों और नयुतियों के जीवन का कितना उपहास कर रहा है। प्रतिभावान् पुरुष समय के छोटे-से-छोटे टुकड़ों को बचाकर महान् हो जाते हैं और अपनी असफलता पर आश्चर्य करने वाले उन्हें यों ही उड़ जाने देते हैं। उन्हें जीवन-भर में कभी समय का मूल्य मालूम नहीं होता।

माइकल फेरडे किताबों की जिब्द बांधा करता था। साथ ही अपने बचनेवाले समय को वैज्ञानिक प्रयोगों के करने में लगाया करता था। एक समय उसने अपने एक मित्र को लिखा—“मुझे समय की आवश्यकता है। क्या ही अच्छा होता यदि मैं सस्ते भाव पर वर्तमान महाशयों की बचत के घण्टों—नहीं, नहीं, दिनों को खरीद सकता।”

प्रतिदिन एक घण्टा काम सीखने में अज्ञान व्यक्ति होशियार हो सकता है। प्रतिदिन एक घंटा पैसा कमाने से मनुष्य दो दैनिक, दो साप्ताहिक, दो मासिक और लगभग एक दर्जन पुस्तकें खरीदने लायक धन पैदा कर सकता है। एक घण्टे में प्रतिदिन बीस पृष्ठ पढ़ने वाला एक वर्ष में कई हजार पृष्ठ तथा लगभग अठारह ग्रंथों को पढ़ सकता है। रोज़ एक घंटे के उपयोग से साधारण आदमी महान् हो सकता है। इस प्रकार दिन का एक घंटा एक

अप्रमिद्ध व्यक्ति को प्रमिद्ध और एक निरुपयोगी आदमी को अपने देश और जाति का परमोपयोगी पुरुष बना देता है। जब एक घण्टे की इतनी क्षमता है, जब एक घण्टे में जीवन में उलट-फेर करने की इतनी बड़ी शक्ति है, तब दो-चार-छः घण्टे प्रतिदिन खो देने वाले नवयुवक और नवयुवतियों के जीवन संसार में क्या करके न दिखा देंगे, यदि वे व्यर्थ जाने वाले समय की रक्षा कर उसका सदुपयोग करें ?

हरेक नवयुवक को अपना फुरसत का समय किसी अच्छे काम में लगाना चाहिए, उसे आनन्द में परिवर्तित कर देना चाहिए। यह काम भले ही उसके मुख्य काम से सम्बन्ध न रखता हो, पर उसे चाहिए कि वह अपने हृदय को केवल उसीमें लगा दे।

कुछ लड़के समय के इधर-उधर के क्षणों को बचाकर अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं, दूसरे उन्हें खोकर हाथ मला करते हैं। ऐसा कौन नवयुवक है जो आत्म-सुधार के लिए प्रतिदिन एक घंटा भी नहीं निकाल सकता। चार्ल्स फ्रास्ट नामक चमार एक घण्टा रोज अध्ययन करके संयुक्त-राष्ट्र का गणित का सबसे बड़ा आचार्य हो गया। जान हण्टर और नेपोलियन केवल चार घण्टे सोते थे। टामस एडिसन केवल तीन घण्टे सोता था।

हण्टर की इकट्ठी की हुई सामग्री को व्यवस्थित रूप देने में प्रोफेसर ओवन को दस बरस लगे। वे बीस घण्टे रोज काम करते थे। हण्टर ने अपने उद्योग से हजारों नमूने इकट्ठे किये थे। उद्योगशीलता का इससे बड़ा उदाहरण किसके जीवन में मिल सकता है ?

जान एडम्स का समय जब कोई नष्ट करता था तो उसे बहुत बुरा लगता था। इटली के एक विद्वान् ने अपने कमरे के द्वार पर लिख रखा था—“जो आदमी यहां रुकना चाहता हो वह मेरे काम में मदद दे।”

बड़े आदमी हमेशा ही समय के कंजूस होते हैं। सियेरो कहता था—“जिस समय को अन्य व्यक्ति जनता के दिखावे तथा मानसिक और

शारीरिक आराम के लिए खर्च कर देते हैं उसे ही मैं तत्त्वज्ञान के अध्ययन में लगाता हूँ।” चान्सलर का काम करने के बाद बचनेवाले समय का उपयोग कर लार्ड ब्रेकन ने कीर्ति प्राप्त की। एक बड़े राजनीतिज्ञ से भेंट करते समय महाकवि गेटे को अकस्मात् एक विचार सूझा। उन्होंने थोड़ी देर के लिए चूमा मांगी और बगल के कमरे में जाकर उसे लिख डाला। सर हेम्फ्री डेवी ने अपने समय का सदुपयोग कर बड़े-बड़े आविष्कार कर दिखाये। पोप हमेशा रात्रि को उठता था और अपने उन विचारों को लिख लेता था जो काम-काज में लगे हुए दिन के जीवन में नहीं उठ पाते थे। ग्रोटे ने अपनी अद्वितीय पुस्तक ‘ग्रीस का इतिहास’ अपने बचे हुए समय में लिखी थी।

जार्ज स्टिफेनसन फुरसत के समय को सुवर्ण समझता था। उसे वह व्यर्थ नहीं जाने देता था। माजार्ट प्रत्येक मिनट में कुछ-न-कुछ आत्म-सुधार अवश्य करता था। वह इतनी देर तक काम करता रहता था कि सोना भी भूल जाता था। कभी-कभी अपना कार्य समाप्त करने के लिए दो-दो दिन और रात लगातार लिखता था। अपनी प्रसिद्ध रचना ‘रेक्यूथम’ को उसने अपनी मृत्यु-शय्या पर लिखा था।

सीजर कहा करता था—“भयंकर दुश्मनों के बीच में भी मुझे अपने खेमों में और कई बातों को सोचने का अवसर मिल जाता था।” एक बार उसका जहाज डूब गया। वह अपने साथ एक पुस्तक की हस्तलिखित प्रति ले गया था। जब जहाज डूब रहा था तब वह अपनी पुस्तक पढ़ने में लगा हुआ था।

डाक्टर मारसन गुड लन्दन में एक रोगी को देखने आ रहा था। रास्ते में उसने ‘लुक्रेशियस’ का अनुवाद कर डाला। डाक्टर डरबन ने अपनी बहुत-सी रचनाओं को कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिखा था। वह अपने विचारों को उसी समय लिख लेता था। हेनरी किरक ह्राइट ने ग्रीक भाषा दफ्तर से आने-जाने के समय में पढ़ी थी। डाक्टर वरने ने हर्टलि-

यन और फ्रेंच भाषाओं को घड़े की पीठ पर सीखा था ।

वर्तमान काल एक 'कच्ची सामग्री' है, जिसके द्वारा हम अपनी वांछित वस्तुओं का निर्माण कर सकते हैं । भूलकर भी भूतकाल और भविष्य की बातों का स्वप्न देखना अच्छा नहीं । अपने सामने की घड़ियों को पकड़ लीजिए और उनसे कुछ-न-कुछ पाठ अवश्य ही सीख लीजिए । सच पूछा जाय तो किसी घण्टे के मूल्य को समझने वाला और उसका उपयोग अच्छी तरह से करने वाला अभी तक संसार में पैदा ही नहीं हुआ । किमीने कहा है—“ईश्वर एक बार एक ही क्षण देता है और दूसरा क्षण देने के पहले पहले वाले क्षण को छीन लेता है ।”

प्रेसीडेंट क्वीनसे हमेशा सोने जाने के पहले दूसरे दिन के कार्यों की सूची बना लेते थे । इस तरह से समय-विभाग कर लेने से समय नष्ट होने नहीं पाता और चित्त को भी बड़ी शान्ति रहती है, शाम को अपने किये हुए कार्यों को देखकर बड़ा हर्ष होता है । यह तरीका विद्यार्थी, लेखक, नेता सभी के लिए बड़े काम का है ।

काम में लगे हुए नवयुवक के लिए कोई भी चिंतित नहीं रहता । वह कुछ-न-कुछ कर ही दिखावेगा । पर वह किस स्थान पर अपना दोपहर का भोजन करता है ? अपने वासस्थान को छोड़कर वहरात को कहाँ जाता है ? व्यालू करने के बाद वह क्या किया करता है ? रविवार और छुट्टी के दिन वह कहाँ व्यतीत करता है ? अपना फुरसत का वक्त जिस तरह वह बिताता है उसीसे उसका चरित्र प्रकट हो जाता है । अधिकांश नवयुवक व्यालू के बाद का समय सोने में लगाकर अपने जीवन का नाश कर डालते हैं । ख्याति और कीर्ति के पथपर चलनेवाले अपना शाम का वक्त अध्ययन और काम करने में खर्च करते हैं । वे सन्ध्या का समय ऐसे व्यक्तियों की संगति में व्यतीत करते हैं जो उनके सुधार में सहायक हो सकें । प्रत्येक सन्ध्या एक नवयुवक के लिए जीवन-मरण का प्रश्न है । व्हीटियर के इन वाक्यों में बड़ा ही गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है—

“आज के दिन हम अपने भविष्य का निर्माण करते हैं, अपने भाग्य के जाले को बुनते हैं। आज के दिन आगे के सारे समय के लिए हम पवित्रता अथवा पाप में से एक को चुनते हैं।”

समय ही धन है। हमें एक मिनट व्यर्थ नष्ट न करना चाहिए। धन का खो देना समय खोने के बराबर नहीं हो सकता। समय नष्ट करने का अर्थ है शक्ति का नाश, सामर्थ्य का नाश और अपने आचरण का पतन। इसका मतलब है अवसरों को सदा के लिए खो देना।

एडवर्ड एवरेट ने लिखा है—“हरेक के हाथ में अपने को उपयोगी, कीर्तिवान् और सुखी बनाने के साधन हैं। बुद्धि-सुधार के द्वारा गृहदृष्टि से सुधार के प्रत्येक अवसर की ताक में रहने, विकारों को तुच्छ समझने और इन्द्रिय-जनित सुखों को घृणा की दृष्टि से देखने से उपयुक्त बातें हो सकती हैं।”

—चार—

प्रतिकूल परिस्थिति

“जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी दौलत है—किसी खास बात की ओर प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना । उसीकी पूर्ति करने में मनुष्य को सुख मिलता है ।”

—इमरसन

“मैं एक आवाज सुन रहा हूँ, उसे तुम नहीं सुन सकते । वह मुझसे कह रही है—‘ठहरो मत ।’ मुझे कोई हाथ उठाकर बुला रहा है; परन्तु तुम उस हाथ को नहीं देख सकते ।”

—टिकेल

राबर्ट वाटर्स का कथन है कि एक-न-एक दिन ऐसा अवश्य आता है जब प्रतिभावान् मनुष्य किसी प्रबल शक्ति के द्वारा विधाता के लिखे हुए कार्य की ओर खिंच जाता है । चाहे कठिनाइयों के बादल घिरे हों और भविष्य कितना ही निराशा-जनक दीखता हो, वह तो आनन्द से और दिल लगाकर केवल उसी काम को करता रहेगा । जब उसके प्रयत्न विफल होते हैं, वह गरीब हो जाता है, आवश्यकताएं उसकी ओर ताकती हैं, वह भूखों मरने लगता है, लोग उसे त्याग देते हैं, तब वह भले ही लम्बी सांस भरते हुए कहने लगे—“बढ़ी गलती हुई; मैं अमुक कार्य करता तो मेरी ऐसी हालत न होती ।” परन्तु इस प्रकार के विचार क्षणिक हुआ करते हैं । अन्त में स्वाभाविक भावना की ही विजय होती है ।

पाखने में पड़े हुए उस छोटे-से खिलौने के भाग्य में लिखे हुए विधाता के लेख को पढ़ने की सामर्थ्य आपमें नहीं है । क्या आप दिशा-सूचक यन्त्र की सुई में उत्तरीय ध्रुव को देख सकते हैं ? ईश्वर ने उसके

जीवन की सुई को इस तरह बनाया है कि वह अपने भाग्य के तारे की ओर ही देखती रहती है। आप भले ही उसे कृत्रिम मल्लाह में अथवा जबरदस्ती की शिक्षा से कला, कानून, डाक्टरी आदि अपनी इच्छा के कार्यों के तारों की ओर झुकाने का प्रयत्न करें उसके अमूल्य वर्षों को नष्ट कर दें; परन्तु जब उसे स्वतन्त्रता मिलेगी तब वह अपने स्थान पर लौट आयेगी और अपने भाग्य के तारे की ओर ही अपनी दृष्टि रखेगी।

सम्प्रति उस समय अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जायगा, जब प्रत्येक व्यक्ति अपने उपयुक्त काम को चुन लिया करेगा। जबतक मनुष्य को अपना सच्चा स्थान नहीं मिलता तबतक वह जैसा चाहिए, वैसा सफल नहीं हो सकता।

किसी पिता का अपने पुत्र को अपना-सा ही बनाने का यत्न करना बड़ा भारी स्वार्थ है। प्रकृति एक ही जैसे दो प्राणी कभी नहीं बनाती। प्रत्येक जन्म में वह अपने ढाँचे को बदल डालती है। वही जादूभरा मिश्रण दूसरी बार काम में नहीं लाया जाता।

फ्रेडरिक को गाली दी जाती थी, क्योंकि उसे कला और संगीत में बड़ा प्रेम था। वह सैनिक-शिक्षा से घृणा करता था। उसके पिता इन बातों को पसन्द न करते थे। कहते हैं कि एक बार उन्होंने अपने पुत्र को मार डालने तक का विचार किया था; पर स्वयं उन्हींकी मृत्यु हो जाने से फ्रेडरिक २८ बरस की उम्र में सिंहासन पर बैठ गया। इसी संगीत और कला के प्रेमी लड़के ने प्रशिया को यूरोप का सबसे अधिक तेजस्वी राष्ट्र बना दिया।

गेलीलियो का पिता उसे डाक्टर बनाना चाहता था और जब वह उसे शरीर-शास्त्र की पुस्तकें पढ़ने को मजबूर करता तब वह उनके नीचे गणित की पुस्तकें छिपाकर बैठता था और चोरी से कठिन-से-कठिन सवाल्यों को हल किया करता था। अठारह बरस की उम्र में उसने गिरजा-घर में पेण्डुलम के सिद्धान्त का आविष्कार किया। उसने दूरबीन और

सुदर्शीन ईजाद कर मनुष्य-जाति के ज्ञान और शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया ।

मार्डकेल एंजेल्सो के पिता ने घोषित कर दिया था कि मेरी किसी सन्तान को कला जैसा धृष्टित कार्य न सीखना चाहिए । उसने उसे दीवार पर चित्र बनाने के कारण सजा भी दी; परन्तु उसके हृदय में जलने वाली चित्रकला की ज्योति ने उसे कभी सुख से सोने न दिया, जबतक कि सेण्टपीटर और सिसटाइन के गिरजे में अपने अमर चित्रों को उसने चित्रित न कर लिया ।

हेण्डल चाहता था कि उसका लड़का वकील हो और इसी कारण वह उसे संगीत से दूर रखने का यत्न करता था । परन्तु लड़के को कहीं से एक टूटा हुआ बाजा मिला गया, उसे ही लेकर वह घास के ढेर में छिपकर बजाया करता था । एक दिन उसका पिता ड्यूक आफ वेसन-फील्ड के यहां गया । लड़के ने बाजा बजाकर सबको चकित कर दिया और शीघ्र ही उसका बाजा सुनने के लिए लोग इकट्ठे होने लगे । एक दिन ड्यूक ने भी उसका बजाना सुना और उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा । लड़का उसके सामने लाया गया । ड्यूक ने लड़के को उत्साहित किया और पिता से लड़के की प्रवृत्ति में बाधा न डालने का अनुरोध किया ।

डेनियल डिफो व्यापारी रहा, मेक्रेटरी रहा, एक कारखाने का मैनेजर रहा, कमिशनर का अकाउण्टेण्ट रहा तथा कई छोटी-मोटी पुस्तकों की रचना की, तब कहीं अन्त में 'राबिन्सन क्रूसो' नामक अपनी संसार-प्रसिद्ध रचना कर सका ।

इरस्कीन ने जहाजी बेड़े के कार्य में चार वर्ष व्यतीत किये और ठन्नति की आशा से सेना में भरती हो गया । इस काम को भी वह दो वर्ष तक करता रहा । एक दिन वह यौंही न्यायालय में पहुंचा । न्यायाधीश उसकी जान-पहचान का था । उसने उसे अपने पास बिठलाया और

कहा—“देखो, ये इंग्लैंड के बड़े-बड़े कानून-दां लोग हैं।” इरस्कीन के हृदय की स्वाभाविक चिनगारी भड़क उठी। वह वहां बैठे-बैठे हरेक का व्याख्यान सुनता रहा। अन्त में निश्चय के साथ उसने कहा—“मैं इन सबसे आगे निकल जा सकता हूँ।” बस उम्मीद दिन से उसने कानून के अध्ययन में अपना मन लगाया और उस क्षेत्र में वह अपने देश का एक प्रकाण्ड विद्वान् तथा वक्ता हो गया।

वह युवक सुखी है जो अपने मधुर-स्वप्नों के कार्य को पा जाता है। यदि उससे वह काम भी अच्छी तरह नहीं करते बनता तो फिर वह कोई कार्य न कर सकेगा। प्रकृति मनुष्य के पीछे पड़ी ही रहती है, जबतक कि वह अपने विधि-निर्दिष्ट कार्य में नहीं लग जाता। वह उसको आगं ढकेलती है, प्रेरणा करती है, कष्ट देती और अन्त में उसे ठिकाने पर पहुँचाकर रहती है। लोग भले ही कोशिश करें कि दिशा-सूचक यन्त्र की सुई गुरु अथवा शुक्र के तारे की ओर देखने लगे, परन्तु ऐसा होना असम्भव है। उन्हें परीक्षा कर लेनी चाहिए तब कहीं अपने पुत्र को अपनी इच्छाओं की कठोर धार पर लिटाने का साहस करना चाहिए।

यदि किसी गाड़ी खींचने वाले घोड़े को हम घुबर्दाइ में शामिल करें तो कैसा मजाक होगा। इससे कहीं अधिक हास्यास्पद बात हमारे दिमाग के विचार हैं। हम समझते हैं कि कानून, डाक्टरी और प्रोफेसरी, ये ही तीन बातें हमारे युवकों के जीवन के लिए निर्दिष्ट की गई हैं। पर क्या दूसरे धन्य नहीं हैं? किसी देश के अस्सी प्रतिशत ग्रेजुएटों का कानून के दरजे में भरती होना कितनी हास्यजनक बात है? कितने नवयुवक माता-पिता के धन्य के बुरे नक्काल बनते हैं, कितने ही बुरे डाक्टर और वकील होते हैं। देश-भर में ऐसे नवयुवक भरे पड़े हैं जो निराश हैं, नष्ट हो रहे हैं, बेकारी में फंसे हैं, गरीब हो रहे हैं, भीख मांगने पर भी भूखों मर रहे हैं, साहसहीन हो रहे हैं, तड़प रहे हैं, अगणित दुःख भोग रहे हैं और ईश्वर से मौत भेजने की प्रार्थना कर रहे हैं। यह सब क्यों

हो रहा है ? इसलिए कि वे अपने सच्चे कार्य को नहीं जानते । केवल नौकरी उनका लक्ष्य हो रहा है ।

दस वर्ष की उम्र तक बहुत कम लड़कों में प्रतिभा अथवा किसी विशेष कार्य की प्रवृत्ति प्रकट होती है । बहुत-से लड़के ज्ञान विस्तृत हो जाने और थोड़ी-बहुत शिक्षा पा लेने पर भी बीस वर्ष की उम्र तक अपने भाग्य की लिखावट को साफ पढ़ नहीं पाते । प्रत्येक व्यक्ति अपने दिमाग के दरवाजे पर धक्के लगाता है और अपने काम को जानना चाहता है, पर उत्तर नहीं मिलता । इतने पर भी कोई कारण नहीं दिखाई देता कि हाथ में लिया हुआ काम ठीक तौर से क्यों न किया जाय । सेमुएल इस्माइल्स को ऐसे धन्धे की शिक्षा दी गई थी जो उसकी रुचि के प्रतिकूल था, फिर भी वह उसमें बड़ी धीरता और योग्यता से जुटा रहा । इससे उसे लेखन-कला के कार्य में बड़ी सफलता मिली ।

अपने प्रतिदिन के कार्य के साथ सचाई और ईमानदारी का तथा स्वयं अपने, अपने माता-पिता, अपने स्वामी एवं ईश्वर के साथ उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करते रहने से एक-न-एक दिन हमें अपना मुख्य कार्य मिल ही जायगा ।

गारफील्ड संयुक्तराष्ट्र का राष्ट्रपति कभी न हुआ होता, यदि वह अच्छा शिक्षक, जिम्मेदार सैनिक तथा कुशल राजनीतिज्ञ न होता । इसी तरह न तो लिंकन और न ग्रान्ट ही बचपन से राजनीति के लिए प्रयत्न कर रहे थे । आदमी को चाहिए कि वह जिस परिस्थिति में डाल दिया गया है उसीमें अच्छी तरह से काम करे, अपनी सारी शक्ति लगा दे, और मौका मिलते ही अपनी रुचि के कार्यक्षेत्र की ओर दौड़ पड़े । कर्तव्य को अपना ध्रुव-तारा बनाइए, आपकी योग्यताओं और दृढ़ता के अनुकूल सफलता आपको अवश्य मिलेगी ।

यदि हृदय और रुचि बढ़ई का काम मांगते हों तो बढ़ई बन जाइए, यदि चिकित्सा की ओर झुकते हों तो डाक्टर हो जाइए । दृढ़ निश्चय के

साथ काम करने पर किसी भी नवयुवक के सामने सफलता के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। यदि अपनी कोई रुचि ही न मालूम पड़ती हो तो अपने अवसरों और योग्यता के अनुकूल सावधानी से कार्य चुन लेना चाहिए। संसार में सभीके लिए कुछ-न-कुछ कार्य है। सच्ची सफलता अपने काम को अच्छी तरह करने में ही है, और यदि मन में उत्साह है तो इसमें कौन नहीं कर सकता ?

जो लोग पहले गधे, आलसी और मूर्ख कहलाते थे, वे ही जब सफल हो गये तब संसार ने उनके साथ बड़ा ही सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया। परन्तु जब वे निराशा और झूठे जंजाल के बीच में खड़े होकर सिर उठाने के प्रयत्न कर रहे थे, तब संसार उनके मार्ग में रोड़े अटकाता था, उनके सिर पर डंडे जमाकर उन्हें नीचे ही रखने को विवश करता था। प्रत्येक लड़के और लड़की को मौका दीजिए, उसे समुचित उत्साह दीजिए, और उसकी भूलों के लिए उसका एकदम तिरस्कार करके हृदय के नवा-कुर को जला देने का यत्न मत कीजिए। यदि आपको उसमें उसकी मूर्खता या बेवकूफी दीखती है तो याद रखिए कि बहुत-से मूर्ख और नालायक कहलाने वाले लड़के केवल अपने अनुकूल परिस्थिति में नहीं हैं।

वेलिंगटन को उसकी माता मूर्ख कहा करती थी। वह ईटन स्कूल में बड़ा ही आलसी और ना-समर्थ विद्यार्थी समझा जाता था। उसने उस समय तक कोई नामवरी का काम करके नहीं दिखाया और सेना में काम करने के अयोग्य प्रतीत होता था। माता-पिता समझते थे कि जबतक यह कठोर परिश्रम न करेगा तबतक किसी तरह सफल नहीं हो सकता। परन्तु ४६ वर्ष की उम्र में उसने दुनिया के अपने से बड़े सेनापति को हरा दिया।

गोल्डस्मिथ अपने शिष्टकों के मजाक की चीज था। लोग उसे 'लकड़ी का चमचा' कहकर चिढ़ाते थे। साहित्य की ओर उसकी रुचि थी। उससे डाक्टरी का काम करते नहीं बनता था और यदि बनता तो फिर 'बिकार आव वेकफील्ड' अथवा 'डिजर्टेड विलेज' की रचना कौन

करता ? डाक्टर जानमन ने देखा कि यह युवक बड़ी विपत्ति में है और कर्ज अधिक हो जाने के कारण कैद कर लिया जाने वाला है, तो 'विकार आव वेकफील्ड' की हस्तलिखित प्रति एक प्रकाशक के पास बिकवा कर उन्होंने उसका कर्ज चुकवा दिया। इस रचना ने गोल्डस्मिथ को प्रसिद्ध कर दिया।

सर वाल्टर स्काट को शिक्षक 'मूढ़' कहा करते थे, परन्तु उस मूढ़ ने ही सैकड़ों शिक्षकों को शिक्षा देने और संसार का मनोरंजन करने वाले अनेक उपन्यास लिख डाले।

इन्हीं सब कारणों से कहा जाता है कि अपनी बुद्धि और प्रतिभा को समझने वाला आदमी दुनिया के हंसी-मजाक की सामग्री नहीं हो सकता। और जो भले हैं वे अपनी प्रतिभा को समझने में भूल भी नहीं कर सकते।

घबराने और व्यथित होने की आवश्यकता नहीं है। थोड़ी-सी विवेक-बुद्धि से काम लेकर संसार की यात्रा करना और अपने कार्य को दृढ़ निकाशना कोई असाध्य कार्य नहीं है।

—पांच—

जीवन का उद्देश्य

“जिसमें तुम्हारी प्रवृत्ति है उसीमें लगे रहो । अपनी बुद्धि के मार्ग को मत छोड़ो । प्रकृति तुम्हें जो कुछ बनाना चाहती है, वही बनो । तुम्हें विजय मिलेगी । इसके विपरीत यदि तुम और कुछ बनना चाहोगे तो कुछ भी न बन सकोगे ।”

—सिडनी स्मिथ

“संसार का संचालन करने के लिए मैं बंधा हुआ नहीं हूँ, लेकिन ईश्वर ने मेरे लिए जो काम बनाया है, उसे अपनी सारी ताकत लगाकर पूरा करने के लिए मैं बंधा हुआ हूँ ।”

—जीन एंजिलो

हरेक आदमी संसार में कोई-न-कोई काम लेकर ही पैदा होता है । जिस काम की ओर तुम्हारी रुचि हो वही काम तुम्हारा सच्चा काम है । तुम्हारे भाग्य का अधिकार तुम्हारे आचरण के मार्ग से दिखाई देता है । यदि तुम्हें अपना उचित स्थान प्राप्त हो गया तो अपनी सारी मानसिक और शारीरिक शक्ति उसको सफल बनाने में लगा दो; तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी । क्या कारण है कि दुकान खोलने वाले दो आदमियों में से एक सफल होता है, पर दूसरा धन गंवाकर रह जाता है ? सफल होने वाले की सच्ची प्रवृत्ति और योग्यता दुकान के कार्य की ओर थी, लेकिन दूसरे ने केवल दुकान से होने वाले लाभ को देखकर ही एक दो रुपये बनाने की कोशिश की थी ।

हो सके तो ऐसा कार्य चुनना चाहिए जिसमें तुम अपने अनुभव और वृत्ति को सबसे अधिक मात्रा में केन्द्रीभूत कर सको । ऐसा करने से न

केवल तुम्हें अपने कार्य में आनन्द आयेगा, बल्कि उसमें तुम अपनी सबसे अधिक योग्यता और बुद्धि लगा सकोगे—और यही तुम्हारा सबसे श्रेष्ठ मूलधन है।

अपनी रुचि की ओर ही बढ़ो। अपनी महत्वाकांक्षाओं के विरुद्ध तुम अधिक समय तक युद्ध नहीं कर सकते। माता-पिता, मित्रगण, दुर्भाग्य भले ही तुम्हारे हृदय की लाजसा को रुचि के विरुद्ध कार्य करने या दवाने की कोशिश करें, पर ज्वालामुखी के समान अन्दर की आग एक दिन भड़क ही उठेगी। वह अपने वांछित कार्य में चमक उठेगी। जिस काम में तुम्हारी रुचि नहीं है उसे तुम पूर्णता से नहीं कर सकते। प्रकृति अधूरे और भद्दे कामों को देखकर शाप देती है और उसका फल करने वाले को भोगना पड़ता है।

फ्रेंकलिन का कहना है—“जिसके पास व्यवसाय है उसके पास एक रियासत है; जिसके पास धन्धा है उसके पास सम्मान और लाभ की जगह है। अपने पैरों पर खड़ा रहने वाला घुटने टेकने वाले से अच्छा है।” इस कथन में कितनी सचाई है। अपनी हीनावस्था में नौकरी के लिए जान देने वालों को जानना चाहिए कि व्यवसाय नौकरी से कई दर्जे अच्छा है। इसके लिए चेन्न है। अन्तःकरण की प्रवृत्ति और इच्छा यदि उस ओर हो तो जीवन सुखी हुए बिना नहीं रह सकता।

किसी आदमी को बनाने के लिए दूसरी बातों की अपेक्षा उसका व्यवसाय अधिक उपयोगी है। इसमें उसके पुट्टे कड़े होते हैं, शरीर मजबूत होता है, खून का दौरा तेज होता है, दिमाग शान्त हो जाता है, न्याय-बुद्धि शुद्ध हो जाती है, आविष्कार-प्रतिभा जाग्रत हो जाती है। उसकी आकांक्षा ऊपर उठ आती है, उसे मनुष्यत्व का ज्ञान होता है और वह उसे बतलाता है कि तुम मनुष्य हो, मनुष्य का कार्य तुम्हें करना और मनुष्य के भाग को ग्रहण करना चाहिए। मनुष्योचित व्यवसाय न करने वाला कभी समझ नहीं सकता कि वह मनुष्य है।

बिना काम का आदमी आदमी नहीं है। काम करना मनुष्य-जीवन का उद्देश्य है। १५० पौंड हड्डी और मांस मनुष्य नहीं है। हड्डी, मांस और दिमाग अच्छी तरह जानते हैं कि मनुष्य का काम किस प्रकार किया जाता है, मनुष्योचित विचार कैसे सांचे जाते हैं।

कुछ लोग कहा करते हैं कि यदि कुछ काम न करना पड़ता तो जिन्दगी बड़े आराम से गुजरती। लेकिन बेमार पड़े रहना कुछ दिन भले ही अच्छा लगे, हमेशा के लिए वह आनन्द की वस्तु नहीं हो सकता। पड़े रहने से दिमाग तो चुप नहीं बैठेगा, वह भले-बुरे विचारों का ताना-बाना बुनता ही रहेगा, कोई-न-कोई शैतानी चक्कर चलाता ही रहेगा। वह ऐसी चक्की है जो चलती ही रहती है। यदि उसमें अनाज डाला जाय तो वह उसे पीसकर आटा कर देगी और यदि कुछ न डाला जाय तो खुद उसीको पीस डालेगी। ऐसी हालत में अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, सभीके जीवन की एक ही निश्चित धारा है, प्रकृति का एक ही नियम है—काम करना।

जीवन-संग्राम में विजय पाने की सबसे पहली विधि यही है कि हम कोई-न-कोई काम करें। यदि हम मुंह फुलाये बैठे रहेंगे तो आसमान से खाना टपक न पड़ेगा। और फिर जो काम हाथ में हो उसमें लगे रहना भी एक खास बात है। आज यहां और कल वहां करने से यहां और वहां दोनों में हाथ धो बैठना पड़ता है। साधारण अवस्थाओं में, यदि मनुष्य में पथ-प्रदर्शक क्रियात्मक विवेक-बुद्धि है, तो इन दो बातों से उसे सफलता अवश्य मिल जायगी।

कुछ लोग ऊंची जगह और बड़ी नौकरी की तलाश में ही बैठे रहते हैं। छोटी-से-छोटी जगह से आगे बढ़ना वे नहीं जानते। भाई जिम् जगह हो वहीं से बढ़ना सीखो। जो काम हाथ में लिया हो उसीको नष्ट ढंग से करो। उसमें ऐसी निपुणता दिखा दो जैसी पहले कोई न दिखा सका हो। अपने दूसरे साथी कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षा अधिक फुर्तीले

साहसपूर्ण और नम्र बना। अपने काम का खूब अध्ययन कर लो, उसके करने की नई-नई विधियाँ निकाल लो। काम करने की कला का उद्देश्य केवल सन्तोष देना ही नहीं है, केवल अपने स्थान की पूर्ति ही नहीं है, किन्तु आशा में अधिक अच्छा काम करके दिखा देना है और इसका परिणाम अच्छा हुए बिना रह नहीं सकता।

कुछ युवक कहते हैं कि यदि हमें अमुक काम न मिलता तो हम घर में ही बैठे रहेंगे। भला यह भी कोई बुद्धिमानी है ! घर बैठे-बैठे समय नष्ट करने से क्या लाभ ? समय पैसा नहीं है बल्कि वह तो स्वयं जीवन है। जल्दी-से-जल्दी जो काम मिलता हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। अपनी योग्यता और काम के दर्जे पर ध्यान देना तो पतन का मार्ग है। यदि हम उसी काम में मनुष्यत्व को सच्चे ढंग से लगायें तो उस काम का भी मूल्य और महत्व बढ़ जायगा। एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति यदि बढ़ई का काम करने लगे तो बढ़ई के धन्धे में जीवन आ जायगा और नई-नई कल्पना की चीजें बनने लगेंगी।

ग्लेडस्टन कहा करते थे कि मनुष्य के शरीर या दिमाग से काम लेने की भी सीमा है और वही आदमी बुद्धिमान है जो अपनी शक्तियों को ऐसे कामों में खर्च नहीं करता जिनके लिए वह अयोग्य है।

इसी तरह कार्लाइल ने भी लिखा है—“वह मनुष्य भाग्यशाली है जिसे काम मिल गया है। किसी दूसरे सुख के लिए उसे अब इच्छा नहीं करनी चाहिए। जो काम उसे मिल गया है, उसे ही वह करता रहे।”

काम का चुनाव करते समय अपने हृदय से कभी मत पूछो कि कौन-सा व्यवसाय करके हम प्रसिद्धि या धन प्राप्त कर सकेंगे। उसी काम को चुनो जिसमें तुम अपनी मनुष्यता की सारी शक्ति लगा सकते हो और अपने को ऊँचा बना सकते हो। तुम्हारे लिए न तो धन की आवश्यकता है, न प्रसिद्धि की और न कीर्ति की—तुम्हें केवल शक्ति की जरूरत है। मनुष्यत्व धन और कीर्ति से बढ़ा होता है। आचरण किसी

भी जीवन-व्यापार की अपेक्षा अच्छा है। प्रत्येक इन्द्रिय को शिक्षित करना चाहिए, नहीं तो तुम्हारे कामों में अभाव दिखाई देगा। हाथ को सुन्दर, मेहनती और मजबूत होने की, आंखों को सूक्ष्म और सावधान निरीक्षण की, हृदय को कोमल, सच्चे और सहानुभूतिपूर्ण होने की, स्मरण-शक्ति द्वारा बातों को ठीक-ठीक याद रखने और समझने की योग्यता प्राप्त करने की शिक्षा देनी चाहिए। संसार नहीं चाहता कि तुम वकील, तन्त्री, डाक्टर, किसान, वैज्ञानिक अथवा व्यापारी बन जाओ। वह तुम्हारा कार्य निर्धारित नहीं करता। वह तो केवल यही चाहता है कि जिस किसी काम में तुम हाथ लगाओ उसपर तुम्हारा पूर्ण अधिकार रहे और उसमें तुम प्रवीणता प्राप्त कर लो। यदि तुम अपने काम में सफल हो जाओगे तो संसार तुम्हारी प्रशंसा करेगा और तुम्हारे लिए सब दरवाजे खुल जायेंगे। लेकिन याद रखो, संसार असफलता और अपूर्णता को बहुत बुरी नजर से देखता है।

फ्रान्स के महान् पुरुष रूसो ने कहा है—“जो मनुष्य अपने कर्तव्य को अच्छी तरह से करने की शिक्षा पा चुका है वह मनुष्य से सम्बन्ध रखने वाले सभी कामों का भली-भांति करेगा। मुझे इसकी चिन्ता नहीं है कि मेरे शिष्य सेना, धर्म अथवा न्यायालय के लिए बनाए गए हैं। समाज से सम्बन्ध रखने वाले किसी कार्य के पहले प्रकृति ने हमें तो मानव-जीवन से सम्बन्ध रखने वाले कार्य करने के लिए बनाया है। यही मैं अपने शिष्य को सिखाऊंगा। जब उसे यह शिक्षा मिल चुकेगी तब वह न सिपाही होगा, न पादरी और न वकील ही। वह पहले मनुष्य होगा, पीछे और कुछ।”

जिस उद्देश्य के बारे में हमें जरा-सा भी सन्देह है, जिसके न्याय-युक्त और अच्छे होने में जरा-सा भी शक है, उसे एकदम छोड़ देना चाहिए। आजकल भूलों को सजाकर सुन्दर दिखाने की कला का अधिक प्रचार हो रहा है। बड़े आश्चर्य की बात है कि तर्क के जोर से

मनुष्य की भली और शुद्ध भावनायें देवा दी जाती हैं। एक बड़े प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने कहा है कि मनुष्य अगर कुछ परिश्रम करे तो वह ऐंसे-ऐंसे तर्क निकाल सकता है जिनके द्वारा वह आदमी की सुशीलता और लज्जा का आसानी से अन्त कर दे। अतः जब किसीके सामने मन्दहजनक परन्तु आकर्षक भविष्य रखा जाता है तो बुरी-से-बुरी बातों को तर्क के द्वारा भली मिद्ध कर दिखाने का लोभ होने की सम्भावना है। परन्तु इसमें मन्दह नहीं कि जिस उद्देश्य में दुराचार का जरा-सा भी लेश है वह अवश्य विफल होगा।

इसमें कोई मन्दह नहीं कि प्रत्येक जीवन में प्रत्येक मनुष्य की किसी विशेष कार्य की ओर रुचि होती है। मनुष्यों में से कुछको हम प्रतिभावान् व्याक्त कहते हैं, इसके चिह्न उनके बचपन में भी दिखाई दे जाते हैं।

तुम उसीको अपना सच्चा स्थान कह सकते हो, जिसके स्मरण-मात्र से तुम्हारी सब शक्तियाँ जाग्रत हो उठें, जिसे तुम्हारी प्रवृत्ति सहर्ष स्वाकार करता हो, जिसके स्पर्श से तुम उत्साहित हो उठते हो। यदि तुम दुर्भाग्य से अरुचिकर कार्य में फँस गए हो तो जितनी जल्दी हो सके उससे छुटकारा पाने की कोशिश करो।

यदि तुम्हारा व्यवसाय या कार्य निम्नश्रेणी का है तो दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा उसमें अधिक मनुष्यत्व का उपयोग करके उसे ऊँचा उठा लो। उसमें दिमाग, हृदय, शक्ति और मितव्ययिता का समावेश करो। नवीनता से उसका विस्तार करो, परिश्रम और उद्योग से उसे बड़ा बना दो, उसका अध्ययन करो, उसकी बारीकियों को सीख लो। अपनी योग्यता को उसपर केन्द्रित कर दो। याद रखा, महान् विजयी वही होते हैं जो एक उद्देश्य को लेकर काम करते हैं और जिनकी आत्मा का राज्य अविभाज्य है। दूसरे का स्थान छीनने की अभिलाषा करने की अपेक्षा अपने स्थान को ही सुशोभित करना अच्छा है।

ऊंची-से-ऊंची चोटी पर पहुँचना हो तो अपने उद्योग की नीची-से-नीची सतह से ही आरम्भ करें। अपने काम से जिसका सम्बन्ध हो ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ और अनुपयोगी न समझो। उसका पूरा ज्ञान प्राप्त करो।

जिस तरह विवाहित जीवन को सुखी बनाने के लिए, उसे जीवन की कठोरताओं और आपत्तियों से निकाल ले जाने के लिए निमल अटूट प्रेम की आवश्यकता है, उसी तरह किसी व्यवसाय में सफल होने के लिए उसके प्रेमी हुए बिना मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का बीरता के साथ सामना नहीं किया जा सकता। जिस वस्तु में हमें प्रेम हो जायगा उसके लिए हमेशा हम आसानी से अपने प्राणों को निछावर करने के लिए तैयार रहेंगे। जब हम प्राणों को तुच्छ समझकर काम करेंगे तो निस्सन्देह बाधाओं पर विजयी हो जायेंगे और अपने कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे।

उन लोगों को, जिनको इस युग में मित्र और सिफारिश का महारा नहीं है, जीवन में सफल होने का मार्ग बतलाते हुए श्री रसेल लिखते हैं कि सबसे पहली बात है काम करना, दूसरी है अपना मुँह बन्द रखना, तीसरी है अवलोकन करना, चौथी है विश्वासपात्र होना, पाँचवीं है मालिक को यह बतला देना कि हमारे बिना तुम्हारा काम नहीं चल सकता, और छठी नम्र होना। इन बातों पर ध्यान देने से किसी भी क्षेत्र में तुम्हें निराश न होना पड़ेगा।

—छः—

एकाग्रता

“यदि जीवन में बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है, और यदि कोई खराब बात है तो वह है अपनी शक्तियों को बखेर देना। बहुचित्तता कैसी भी हो, इससे क्या। वही चीज अच्छी है जो हमारे खिलवाड़ और भ्रम की चीजों को दूर कर देती है और हमें हृदय से अपने काम करने के लिए भेजती है।”

—इमरसन

“जो व्यक्ति जीवन में केवल एक बात दृढ़ता है वह आशा कर सकता है कि जीवन समाप्त होने के पहले उसे वह प्राप्त हो जायगी।

—थोएन मेरेडिथ

मन की दृढ़ इच्छा-शक्ति को किसी एक काम में केन्द्रित कर देने को एकाग्रता कहते हैं। एकाग्रता पैदा होने पर संसार में ऐसा कोई काम नहीं रह जाता जो पूरा न किया जा सकता हो।

सफल और असफल मनुष्यों में क्या अन्तर है ? यह कि एक ने कम काम किया और दूसरे ने ज्यादा ? क्या यही दोनों के परिश्रमों के विभिन्न परिणामों का कारण है ? नहीं, बात कुछ और ही है। सफल व्यक्ति ने अपना कार्य बुद्धिमत्ता से किया, एकाग्रता से किया, उसमें अपना दिमाग लगाया। असफल व्यक्ति ने बोरु ढोया था। ऐसे लोग काम तो बहुत करते हैं, परिश्रम भी करते हैं, लेकिन उसमें अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करते। उसके श्रम और उसके फल को देखकर दया आती है। वे परिस्थितियों को पकड़े रहते हैं और नहीं जानते कि अचानक से किस तरह लाभ उठाना चाहिए। उनमें वह शोध्यता नहीं

जिससे वे असफलता को सफलता में बदल दें।

ऐसे व्यक्तियों से पूछिए कि आपके जीवन का उद्देश्य क्या है, तो वे कह उठेंगे—“हमें नहीं मालूम, हम यह भी नहीं जानते कि हममें कौन-सा काम करने की योग्यता है। हम कठिन परिश्रम में विश्वास करते हैं और हमने जीवन-भर परिश्रम करने का ही निश्चय किया है। हम जानते हैं कि कुछ-न-कुछ अवश्य हाथ लगेगा।” लेकिन यदि अवसर से लाभ उठाना न आयेगा तो कुछ भी हाथ नहीं लग सकता। क्या कोई आदमी मीने और चांदी की मत्तह पाने भर के लिए सारे महाद्वीप को खोदना पसन्द करेगा? किसी खास बात की खोज में एकाग्र-चित्त हुए बिना कुछ भी न होगा। जैसा प्रयत्न होगा वैसा ही फल मिलेगा।

स्पष्ट उद्देश्यों की शक्ति का असर जीवन पर बड़ा गहरा होता है। जब कोई व्यक्ति बुद्धिवाद द्वारा अपनी जीवन-यात्रा शुरू करता है तब उसकी आवाज, पांशाक, दृष्टि और गति सब उसीके अनुकूल हो जाती हैं।

जब कोई स्वावलम्बी पुरुष किसी भी हेतु से अपना कोई काम शुरू करता है तो उसके कपड़ों और उसकी बोली से उसके कार्य के रंग-रूप का पता चल जाता है। वह अपने पैरों पर खड़ा रहता है और आत्मसम्मान तथा आत्मसंतोष की चाल से चलता है। फटे कपड़े उन्हें छिपा नहीं सकते, रेशम की माड़ियां उनकी सुन्दरता को नहीं बढ़ा सकतीं, और न बीमारी और थकावट ही उन गुणों को मेट सकती हैं।

कहावत है कि जो नाविक अपनी यात्रा के अन्तिम बन्दरगाह को नहीं जानता उसके अनुकूल हवा कभी नहीं बहती।

कारलाइल कहता है कि सबसे दुर्बल प्राणी भी अपनी शक्तियों को एक वस्तु पर केन्द्रित करके कुछ-न-कुछ कर सकता है। इसके विपरीत सबसे शक्तिशाली भी उन शक्तियों को बहुत-सी बातों में बखेरकर हरेक काम में असफल हो सकता है। लगातार गिरनेवाली

बूंदों में कठोर-से-कठोर चट्टान में छेद हो जाता है, पर तृतीया से बहने वाले पानी का प्रवाह भयंकर आवाज करता हुआ निकल जाता है, उसका कोई चिन्ह भी पीछे नहीं रह जाता ।

एक बुद्धिमान शिक्षक कहता है कि युवावस्था में मैं सोचा करता था कि बादलों की गरज मृत्यु का कारण होती होगी, पर बड़ा होने पर मुझे पता चला कि मृत्यु का कारण बादलों का गर्जन नहीं बिजली है । बस, उसी दिन से मैंने गरजना कम कर दिया और चमकना शुरू कर दिया ।

सब शक्तियों को किसी एक काम में लगा देने से यह भी नहीं मालूम हो पाता कि समय कब बीता ।

मिडनी स्मिथ का कहना है कि सबसे मूल्यवान अध्ययन तो वही कहलाता है जिसमें हम पढ़ने में इतने निमग्न हो जायें कि मालूम हो भोजन करने का समय निश्चित समय से दो घण्टे पहले आ गया । अपने पाठ्य विषय के आगे संसार की सब बातों को भूल जाना ही एकाग्रता है ।

पुस्तक पढ़ते समय अपनी आंखों के सामने साग चित्र खिंच जाने दीजिए । तल्लीनता और एकाग्रता आपको वर्तमान बाह्य आकर्षणों से दूर कर देगी और यदि आपका मित्र भी एक बार आपके पास खड़ा रहे तो भी आपको उसकी उपस्थिति का ज्ञान न होगा ।

प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक चार्ल्स डिकेन्स कहा करता था कि ध्यान एक उपयोगी, निरापद, निश्चित, लाभदायक और प्राप्त करने योग्य गुण है । मैं आपको सचमुच विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे आविष्कारों या कल्पनाओं ने मेरी ऐसी मदद कभी न की होती, यदि मुझमें साधारण, नम्र, दृढ़ रूप से ध्यान देने की आदत न होती । सदा पूर्ण मनुष्य बनने की कोशिश करनी चाहिए । चाहे सुलेखक बनकर देश की विचार-धारा में क्रान्ति उत्पन्न कर दीजिए; चाहे पटु खिलाड़ी होकर प्रतिद्वन्द्वियों को हरा दीजिए; चाहे गायक बनकर संसार को मोह लीजिये । कुछ भी कीजिए, पर उसमें अपने शरीर और मन को लगा दीजिए । वह और

आप एक हो जाइए। अपने उद्देश्य के साथ खिलवाइ मत कीजिए।

चार्ल्स किंगस्ले ने भी कहा है—“जब मैं किसी काम में लगता हूँ उस समय संसार की और कोई बात मेरे सामने नहीं रहती। यहाँ उद्योगी पुरुष बनने की कुंजी है, परन्तु लांग इसे अपने मनोरंजन के समय भी साथ नहीं रख सकते।”

“मेरा कर्ममय जीवन देख बहुत-से आदमियों ने मुझसे पूछा—‘तुम इतनी किताबें लिखने का समय कब पाते हो? संसार का इतना काम तुमसे कैसे होता है?’ मेरे जवाब को सुनकर वे आश्चर्य में पड़ गए। मैंने कहा—‘मैं कभी कोई काम बहुत-सा नहीं करता, इसीलिए इतना कर पाता हूँ।’ यदि मनुष्य कोई काम करना चाहता है तो उसे थकावट से बचना चाहिए। यदि वह आज बहुत ज्यादा काम करेगा तो कल वह बहुत कम कर पायेगा। कालेज छोड़ने के बाद जब मैंने मच्छे दिल से अध्ययन करना शुरू किया तब से आज तक मैंने बहुत-से ग्रन्थों को पढ़ डाला, बहुत यात्रा की और बहुत कुछ देखा। राजनीति में भाग लिया और जीवन की अन्य बातों में भी योग दिया। इस सबके अतिरिक्त मैंने ६० ग्रन्थों की रचना की। कुछके लिए विशेष अध्ययन करना पड़ा। क्या आप बतला सकते हैं कि लिखने और पढ़ने में मैंने कितना समय लगाया होगा? तीन घण्टे से अधिक मैंने कभी इसमें खर्च नहीं किये, और जब पार्लमेण्ट का अधिवेशन होता रहता था उस समय तो ये तीन घण्टे भी नहीं मिलते थे; परन्तु इन तीन घण्टों में मेरा सारा ध्यान मेरे सामने के काम में ही रहता था।” यह थी एडवर्ड बुलवर लिटन के जीवन की महत्ता।

एस० डी कालरिज के दिमाग में विचित्र शक्ति थी, परन्तु उसके सामने कोई निश्चित उद्देश्य नहीं था। वह बहुचिन्तता के वायुमण्डल में रहता था। इसी वायुमण्डल ने उसकी शक्ति को खा लिया। उस चूम डाला और उसके जीवन को दुःखमय और असफल बना दिया। उसका जीवन सपनों में बीतता था और कल्पनाओं ने उसकी मृत्यु-शय्या तैयार

की। रात-दिन उसकी नई-नई योजनाएं बना करती थीं। रोज ही एक नया निश्चय आकर खड़ा हो जाता था। बहुत दिनों तक यही हाल रहा। वह कुछ-न-कुछ करना चाहता था, पर कुछ न कर सका। अन्त में एक दिन इस संसार से बिदा हो गया। उसके कमरे के कागज-पत्रों की खोज करने से पता चला कि दर्शन और मनोविज्ञान पर लगभग ४० हजार निबन्ध उसने लिखे थे, पर सब अधूरे पड़े थे। उसने एक को भी पूरा नहीं किया। एक को शुरू करता कि कुछ देर बाद दूसरे विषय पर लिखने की उसकी इच्छा होती थी। इसी डावांड़ोल मनः-स्थिति में वह एकाग्रता की शक्ति का मूल्य न समझ पाया और संसार उसके ज्ञान से लाभ उठाने से वंचित रह गया।

एडम्स कहा करता था कि लार्ड ब्रोम केनिंग के समान ही बड़े प्रतिभावान् व्यक्ति थे। यद्यपि उन्होंने कानून के पेशे में लार्ड चान्सलर का पद प्राप्त कर लिया था, वैज्ञानिक खोजों के कारण प्रशंसा प्राप्त की थी, फिर भी उनका जीवन अस्फल रहा। वे सब कुछ थे, पर कभी एक कार्य में न टिक सके। इतनी योग्यता होने पर भी इतिहास अथवा साहित्य में उनका कोई चिरस्थायी स्थान न बन सका। उनकी कीर्ति उन्हींके जीवन में समाप्त होने लगी थी।

कुमारी मारटिनो उनके जीवन की एक घटना का वर्णन करती हैं—
“एक दिन हम लोग उनके घर पर थे। एक चित्रकार ने सब लोगों के साथ उनके महल का चित्र लेना चाहा। लार्ड महोदय से भी निवेदन किया कि आप पांच सेकण्ड तक बिना हिले-डुले बैठ रहियेगा। उन्होंने स्वीकार तो कर लिया, पर वे हिल गये। फलतः चित्र में धब्बा पड़ गया।”

इसमें एक बड़े महत्त्व की बात है। अपनी शताब्दी में वे बड़े भारी व्यक्ति हो गये होते, पर उनमें स्थिरता नहीं थी। जहां जाते वहां धब्बा पड़ा ही करता था। ऐसे कितने ही जीवन हैं जिनपर एकाग्रता और स्थिरता और कमी के कारण धब्बे पड़ जाया करते हैं।

नौकरी की तलाश में घूमने वाले नवयुवकों से पाश्चात्य देशों में यह नहीं पूछा जाता कि तुमने किन-किन स्कूलों और कालेजों में शिक्षा पाई है ? तुम्हारे बाप-दादा कौन थे ? उनसे केवल एक प्रश्न किया जाता है—‘तुम क्या कर सकते हो ?’

वैज्ञानिकों का कहना है कि एक एकड़ भूमि की घाम में इतनी शक्ति फैली हुई होती है कि उसके द्वारा संसार की सारी मांटों और चक्कियों का संचालन किया जा सकता है । केवल उस शक्ति को एक भाप के इंजन के ‘पिस्टन-रॉड’ पर केन्द्रित करने की आवश्यकता है । परन्तु वह आराम से बिगरी हुई अवस्था में पड़ी है । अतः विज्ञान और उपयोगिता की दृष्टि से वह किसी काम की नहीं । इसी तरह ऐसे हजारों आदमी हैं, जो ज्ञानी हैं, जिनमें शक्ति भरी हुई है, परन्तु वे उसे एकत्र करके किसी निश्चित स्थान पर लाने में असमर्थ हैं । इसी कारण उन्हें सदा विफल होना पड़ता है । शक्तियों को बखेर देने से उनका अपव्यय ही नहीं होता बल्कि शीघ्र कार्य करने का उत्साह भी नष्ट हो जाता है ।

केवल कल्पना और धुन पर ही कार्य करना कभी अच्छा नहीं होता । जो-कुछ करना तो उसका नक्शा तैयार कर लेना चाहिए । फिर उसीके अनुसार अपने कदमों को साहस और दृढ़ता के साथ बढ़ाने जाना चाहिए । हमारे विद्यार्थी आखिर करते क्या हैं ? उनका जीवन गते हुए क्यों बीतता है ? इसलिए कि उनका कोई उद्देश्य नहीं होता । वे ऐसी पुस्तकें पढ़ते हैं जो उनके वर्तमान कार्य से सम्बन्ध नहीं रखतीं, पर ऊपर से घमण्ड करते हैं कि आगे चलकर काम आयेंगी । जो हो रहा है उसपर ध्यान न देकर भविष्य की किसी मधुर आशा पर वर्तमान को संकटमय बना लेना बड़ी भूल है ।

नवयुवकों को हमेशा सिखाया जाता है कि अपने उद्देश्यों को खूब ऊंचा रखो, परन्तु उन्हें यह कोई नहीं बतलाना कि जिस निशाने को मार सकते हो उसीको लक्ष्य बनाओ । आकाश की ओर मुँह करके

इस आशा से तीर छोड़ना कि वह वृत्त की चोटी को पार कर जायगा, पागलों का ही काम है। धनुष से छूटा हुआ बाण वायु-मंडल में यहाँ-वहाँ नहीं घूमता, वह अपने चारों ओर नहीं देखता फिरता। वह सीधा उठता है, उसका लक्ष्य एक ही होता है, उसीको जाकर वह छेदता है। कुतुबनुमा की सुई की नोक आकाश में चमकनेवाले किसी तारे की ओर नहीं झुकती, वह केवल एक प्रकाश की ओर ही ताकती है। उसे कौन अपनी तरफ खींचने की कोशिश नहीं करता ? सूर्य उसे चकाचौंध करता है; पुच्छल तारे उसे मार्ग दिखाते हैं; छोटे-छोटे तारागण उसकी तरफ देखकर झिलमिल-झिलमिल चमकते हैं और उसकी प्रीति के भागी होना चाहते हैं। परन्तु अपने लक्ष्य की पूर्ति में लगी, अपनी वृत्ति की सच्ची सुई भूलकर भी दूसरे की ओर नहीं देखती। सूर्य का प्रकाश होता है, तूफान उठते हैं—सब कुछ होता है, परन्तु उसका मुंह ध्रुवतारे की ओर ही रहता है। इसी तरह हमारे जीवन के मार्ग में दूसरे सैकड़ों प्रकाश हमें अपने रास्ते से बहका देने के लिए चमकेंगे और प्रयत्न करेंगे कि हमें अपने कर्तव्य और सत्य से डिगा दें, पर हमें चाहिए कि अपने उद्देश्य की सुई को आशा के ध्रुव तारे की ओर से कभी न हटने दें।

—सात—

वक्र की पावन्दी

“दौड़ना व्यर्थ है। मुख्य बात तो समय पर निकलना है।”

—लाफांत

“हमेशा हमारे भाग्य के धागों को कौन देख सकता है ?
क्षण-भर के लिए हितकारी अवसर आता है; हम उसे खो देते हैं
और महीनों तथा बरसों का नाश हो जाता है।

“धीरे-धीरे रास्ते पर चलकर मनुष्य 'कभी नहीं' के मुकाम
पर पहुँचता है।”

—कारलाइल

“आज का दिन घूमने में खो दो—कल भी वही बात होगी;
और फिर अधिक मुस्ती आयेगी।”

—शेक्सपियर

पुराने समय में जब रेल-तार आदि नहीं थे उस समय चिट्ठी-पत्री,
सरकारी डाक आदि ले जाने के लिए डाकिये रहा करते थे। उनको
बतला दिया जाता था कि यदि रास्ते में ठहरोगे और देर से पत्र पहुँचा-
ओगे तो मृत्यु-दण्ड पाओगे। इस प्रकार इनको समय नष्ट करने का
परिणाम भोगना पड़ता था।

जिस कार्य को करने में पुराने जमाने में बहुत समय लग जाता था
और जिसमें रास्ते की भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था,
वही अब कुछ घण्टों में हो जाता है। जो बात आज हम एक घण्टे में
कर सकते हैं उसे हमारे पूर्वज २० दिन में भी नहीं कर पाते थे। परन्तु
इतना होने पर भी हम अपने पूर्वजों से गये-बीने हैं। हमने इस वैज्ञानिक
सभ्यता से क्या लाभ उठाया ? कंजूस को दस रुपये मिलें तो भी कुछ
बाध नहीं, और हजार मिलें तो भी वैसा ही है। वह उन्हें सन्दूक में बन्द

कर नष्ट किये बिना न रहेगा। यही हालत हमारी है। अब समय अधिक मिलने लगा तो व्यर्थ का प्रयोग भी वैसा ही बढ़ गया।

देर करने का परिणाम भयंकर होता है। सीजर ने राजमहा में जाकर एक खबर पढ़ने में देर की और अपनी जान खो बैठा। कर्नल गहल ताश खेल रहा था। एक नौकर ने वाशिंगटन की सेना के खाना होने का सूचना-पत्र उसे लाकर दिया। बिना पढ़े ही उसने उसे जेब में रख लिया और ताश खेलने में लगा रहा। खेल समाप्त होने पर उसने अपने आदमियों को सामना करने के लिए तैयार किया। लेकिन अब अवसर निकल चुका था। वे कैद कर लिए गए और तलवार के घाट उतार दिए गए। केवल कुछ मिनटों की देर से वह अपना मान, स्वतंत्रता और जीवन खो बैठा।

प्रत्येक के जीवन में कुछ ऐसी घड़ियाँ आती हैं जिनपर भाग्य का बनना और बिगड़ना अवलंबित रहता है। यदि मन जरा भी हिचकिचाया या डरा तो सब-कुछ चला जाता है।

जब मनुष्य का एक काम समाप्त हो जाय तो उसे दूसरे में लग जाना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि एक काम समाप्त होने पर लोग विश्राम करने लगते हैं। यह विश्राम क्या है, आलस्य-भरी मदिरा का प्याला है। उस विश्राम में अपने पूर्वसञ्चित समय के मूल्य को वे खो बैठते हैं। उस विश्राम में उन्हें फिर वर्तमान और भविष्य का धुंधला प्रकाश भी नहीं दीखता। अतः प्राकृतिक विश्राम के सिवा मनुष्य-जीवन में और किसी विश्राम के द्वारा समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं।

रस्किन का कहना है कि जवानी का सारा जीवन एक प्रकार की रचना, एक प्रकार के सुधार और शिक्षण का काल है। उसका एक भी ब्रंटा ऐसा नहीं है जो भाग्य के विधान के लिए उपयोगी न हो। ऐसी एक भी घड़ी नहीं जाती जिसका नियत कार्य फिरे किया जा सकता हो। लोहा ठण्डा हो जाने पर जैसे घन पटकने से कोई लाभ नहीं

होता, उसी प्रकार अवसर निकल जाने पर फिर कुछ हाथ नहीं आता ।

नेपोलियन अनुकूल समय पर बहुत ही ध्यान देता था । उसे अपने हाथ से न जाने देकर वह बड़ी-बड़ी शत्रु-सेनाओं पर विजय प्राप्त कर लेता था । उसका कहना था कि पाँच मिनटों का मूल्य न समझने के कारण ही आस्ट्रेलिया वाले हार गये । इसी तरह उसके पतन और वाटरलू की हार का प्रधान कारण कुछ घड़ियों की देर ही थी । प्रूशिया समय पर नहीं आया और नेपोलियन को उसके लिए ठहरना पड़ा । बस, इतनी-सी बात से नेपोलियन बन्दी बना लिया गया और मरने के समय तक सेंट हेलेना के टापू में उसे अपने जीवन के दिन गिनने पड़े ।

काम को टाला कि फिर वह कभी पूरा नहीं होता । जो काम अभी होगा वही होगा । जो शक्ति आज के काम को कल पर टालने में खर्च हो जाती है उसी शक्ति के द्वारा आज का कार्य आज ही किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त जो काम कल पर टाल दिया जाता है उसे कल करने में भी कठिनाई होती है । मन पर उस काम का बोझ बना रहता है, और मन घबराता रहता है, और नतीजा यह होता है कि वह कार्य भाररूप मालूम होने लगता है । जो बात आज बड़े आनन्द और सुख के साथ की जा सकती है वह कल हमें दुःख पहुँचाने वाली और जीवन का कांटा हो जाती है । पत्रों का उत्तर जितनी अच्छी तरह तत्काल दिया जा सकता है उतनी खूबी से वह कल नहीं दिया जा सकता । बड़ी-बड़ी दुकानों और कारखानों वाले अपने पत्रों का उत्तर देना कल पर नहीं टालते ।

शरीर में फुर्ती हो तो आलस्य पास नहीं फटकता, काम का बोझ भी भारी नहीं लगता । टाल देने का मतलब प्रायः छोड़ देना होता है और 'करने ही वाला हूँ' का अन्त 'नहीं ही करने वाला हूँ' पर रहता है । कहावत है, 'असाढ़ का चूका किसान और डाल का चूका बन्दर कहीं का नहीं रहता ।' 'काम करना' भी तो एक तरह का बीज बोना है । यदि वह ठीक समय पर न बोया जायगा और ठीक ऋतु में धरती

के गर्भ में पहुंचेगा, तो बसन्त ऋतु उसे बढ़ाने और फलों को पकाने में समर्थ नहीं हो सकती।

मेरिय एजवर्थ का कहना है कि वर्तमान के समान कोई घड़ी नहीं है, कोई शक्ति नहीं है। कोई व्यक्ति तुरन्त के निश्चयों को पूरा नहीं करता तो बाद में उनके पूरे होने की कोई आशा नहीं है। वे छिन्न-भिन्न हो जायेंगे, संसार के कोलाहल में विहीन हो जायेंगे, अथवा आलस्य के कीचड़ में फंस जायेंगे।

काबेट लिखता है कि मेरी विजय मेरी स्वाभाविक योग्यताओं की अपेक्षा सदा तत्पर रहने के कारण अधिक हुई। इसी गुण के कारण सेना में मेरी उन्नति हुई। मुझे दस बजे जाना होता था तो मैं नौ बजे से ही तैयार रहता था। किसी आदमी को कभी मेरे लिए ठहरना नहीं पड़ा।

सर वाल्टर रेले से एक व्यक्ति ने पूछा—“आप इतना अधिक काम इतने कम समय में कैसे कर डालते हैं?”

उत्तर मिला—“मुझे जो कुछ करना होता है उसे मैं उसी समय कर डालता हूँ।”

जो व्यक्ति तत्काल काम करके दिखता है, वह उस काम में भूल कर बैठता है तो भी अच्छा निर्णय करने वाले भविष्य-वक्ता की बनिस्बत फायदे ही में रहेगा और उसे विजय प्राप्त हो ही जायगी।

एक फ्रांसीसी राजनीतिज्ञ से पूछा गया—“आप कैसे इतना काम करते हैं और साथ ही समाज के अन्य कार्यों में भी भाग लेते हैं?”

उत्तर दिया—“मैं आज का काम आज ही कर डालता हूँ।”

बहुत-से लोगों ने आज का काम कल पर छोड़ा और वे संसार में पीछे ही पड़े रहे। केवल पांच मिनट पीछे रहने के कारण वे प्रतिद्वन्द्विता में हरा दिए गए। उनके सम्बन्धियों, उनके मित्रों तथा उनके साथियों ने उन स्थानों पर अधिकार जमा लिया जिन्हें पांच मिनट की देर न

करने से कोई भी प्रतिद्वन्द्वी जीतने की आशा कर सकता है। और जीवन की दौड़ तो और भी कठिन है।

एक विद्यार्थी निश्चय करता है कि मैं आज शाम से कम-से-कम दस बजे रात तक पढ़ा करूंगा। देखने में बात बिल्कुल साधारण है। शाम होती है, चारों ओर अंधेरा फैलता है, दीपक अपनी ज्योति से घर को प्रकाशित करने लगता है। वह भोजन करता है, धीरे-धीरे आलस्य उसपर धावा बोलता है और उसके निश्चय की दीवार हिलने लगती है। नये-नये तर्क उसके सामने आते हैं। वह सोचता है—“अभी तो परीक्षा के कई दिन बाकी हैं। इतनी जल्दी करने की क्या जरूरत। अब कल से शुरू करूंगा।” बस तर्क-वितर्क कर वह अपना काम छोड़ देता है। यही घड़ी उसकी विजय की घड़ी है। इसे ही अवसर कहते हैं। उसके जीवन पर सफलता अथवा असफलता की छाप लगाने के लिए यही पांच मिनट का समय मिलता है। वह विद्यार्थी फिर कभी इस गए हुए मौके को न पा सकेगा। विद्यार्थी ही क्यों, प्रत्येक व्यक्ति, जो कुछ-न-कुछ करना चाहता है, उसके निश्चय के विरुद्ध आलस्य अपनी सारी सेना लेकर खड़ा हो जाता है। इसके भयंकर दल को जीत कर जो अपना झंडा जीवन के मैदान में गाड़ सकता है, वह गली का भिखारी होने पर भी सन्नाहों से कहीं अच्छा है।

‘कल’ शैतान का दूत है। इतिहास के पृष्ठों में इस कल की धार पर कितने प्रतिभावानों का गला कट गया? कितनों की योजनाएं अधूरी रह गईं? कितनों के निश्चय बस यों ही रह गए। कितने पछुताते, हाथ मलते रह गए? कल असमर्थता और आलस्य का द्योतक है।

उस आलस्य का कब मनुष्य के शरीर पर आक्रमण होता है, इसका पता लगाना कठिन है; क्योंकि आदत पड़ जाने और प्रेम की वस्तु हो जाने से उसके आने के समय ऐसा वायुमण्डल तैयार हो जाता है कि शीघ्र ही ज्ञान-शून्यता का आभाव होने लगता है। कुछ आदमियों को

वह दोपहर भोजन के बाद आ घेरता है, कुछके मिर पर व्यान् के बाद आ सवार होता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में दिन में एक बार बड़ा ही कठिन समय आता है। यदि हमें समय का कुछ भी प्रेम है तो उसे जाने न देना चाहिए। प्रातःकाल की घड़ियां ही जीवन-विजय की मृचक हुआ करती हैं।

एक व्यक्ति मेन के साहस और कौशल की प्रशंसा हेनरी के सामने कर रहा था। थोड़ी देर में हेनरी ने शान्त-भाव से कहा—“तुम्हारा कहना ठीक है। वह अच्छा सेनानायक है, परन्तु मैं सदा ही उससे पांच घंटे आगे रहता हूँ।” अर्थात् हेनरी चार बजे उठता था और मेन करीब दस बजे। यही उन दोनों का अन्तर था। इसी अन्तर में सारी प्रतिष्ठा और सम्मान छिपा हुआ था। अनिश्चितता एक बीमारी हो जाती है और भविष्यवक्ता बनने की आदत उसकी अगुआ रहती है। अनिश्चय के शिकार जनों के लिए एक ही दसा है और वह है तत्काल निर्णय करना। अन्यथा यह बीमारी सफलता की जानी-दुश्मन रहती है। जो जरा-सा ‘हां’ और ‘ना’ के बीच में पड़ जाता है, वह डूब जाता है।

प्रातःकाल जल्दी उठने की आदत की तो सभी लेखकों और उपदेशकों ने बड़ी प्रशंसा की है। वास्तव में संसार के महान् व्यक्ति प्रातःकाल ही उठा करते थे। रूस का महान् बादशाह ‘पीटर दि ग्रेट’ अंधेरे में उठा करता था। वह कहा करता था कि मैं अपने जीवन को जहां तक हो सके बढ़ाना चाहता हूँ, इसलिए कम सोता हूँ। ‘अलफ्रेड दी ग्रेट’ भी सुबेरे उठता था। प्रातःकाल के घंटों में ही कोलम्बस ने अमेरिका-यात्रा की योजना तैयार की थी। नेपोलियन की बड़ी-बड़ी विजयों की तैयारी प्रातःकाल ही हुई थी। कोपरनिकस तथा ज्योतिष-विज्ञान के अधिकांश पंडित उषा के पहले उठने वाले थे। अमेरिका का धुरन्धर विद्वान् वेबस्टर कलेवा करने के पहले बीस से तीस तक पन्नों का उत्तर लिख डालता था।

इंग्लैण्ड के महान् उपन्यासकार सर वाल्टर स्काट बड़े ही नियमानुकूल कार्य करनेवाले व्यक्ति थे। यही उनके विशाल कार्यों की कुंजी थी। वे पांच बजे उठते थे। कलेवा करने के पहले ही उनके उस दिन के कार्य का अधिकांश समाप्त हो जाता था। एक युवक को सलाह देते समय उन्होंने लिखा था—“समय पर ठीक तौर से काम न करने की आदत का खयाल रखो। जो कुछ करना हो शीघ्र ही कर डालो और काम कर लेने के बाद आराम करो, पहले आराम करने की कोशिश मत करो।”

हेमिल्टन लिखता है—“एक विचित्र दुर्भाग्य हमारे कुछ मित्रों पर आ पड़ा है। जब ईश्वर ने उन्हें जीवन दिया तभी उन्हें काम भी सौंपा और उपयुक्त समय भी दिया। उसने यह सब इस हिसाब से किया कि यदि वे उस काम को उचित समय पर शुरू करते, उसमें अपनी योग्य-शक्तियों को लगा देते, तो उनका समय और काम दोनों ही एक साथ समाप्त हो जाते। परन्तु कुछ वर्ष पूर्व एक आपत्ति आ पड़ी। दिए हुए समय का कुछ हिस्सा उन्होंने खो दिया। वे स्वयं नहीं बतला सकते कि उस समय का क्या हुआ। पर इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि वह कहीं रह गया। समय और काम दो समानान्तर लकीरों के समान हैं। पर उक्त घटना के कारण एक लकीर दूसरी की अपेक्षा कुछ इंच छोटी हो गई। अब काम समय की रेखा से दस मिनट आगे रहने लगा। अब वे समानान्तर नहीं रहे। उनके पत्र उस समय लेटरबक्स में डाले जाते जब ढाक चली जाती। वे बन्दरगाह पर पहुँचते हैं तो देखते हैं कि जहाज अभी ही छूटा है, स्टेशन पर पहुँचते हैं तो उन्हें फाटक बन्द होता दिखाई देता है। वे किसी भी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ते और न किसी कर्त्तव्य से ही मुंह मोड़ते हैं, पर वे नियमित रूप से देर में ही पहुँचते हैं और हमेशा उसी भयंकर प्राण लेने वाली घड़ी की ही उन्हें देर हो जाती है।” इन वचनों में बड़ा ही गूढ़ अर्थ छिपा हुआ है। एक-एक वाक्य मानव-जीवन के लिए विजय-कुञ्जी है।

विवाह के सम्बन्ध के समान ही प्रतिज्ञा की पवित्रता की रक्षा करना भी मनुष्य का कर्त्तव्य है। जो आदमी अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ देता है और उसे तोड़ने के लिए जबरदस्त कारण नहीं दे सकता वह झूठा है और संसार भी उसे इसी दृष्टि से देखता है।

होरेस ग्रीले का कहना है कि यदि किसी व्यक्ति को दूसरों के समय की परवाह नहीं है तो उसे उनके पैसे की क्यों परवाह होगी? एक व्यक्ति के एक घण्टे को छीन लेने और उसके पांच डालर छीन लेने में क्या अन्तर है? संसार में ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जिनके एक घण्टे का मूल्य इससे भी अधिक होता है।

राष्ट्रपति वाशिंगटन चार बजे भोजन करते थे। उन्होंने कांग्रेस के नए सदस्यों को एक भोजन में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया। वे कुछ देर से पहुँचे तो उन्होंने राष्ट्रपति को भोजन करते देखा। उन्हें बड़ा चोभ हुआ। यह देख वाशिंगटन ने कहा—“मेरा रसोइया मुझसे कभी नहीं पूछा करता कि मेहमान आये या नहीं, वह केवल यही पूछता है कि भोजन का समय हुआ या नहीं?”

एक बार उनके सेक्रेटरी ने देर होने की क्षमा मांगी और बताया कि देर मेरी घड़ी की सुस्ती के कारण हुई। इसपर वाशिंगटन ने कहा—“जनाब! या तो आप दूसरी घड़ी खरीजिए या मुझे दूसरा सेक्रेटरी बुलाना पड़ेगा।”

जो व्यक्ति काम न करके माफी मांगने के लिए आगे बढ़ता है वह किसी काम का नहीं। वह गड्ढे में गिर कर पैर को टूटने से बचाने की कोशिश करता है। नेपोलियन ने अपने सेनानायक को भोजन करने के लिए बुलाया। नियत समय पर पहुँचने में उन्हें कुछ देर हो गई। नेपोलियन भोजन करने लगा। वह खाना समाप्त करके उठ ही रहा था कि वे आ गये। उन्हें देखकर नेपोलियन ने कहा—“भोजन का समय तो बीत चुका, आइये, अब अपना काम शुरू करें।”

राष्ट्रपति जान किचनसी एडम्स वक्त के बड़े पाबन्द थे। एक सभा में कुछ मेम्बरो ने समय हो जाने पर कार्य आरम्भ करने पर जोर दिया, तब एक सदस्य ने कहा—‘‘नहीं, अभी मि० एडम्स नहीं आये हैं।’’ थोड़ी देर में एडम्स आ गए। पता लगाने पर मालूम हुआ कि वहाँ की घड़ी तीन मिनट तेज थी। एडम्स ठीक समय पर ही उपस्थित हुए थे।

नियमपूर्वक तथा समय पर कार्य करने से दिल को बड़ा हतमीनान रहता है; किसी प्रकार की व्यग्रता नहीं रहती। किसी विशेष समय का काम उसी समय करने से वह अच्छी तरह हाँ जाता है। दूसरे समय करने से दो समय के कामों का भार आ पड़ता है, इसलिए अड़चनें भी दूनी हो जाती हैं और इस गड़बड़ में अपने आस-पास के काम बिगड़ जाते हैं। काम-काजी और व्यापारी आदमी तो नियमितता पर ध्यान न देने से थोड़े ही दिनों में मिट्टी में मिल जाता है। जरा-सी देर होने से दिवाला निकल जाता है; लाखों रुपयों का नुकसान हो जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति को समय पर काम करने की आदत डालनी चाहिए। एक ठीक समय बतलाने वाली घड़ी जरूर रखनी चाहिए। जो घड़ी करीब-करीब ठीक रहती है, वह बुरे रास्ते पर ले जाने वाली है।

फुरती से काम करने से विश्वास पैदा होता है। यह इस बात की गारंटी है कि हमारे सारे काम ठीक तरह से चल रहे हैं और व्यवस्थित हैं। इससे हमारी काम करने की शक्ति का लोगों को विश्वास होता है। जो आदमी नियमित है वह सदा अपने वचन का पालन करेगा और उसपर भरोसा किया जायगा।

रेल के एक ड्राइवर की घड़ी जरा सुस्त हो जाती है और दो गाड़ियाँ लड़ जाती हैं। बहुत-से अमूल्य जीवन नष्ट हो जाते हैं और हजारों का नुकसान हो जाता है। एक एजेण्ट रुपये भेजने में देर करता है और एक व्यापारी का दिवाला निकल जाता है। एक दूत पत्र समय पर पहुँचाने में देर कर देता है और एक निरपराध व्यक्ति फाँसी पर चढ़ा

दिया जाता है। एक आदमी कोई गप्प अथवा कहानी सुनने लगता है, दो-चार मिनट की देर हो जाती है, तब दौड़ता है। स्टेशन पर पहुंचकर देखता है तो गाड़ी भक-भक करती जाती हुई नजर आती है।

कुछ मिनटों की देर ने कितनी आशा-जताएं नहीं सुखा दीं ? कुछ मिनटों की देर ने कितने हंसतों को नहीं रुला दिया ? कुछ मिनटों की देर ने कितनों के जीवन को दुःखमय नहीं बना दिया ? कुछ मिनटों की देर ने कितने राष्ट्रों को गुलामी में नहीं डाल दिया ? फिर भी क्या कुछ मिनटों के मूल्य को तुम नहीं समझे ?

—आठ—

शिष्टाचार

“शिष्टाचार के द्वारा कोई भी मनुष्य संसार में अपनी उन्नति कर सकता है”

“तुम्हें क्या चाहिए ? तुम्हें जो-कुछ चाहिए उसे अपनी मुस्कराहट से प्राप्त करो, न कि तलवार के जोर से।” —शेक्सपियर

“जीवन का तीन-चौथाई आधार अच्छा चाल-चलन है।”

—मैथ्यू आर्नल्ड

“क्या तुम मेरे समान शक्ति नहीं चाहती ?” कहकर ‘आंधी’ अपनी छोटी बहन ‘मन्दवायु’ की ओर देखने लगी। कुछ उत्तर न पा वह फिर कहने लगी—‘देखो, जिस समय मैं उठती हूँ उस समय दूर-दूर तक लोग तूफान के चिह्नों से मेरे आने का संवाद चारों ओर फैला देते हैं। बड़े-बड़े जहाजों के मस्तूलों को मैं तिनके के समान तोड़कर फेंक देती हूँ। समुद्र के जल के साथ ऐसी किलोल करती हूँ कि पानी की लहरों को पर्वत के समान ऊपर उछाल देती हूँ। सारे समुद्र-तट को जहाजों के टुकड़ों से भर देती हूँ। मुझे देखकर मनुष्य अपने घरों में घुस जाते हैं, पशु-पक्षी अपनी जान लेकर भागते फिरते हैं, कमजोर मकानों के छप्पर भी उठाकर फेंक देती हूँ, मजबूत मकानों को पकड़कर हिल्ला देती हूँ। मेरी सांस से राष्ट्र-के-राष्ट्र धूल में मिला जाते हैं। क्या तुम नहीं चाहती कि तुममें भी मेरे समान शक्ति आ जाय ?”

यह सुनकर वसन्त की मन्दवायु ने कुछ उत्तर न दिया, परन्तु वह अपनी यात्रा को चल पड़ी। उसको आते देख नदियाँ, ताल, जंगल, खेत सभी मुस्कुराने लगे, बगीचों में तरह-तरह के फूल खिल उठे, रंग-बिरंगे

फूलों के गलीचे बिछ गये, सुगन्ध से चारों ओर का वातावरण भर गया। भौरे अपना सुरीला राग छेड़ने लगे। पक्षीगण कुंजों में आकर विहार करने लगे। चारों ओर चैन और आनन्द की वंशी बजने लगी। सभी का जीवन सुखदायी हो गया। इस तरह अपने कार्यों द्वारा वासनतिक वायु ने अपनी शक्ति का परिचय आंधी को करा दिया।

नम्रता बड़ा उत्तम गुण है। जो काम स्त्री का सौन्दर्य करके दिखा सकता है वही नम्रता करके दिखाती है। उसका प्रस्ताव तत्काल ही दूसरों पर पड़ता है।

जो व्यक्ति हँसमुख है, प्रसन्नचित्त है और दूसरों के साथ शिष्टाचार से व्यवहार करना जानता है, वह संसार में कहीं भी जा सकता है। जिस मौपड़े में वह ठहरेगा वहीं आनन्द की लहरें उठने लगेंगी। जिस समाज में वह प्रवेश करेगा उसीका रत्न हो जायगा। जिस देश में वह अपने कदम रखेगा वही अपने को भाग्यवान् समझने लगेगा। इस दुख-दर्द से भरे संसार में जो दूसरे को क्षण-भर के लिए भी स्वर्गीय आनन्द का स्वाद चखा सकेगा उसका आदर और स्वागत कौन न करना चाहेगा ?

कहा जाता है कि जब प्रसिद्ध उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स कमरे में आता था तो ऐसा मालूम होता था कि कहीं अचानक आग जल उठी है। इसी तरह जब जर्मनी का महाकवि गेटे किसी होटल में जाता था तो सब लोग खाना छोड़कर हर्ष से उसकी ओर देखने लगते थे।

जूलियन राल्फ काम करने के बाद जगभग दो बजे रात को लौटा और किवाड़ भड़भड़ाने लगा। थोड़ी देर में देखता है कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने आकर किवाड़ खोले और पूछा—“कहो, कुशल तो है ?” जूलियन ने क्षमा मांगी। इसपर राष्ट्रपति ने कहा—“यदि मैं न आता तो तुम्हें रात-भर बाहर ही पड़े रहना पड़ता। मेरे सिवा मकान में कोई नहीं है। नौकर है। उसे मैं भेज सकता था, पर वह सो रहा था। उसको जगाना मैंने ठीक न समझा।”

नेपोलियन का जोजे फाइन से ब्याह हो गया तो यह बड़े सौभाग्य की बात सिद्ध हुई। इस स्त्री का हृदय बड़ा विशाल था और उसमें अद्भुत शक्तियाँ थीं। नेपोलियन के एक दर्जन स्वामि-भक्त नाँकर जाँ काम नहीं कर सकें थे वह काम जोजे फाइन अपनी मुस्कराहट से कर देती थी। नेपोलियन जिस प्रकार युद्ध-क्षेत्र में वीरता दिखाता था, जोजे फाइन उसी प्रकार समाज में वीरता दिखाती थी।

शिष्टाचार शारीरिक सुन्दरता की कमी को पूरा कर देता है। वही व्यक्ति सर्वाधिक सुन्दर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों पर विजय प्राप्त कर लेता है। बिना शिष्टाचार के सौन्दर्य का कोई मूल्य नहीं। उसके बिना जीवन का सुखी होना दुर्लभ है। यदि सौन्दर्य में शिष्टाचार, प्रेम, दया, सन्तोष और सहृदयता नहीं है तो ऐसे सौन्दर्य को दूर ही से नमस्कार। वह केवल देखने की चीज है, मनुष्य के व्यवहार की नहीं।

मिराबो बड़ा ही कुरूप पुरुष था, पर उसका शिष्टाचार सर्व-श्रेष्ठ था। लोगों को उससे बातचीत करते समय उसकी कुरूपता का आभास ही न हो पाता था।

चरित्र और जीवन में एक प्रकार का सौन्दर्य रहता है। हम दूसरों की भलाई करते हैं, पर उसके करने का ढंग मालूम न होने के कारण उसका स्वर्गीय सुख प्राप्त नहीं कर सकते।

एक कुत्ते के सामने हड्डी का टुकड़ा फेंक दीजिए, वह उसे उठाकर चला जायेगा, आपकी ओर एक दृष्टि भी न डालेगा। इसके विपरीत अगर आप कुत्ते को अपने पास बुलायें, उसके सिर पर हाथ फेरें और तब उसे रोटी का टुकड़ा दें, तो वह बड़े प्रेम से पूँछ हिलायेगा और आपके कार्य के लिए कृतज्ञता प्रकट करेगा। एक पशु भी मनुष्य के शिष्टाचार तथा व्यवहार को समझता है। यदि आप अपने भले कृत्यों को यों ही फेंक देंगे तो उनसे लाभ उठाने वालों के चेहरों पर धन्यवादसूचक मुस्कराहट भी न झलकेगी, न उनके हृदय हर्ष से प्रफुल्लित ही होंगे।

सुशीलता स्वयं ही एक सम्पदा है। सदाचार और शिष्टाचार वाले बिना धन के ही संसार-यात्रा करते हैं। उनके लिए सब दरवाजे खुले रहते हैं। वे बिना खरीदे ही सब वस्तुओं का आनन्द लूटते हैं। सूर्य के उजाले के समान प्रत्येक घर उनके स्वागत के लिए तैयार रहता है। रहे भी क्यों न ? आखिर वह सब जगह प्रकाश, आनन्द और उजाला लेकर ही तो जाते हैं। वे सब की भलाई चाहते हैं और इस प्रकार ईर्ष्या और द्वेष का समूल नाश कर देते हैं। क्या आप नहीं जानते कि शहद सं पुते हुए मनुष्य को मधुमक्खियां नहीं काटती ?

सभ्य पुरुष कभी अपने हृदय में ऐसे दुर्गुणों को स्थान नहीं देते जिनसे दूसरों के विकास और सुख में बाधा पहुंचे। वे ईर्ष्या, द्वेष, बदला लेने की प्रवृत्ति आदि दोषों को दूर ही से नमस्कार करते हैं। शिष्टाचार को समझने वाले व्यक्ति में हृदय की उदारता और दूसरों के हित-चिन्तन आदि की घड़ी ही आवश्यकता रहती है।

परन्तु कुछ आदमी बड़े ही विचित्र होते हैं। वे अपने कुटुम्बियों और नौकरों की बात-घात पर झिड़का करते हैं। घर-गृहस्थी की छोटी-छोटी बातों में पत्नी को डांट दिया करते हैं। वे बड़े चिड़चिड़े होते हैं। पर अचानक कोई मिलने आता है तो सीधे-सादे बनकर मिलने की आगे बढ़ते हैं। खण-भर पहले का गुस्सा न जाने कहाँ चला जाता है। बड़ी नम्रता से पेश आते हैं, बड़ी उदारता दिखलाते हैं, परन्तु उस आगन्तुक के विदा हो जाने पर फिर वही पहले की-सी उदासीनता, रुष्टता और दुर्व्यवहार आ जाता है।

एक भोज में एक दिन गोल्डस्मिथ जानसन के पास ही बैठे थे। गोल्डस्मिथ ने जानसन से अमेरिकन इण्डियनों के बारे में कुछ पूछा। इसपर जानसन ने उत्तर दिया—“सारे उत्तरी अमेरिका में कोई भी ऐसा महामूर्ख नहीं है जो ऐसा प्रश्न पूछे।”

गोल्डस्मिथ को बहुत बुरा लगा। फिर भी उस विद्वान् ने नम्रता से

कहा—“जनाब, एक भले आदमी से इस तरह बात-चीत करने वाला दूसरा कोई गंवार भी अमेरिका में नहीं है ।”

अरस्तू ने २२-२३ सौ बरस पहले भद्रपुरुष की परिभाषा लिखी थी । वह लिख गया है—“वह गहरे मन का आदमी अच्छे और बुरे दिनों में सदा सादगी से बर्ताव करता है । वह न तो अपनी बहुत बड़ाई ही कराना चाहता है और न नीच ही कहलाना चाहता है । उसे न तो सफलता से आनन्द होता है, न विफलता उसे दुखी करती है । वह न भयानक बातों को चुनता है और न उनकी खोज में रहता है । वह कभी अपने अथवा दूसरों के विषय में बात नहीं करता । न उसे इस बात की परवाह रहती है कि दूसरे उसकी प्रशंसा करें और न वह चाहता है कि दूसरों को दोषी ठहराया जाय ।”

एक सभ्य व्यक्ति सदा सभ्य ही रहता है । उसकी इस बात में कभी कमी नहीं आती । वह तो चमकता हुआ हीरा है । उसका भीतर-बाहर सब एक-सा ही रहता है । वह सदा नम्र, दयालु और शिष्ट रहता है । दूसरों की बुरी बातें उसे बुरी नहीं लगती । वह कभी दूसरे के दिल की चोट पहुंचानेवाली बात नहीं कहता । अनिष्ट का अनुमान करने में वह धीर होता है, क्योंकि वह उसका विचार भी नहीं करता । अपनी इच्छाओं को वह अंकुश में रखता है और संस्कृत बनाता है; अपनी भावनाओं को दबाता है, अपनी वाणी अपने काबू में रखता है, और दूसरे आदमियों को अपने जैसा ही भद्र और भला समझता है ।

जब चौदहवां क्लेमेण्ट पोप हुआ तो बहुत-से प्रतिनिधियों ने उसका अभिवादन किया । उत्तर में उसने भी अभिवादन किया । इसपर कार्य-संचालक ने कहा—“आपको उनके अभिवादन का उत्तर नहीं देना चाहिए था ।”

पोप ने कहा—“समा कीजिए, मुझे अभी पोप हुए इतना समय नहीं हुआ कि मैं अपना शिष्टाचार भी भूल जाऊँ ।”

कोई व्यक्ति शिष्टाचार से होने वाले भारी लाभ का अनुमान नहीं कर सकता। शिष्टाचार ही हमें प्रसन्न अथवा रुष्ट करता है, वहीं हमें ऊपर उठाता या नीचे गिराता है, हमें जंगली या सभ्य बनाता है। वायु-मण्डल की हवा के समान ही उसका हमारे तथा हमारे पड़ोसियों पर प्रभाव पड़ता है। शक्ति जिस काम को कराने में असमर्थ होती जान पड़ती है, शिष्टाचार उसे हंसते-हंसते करा लेता है। समाज की सुन्दर शृङ्खला को व्यवस्थित रखने के लिए शिष्टाचार का मुस्कराता हुआ शासक चाहिए। वह सारा कलह दूर कर देता है और सब एक-दूसरे को अपना समझने लगते हैं।

मगून का कथन है कि—“शिष्टाचार के जैसे कोई दूसरी नीति नहीं है, क्योंकि जहाँ बढ़िया-बढ़िया बातों से कोई मदद नहीं मिलती वहाँ सुन्दर शिष्टाचार की विजय हो जाती है।” लोगों को खुश करने का कला ही दुनिया में आगे बढ़ने की कुंजी है।

नेपोलियन एक दिन सेण्ट हेलेना में अपने साथी के साथ कहीं जा रहा था। सामने से एक मजदूर बोझा लिए आ रहा था। नेपोलियन का साथी रास्ता नहीं छोड़ना चाहता था। यह देखकर उस भूतपूर्व सम्राट् ने कहा—“बोझ का सम्मान कीजिए। रास्ते से एक ओर हट जाइए।”

नम्रता और शिष्टाचार से कभी-कभी अज्ञातरूप से जो प्रभाव पड़ता है उससे आर्थिक लाभ भी हुआ करता है। एक व्यापारी था। वह अपनी दुकान बन्द करके घर जा रहा था। इतने में एक लड़की धागा लेने आई। वह लौटा और दुकान खोलकर उसे धागा दे दिया। इस छोटी-सी घटना ने गांव-भर में उसका नाम मशहूर कर दिया और उसकी खूब बिक्री होने लगी। कुछ दिनों में वह धनवान हो गया।

एक गरीब पादरी ने देखा कि कुछ लड़के दो वृद्धा स्त्रियों के पुराने ढंग के पहनावे को देखकर उनकी हंसी उड़ा रहे हैं। स्त्रियों ने इस ढर से कि गिरजाघर में भी यही हालत होगी, भीतर जाना ठीक न समझा।

यह देख वह पादरी आगे बढ़ा और बड़ी नम्रता से उन्हें अपने साथ अन्दर ले गया तथा अच्छे स्थान पर बिठला दिया। यद्यपि उन देवियों में उसका कोई सम्बन्ध नहीं था पर उसके बर्ताव में वे बहुत खुश हुईं और उसकी अनेक प्रकार से सहायता की।

दो व्यापारी व्यापार करते हैं। दोनों ही कष्ट सहन करके मेहनत में काम करते हैं। एक बड़ी नम्रता और भलमनसाहत से ग्राहकों के साथ पेश आता है, दूसरा जरा-जरा-सी बात पर बिगड़ जाता है। परिणाम यह होता है कि नम्रता में व्यवहार करने वाला व्यापार में उन्नति कर लेता है और दूसरा हाथ मलता रह जाता है।

अभद्र व्यवहार से ईमानदारी, उद्योग और दूसरे बड़े-से-बड़े गुण भी व्यर्थ हो जाते हैं। इसके विपरीत शिष्टाचार से दूसरे दोष होते हुए भी मनुष्य का आदर होता और उसको काम मिलता है।

एक गरीब लड़की ने थोड़ा-सा सामान खरीदा। दुकान के मालिक ने कहा—“बेटी, धन्यवाद। कभी-कभी आती-जाती रहना।” इस जरा-सी बात ने भिखारन लड़की पर बड़ा प्रभाव डाला और वह सबसे कहती फिरती थी कि अमुक दुकानदार बड़ा भला है। थोड़े दिनों में उस दुकानदार की खूब बिक्री होने लगी।

बहुत-से आदमी अगर लड़ने में बहादुर होते हैं या खतरे का सामना बहादुरी से करते हैं, तो उनमें यह कमजोरी होती है कि वे सभा-समाज में डरपोक या भेंपू बने रहते हैं। वहां उनकी जवान नहीं खुलती। वे सभा-चतुर नहीं होते। अपना मत वे प्रकट नहीं कर सकते। उनमें योग्यता होती है पर अपनी योग्यता का ज्ञान उन्हें नहीं होता, न उस-पर उन्हें भरोसा ही होता है। यह शिष्टाचार की कमी के कारण होता है। इसे दूर करने का उपाय यह है कि बालक को बचपन से ही सामाजिक जीवन की सब बातों की—बोलने-चालने, उठने-बैठने, लोगों से मिलने-जुलने आने आदि की शिक्षा दी जाय। इससे उनकी भेंप मिट जायगी। ऐसे लोगों को अपने कपड़े-

वृत्त का भी जरा खयाल रखना चाहिए। वे बहुत तड़क-भड़क वाले न होकर साफ-सुथरे, सादे और ढंग के हों। कपड़ों का भी लोगों पर असर पड़ता है। हमारे चरित्र के समान हमारे आचार-व्यवहार को भी हमेशा जांच-पड़ताल होती रहती है। अगर हम किसी जन-समुदाय में जाते हैं तो सैकड़ों-हजारों आंखों की तराजुओं पर हमारा आचार-व्यवहार चढ़ जाता है। वे आंखें तोलती हैं कि यह अपने व्यवहार में कितना घटा या कितना बढ़ा है। वे तुलना करके देखती हैं कि सर्वांश में यह आदमी कितना खरा है। इसलिए हमारे आचार-व्यवहार आदि के बारे में हमारे साथियों के क्या विचार हैं और वे हमारी क्या कीमत आंकते हैं, इसकी भी जानकारी हमें रखनी चाहिए। यह बात याद रखनी चाहिए कि कोई बहुत समय तक लोगों को धोखे में नहीं डाल सकता है। क्योंकि न्याय का तराजू तो चौबीसों घण्टे उसके अन्तःकरण में भी मौजूद रहता है। वह अन्तर्यामी हमारी चैष्टाओं को, हमारे व्यवहारों को देखता रहता है। इसलिए अन्तःकरण की सचाई शिष्टाचार का ऊंचे-से-ऊंचा गुण है।

—नौ—

उत्साह

“जिस परिश्रम से हमें आनन्द प्राप्त होता है वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत-तुल्य है; हमारी वेदना की निवृत्ति है।”

—शेक्सपियर

“मनुष्य की सचाई का एक-मात्र निर्णयात्मक प्रमाण यह है कि अपने सिद्धान्त के लिए वह अपना सब-कुछ स्वाहा कर देने को तैयार रहे।”

—लावेल

उत्साह कार्य का प्राण है। उत्साह-हीनता से कोई काम नहीं किया जा सकता। उत्साह न रहने से समस्त मानसिक शक्तियाँ कार्य में योग नहीं देती। मन कहीं काम करता है तो हाथ कहीं जाते हैं। कुछ देर तक इस तरह शरीर के विभिन्न अंगों में आपस में ही युद्ध होता रहता है और घण्टे-भर का काम कई घण्टों में होता है, सो भी खुरी तरह से। उत्साह वह आग है जो हमारे कार्यों का इंजन चलााने के लिए भाप तैयार करती है।

हेनरी का कहना है—“जब मैं किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर बातचीत करता हूँ तो मुझे बाहरी दुनिया की बिलकुल याद नहीं रहती। अपने सामने के विषय में इतना डूब जाता हूँ कि समय और स्थान का मुझे ध्यान ही नहीं रहता।”

प्रत्येक बालक के हृदय में कोई-न-कोई अच्छा काम कर दिखाने का शक्ति होती है—चाहे वह होशियार हो या मूर्ख हो। जो होशियार हैं उनके विषय में तो कुछ कहना ही नहीं, पर जो सुस्त और अलस दिखते हैं उनके मन में भी अच्छे काम करने की इच्छा-शक्ति जाग्रत कर

दो जाए तो धीरे-धीरे संसार से आलस्य बिदा हो जायेगा और एक सद्दर्शक का प्रकाश उनके हृदय को भर देगा ।

उत्साह से भरे हुए नेपोलियन ने दो सप्ताह में वह काम कर दिखाया था जिसे करने में दूसरों को एक वर्ष से कम न लगता । आश्चर्य में पड़े हुए आस्ट्रियन कहा करते थे—“ये फ्रांसीसी मनुष्य नहीं हैं । ये तो जैसे मशीन की तरह काम करते हैं ।”

नेपोलियन ने इटली के अपने पहले हमले में छः विजयें प्राप्त कर लीं, उन्तीस भण्डे छीने, पचपन तोपों को हस्तगत किया; पन्द्रह हजार कैदी पकड़े, और पेडमांट पर अधिकार जमा लिया ।

इस अचानक आक्रमण को देखकर एक आस्ट्रियन जनरल ने कहा था—“यह नवयुवक सेना-नायक युद्ध-कला के विषय में कुछ नहीं जानता । यह निरा मूर्ख है । इसमें कोई सम्बन्ध न रखना चाहिए ।” परन्तु उस छोटे-से सेना-नायक का उसकी सेना इतने उन्माह से साथ देती थी कि उसे कभी असफलता न मिलती थी ।

वाइट कहता है—“कई बड़ी-बड़ी बातें ऐसी होती हैं जिनमें आधे मन और पूरे मन से काम करने में उतना ही अन्तर रहता है जितना अन्तर पूर्ण पराजय और शानदार विजय में रहा करता है ।”

सीधी अबोध आरलेआ की कन्या जोन की पवित्र तलवार, उसके पूज्य भण्डे तथा एक बड़े कार्य करने के विश्वास से फ्रांसीसियों की सेना में उत्साह भर गया था । किसी राजनीतिज्ञ और राजा में भी इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि लोगों में इतना उत्साह भर देता । उत्साह ने उसे प्रतिभा के शिखर पर चढ़ा दिया । यदि प्रत्येक व्यक्ति समझ ले कि उसमें कितनी शक्ति है तो वह गजब के काम करके दिखला सकता है । परन्तु अद्विजल घोड़े के समान मनुष्य अपनी शक्ति को नहीं पहचानता ।

वेस्टमिंस्टर के गिरजे में एक कब्र के ऊपर लिखा हुआ है—“इसके

नीचें इस गिरजे और नगर को बनाने वाला क्रिस्टोफर रेन सो रहा है । वह नब्बे वर्ष तक जनता की भलाई के लिए जीवित रहा । यदि तुम उसका स्मारक चाहते हो तो चारों तरफ देखो ।” जहां कहीं आप लन्दन में देखेंगे वहीं आपको रेन की कला का नमूना मिलेगा । उसने किसीसे शिक्षा नहीं पाई थी । पचपन गिरजाघर और छत्तीस बड़े-बड़े हाल उसने तैयार किए । उसका कौशल हैम्पटन केंसिंग्टन के महलों में, टेम्पलवार डेरेलेन, नाटकर, रायल एक्सचेंज में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । उसने पैंतीस वर्ष तक परिश्रम करके सेण्ट पाल के गिरजे को तैयार किया । यह उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है । उस्साह ही उसके शरीर को बल दिया करता था । वही उसका चिर साथी था ।

लापरवाही कभी विजय प्राप्त करने वाली सेनाओं का संचालन नहीं करती, कभी ऐसी मूर्तियों का निर्माण नहीं करती जिनमें से जीवन स्फुरित होता हुआ दिखाई देता हो, कभी प्रकृति की शक्तियों पर अधिकार नहीं जमा सकती, और न संसार को सार्वभौम उदारता के कृत्यों से प्रभावित कर सकता है । उस्साह ने सुई की दिशा-सूचक यंत्र की धुरी पर रखा; उसीने पहले-पहल छांपखाने की मशीन को चलाया; उसीने गेलीलियो की दूरबीन की नलियां बनाईं जिन्होंने एक के बाद एक नई दुनिया के दर्शन कराए; उसीने उन पालों को ताना जिन्होंने तूफानों का सामना करके कोलम्बस को बहामा पहुँचा दिया; उसीने हाथों में तलवार लेकर स्वतंत्रता का युद्ध किया और खून की नदियां बहाईं; उसीने कुल्हाड़ी लेकर विकराल जंगलों को धराशायी कर सभ्यता का विस्तार किया; और उसीने उन विचित्र रहस्यवादी पक्षों को पलटा जिनपर शेक्सपियर और मिल्टन ने हृदय में चिनगारियां उत्पन्न कर देने वाले विचारों को लिपिबद्ध किया । उस्साह ने ही विक्टर ह्यूगो को अपने कपड़े-लत्तों की भी परवाह न करनेके लिए मजबूर किया था जिसमें वह अपने 'नोत्र दाम' नामक उपन्यास को पूरा कर सके । उस्साह से भरा हुआ व्यक्ति झूठी बात को इस तरह

कहता है कि लोगों पर विश्वास होने लगता है; पर सच्ची बात को रोनी सूरत लिये प्रकट करने वाला अपने श्रम को व्यर्थ जाता हुआ देखता है। जो वक्ता अपनी बातों को पूरे जोश और उत्साह के साथ जनता के सामने रखता है वही विजयी है। उसके वचनों को सुनकर रोम-रोम खड़े हो जाते हैं; उसके हृदय से निकलती हुई आवाज से सुनने वालों का दिल हिल उठता है।

माइकेल एंजिलो ने बारह वर्ष तक चीर-फाड़ विद्या (सर्जरी) का अध्ययन किया था। इससे उसका स्वास्थ्य खराब हो गया। परन्तु इस कार्य ने शैली, उसके अभ्यास और उसकी प्रतिभा को निश्चित कर दिया। वह पहले अपने चित्रों के खाके बनाता, फिर उनपर मांस, पुट्टे और चमड़ा चढ़ाता था। अपने काम में आने वाले सब औजारों को उसने खुद ही बना लिया था। चित्र बनाने के सब रंगों को वह अपने ही हाथों तैयार करता था, किन्नी विद्यार्थी अथवा नौकर को हाथ न लगाने देता था।

फ्रांसिस पार्कमैन ने जिस उत्साह और उद्योग से अपने को कार्य में लगा दिया वह प्रशंसनीय है और संसार में मुश्किल से दिखाई देता है। जब वह हारवर्ट में विद्यार्थी था तब उसने उत्तरी अमेरिका के फ्रांसीसियों और अंग्रेजों का इतिहास लिखने का निश्चय किया। उसने अपना तन, मन, धन सब कुछ इसी एक काम में लगा दिया। इतिहास की सामग्री एकत्र करते-करते अपना स्वास्थ्य नष्ट कर दिया। उसकी आंखें खराब हो गईं। वह एक बार में अपनी आंखों से पांच मिनट से अधिक समय तक काम नहीं ले सकता था। फिर भी उसने अपने युवावस्था के संकल्प को न छोड़ा और इतिहास का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखकर संसार को दे गया।

जिकन ६ मील चलकर एक व्याकरण की पुस्तक मांगकर लाया और फिर रात को घर जाकर एक मोमबत्ती के बाद दूसरी जलाते हुए उस अमूल्य पुस्तक का अध्ययन करता रहा।

जवानो में क्या है ? उम्र में कौन-सी ज्योति, कौन-सी महत्ता है ? युवक उत्साह की तरङ्ग में मस्त रहते हैं । उन्हें अपने सामने अन्धकार नहीं दीखता—अपने सामने बाधाएं नहीं दीखतीं—अपने सामने असफलता नहीं दीखती । वे समझते हैं कि जाति का उद्धार करने के लिए संसार को अच्छे रास्ते पर ले जाने के लिए ही हमारा जन्म हुआ है । उनकी ये सुन्दर आशाएं, ईश्वर करे, कभी नष्ट न हों । इन्हींके प्रकाश को अपने नेत्रों के सामने रखकर वे आगे बढ़ते चले जायें ।

उत्साह से प्रेरित युवक सूर्य का सामना कर सकता है । युवाकाल ही हृदय पर, दिमाग पर और मनुष्यस्व पर शासन कर सकता है । सिकन्दर युवक ही था । उसने यूरोपियन सभ्यता को नष्ट करने वाले एशियाई दलों की धजियां उड़ा दीं । नेपोलियन ने पच्चीस वर्ष की उम्र में इटली पर विजय प्राप्त कर ली थी । रोम्यूलस ने बीस वर्ष की उम्र में ही रोम की स्थापना की थी । न्यूटन ने इक्कीस बरस का होने के पहले ही अपने सबसे बड़े आविष्कार कर डाले थे । लूथर इक्कीस वर्ष की अवस्था में महान् सुधारक हो गया था । इक्कीस वर्षीय चेस्टरटन की बराबरी कोई अन्य अंग्रेजी कवि न कर सकता था । विक्टर ह्यूगो ने एक दुःखान्त नाटक की रचना पन्द्रह साल की उम्र में की थी, तीन पुरस्कार प्राप्त कर लिये थे और बीस वर्ष की वय में एम० ए० तक का ज्ञान प्राप्त कर लिया था ।

संसार के अधिकांश प्रतिभाशाली व्यक्ति चालीस की उम्र तक भी नहीं पहुँच पाये । वर्तमान संसार में नवयुवकों को जितने अवसर प्राप्त हैं उतने पहले वालों को न थे । आज उत्साह से प्रेरित होकर वे संसार को हिला सकते हैं । यह युवको और युवतियों का जमाना है । यही उनका राज-मुकुट है, यही उनकी कीर्ति है, यही उनकी सम्पदा तथा वैभव है ।

उत्साह जिस तरह युवा-काल में अपने सामने के कांटों को ठोकरीं से

पूल में मिला देता है उसी तरह यदि वह बुढ़ापे तक वैसी ही जाग्रत अवस्था में रहे तो आश्चर्यजनक काम कर सकता है। अस्सी वर्ष के ग्लैडस्टन में कार्य करने की जितनी शक्ति थी उतनी आज के पच्चीस वर्ष के युवक में दिखाई देना कठिन है। अवस्था का गौरव उसके उत्साह में रहता है और सफेद बालों को दिया हुआ सम्मान वास्तव में उत्साह-भरे हृदय को दिया हुआ सम्मान है।

अस्सी वर्ष की उम्र में वेलिंगटन ने किलेबन्दी की सब योजनाओं का निरीक्षण किया था। बेकन और हम्बोल्ट मृत्यु-शय्या तक पर बड़े परिश्रमी विद्यार्थी बने रहे।

डाक्टर जानसन ने अपनी सर्वोत्तम रचना “कवियों का जीवन चरित्र” अठत्तर वर्ष की उम्र में लिखी थी। ‘राबिन्सन क्रूसो’ प्रकाशित कराने समय डेनियल डेफो अट्ठावन वर्ष का था। न्यूटन ने अपनी पुस्तक ‘प्रिंसिपिया’ के नये संक्षिप्त वर्णन तिरासी वर्ष की उम्र में लिखे थे। इक्कासी वर्ष की अवस्था में लिखते हुए प्लेटो की मृत्यु हुई थी। टाम स्काट ने इबरानी (हिब्रू) भाषा का अध्ययन छियासी वर्ष की अवस्था में शुरू किया था। ‘गति के नियम’ की रचना करते समय गेल्लीलियो की उम्र लगभग सत्तर वर्ष की थी। जेम्स वाट ने पचासी वर्ष की अवस्था में जर्मन भाषा सीखी। हम्बोल्ट ने अपने ‘कासमास’ को नब्बे वर्ष की उम्र में समाप्त किया। पैंतीस वर्ष की अवस्था में ही बर्क ने पार्लियामेंट में जगह प्राप्त कर ली थी और संसार पर अपने चरित्र की महत्ता प्रकट कर दी थी। चालीस वर्ष तक गुमनाम रहने वाला प्रान्ट बयालीस वर्ष की उम्र में एक प्रसिद्ध सेनापति हो गया। एलिबिट ने जब कालेज में भरती होने का इरादा किया तब वह तेईस वर्ष का था, तीस वर्ष की उम्र में वह प्रेजुएंट हो गया और अन्त में उसके कपास के कारखाने ने दक्षिणी रियासतों के लिए उज्ज्वल भविष्य का द्वार खोल दिया। जर्मनी के भाग्य-विधाता अस्सी वर्ष के बिस्मार्क में क्या गजब की शक्ति थी। महाकवि

ब्रांगफेल्डो, टेनिसन, व्हीटियर आदि की कुछ उत्तमोत्तम रचनाएं सत्तर वर्ष की उम्र में लिखी गई थीं ।

उत्साह को कभी मन्द न होने दो और उसीके प्रकाश में अपने जीवन के कार्यों को करते जाओ । यदि तुम ऐसा करते गये तो कभी थकावट नहीं मालूम होगी और न असफलता ही दुखदायी प्रतीत होगी ।

ईश्वर करे हम उत्साह को ही अपना जीवन-संगी बनायें ।



—दस—

व्यवहार-कुशलता

“साधारण योग्यता को बुद्धिमानी से काम में लाने से ही प्रशंसा प्राप्त होती है। उससे इतनी ख्याति होती है जितनी वास्तविक चमक में नहीं होती।” —रोश फूको

एक गोरे अफसर को एक हबशी ने पकड़ लिया। इसपर उसने कहा—“मैं काले आदमी के आगे कभी आत्म-समर्पण न करूँगा।” पर काला आदमी डरने वाला न था। उसने चट अपनी बन्दूक उसकी ओर की और कहा—“महाशय, मुझे बड़ा अफसोस है। हम आपको पकड़ने के लिए सफेद आदमी नहीं ला सकते। यदि आप सीधे से मेरे साथ न चलेंगे तो मुझे गोली चलानी पड़ेगी।” तब गोरे को उसकी बात माननी ही पड़ी।

इस युग में चातुरी के आगे बुद्धि की एक भी नहीं चलती। हमें निरी बुद्धि की विफलता चारों ओर दिखाई देती है। चतुराई के द्वारा एक बुद्धि से इतना काम लिया जा सकता है जितनी बिना चतुरता के दस बुद्धियों से नहीं हो पाता। बुद्धि दोपहर तक सोती रहती है, चतुराई छः बजे ही उठ बैठती है। बुद्धि शक्ति है, चतुराई कौशल। बुद्धि करने योग्य काम जानती है, चतुराई उसका करना जानती है।

बुद्धि कुछ है, चतुराई सब कुछ है। उसे छठी इन्द्रिय तो नहीं कह सकते, पर वह सब इन्द्रियों का जीवन है। वह खुली आंख है, शीघ्र सुनने वाला कान है, परखने वाली रसना है और सुन्दर स्पर्श है। वह सब पहेलियों का हल करने वाली है, सब कठिनाइयों पर विजय पाती है और सब बाधाओं को दूर करती है।

संसार में व्यावहारिक कार्यों से दूर रहने वाले व्यक्ति भरे पड़े हैं। ये प्रायः दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जिन्होंने अपनी सारी योग्यताओं को कांटी में रखकर केवल किसी एक योग्यता का आसुरी विकास कर लिया है। उनको दूसरी योग्यताओं का प्रायः नाश हो चुका है। ऐसे एक योग्यतावालों को संसार प्रतिभावान व्यक्ति कहकर पूजता है और उनकी अन्य कार्यों की अयोग्यताओं को भूल जाता है, क्योंकि वह अपनी आंखों से उनके ऐसे कार्यों को देखता है जिन्हें दुनिया का दूसरा कोई आदमी नहीं कर सकता। एक व्यापारी यदि अपने कमरे में मूर्खता से भी पेश आता है पर व्यापार में महान् व्यापारी का काम कर दिखाता है, तो लोग उसकी गलती को भूल जाते हैं। उसकी चकाचौंध कर देने वाली प्रतिभा के सामने उसके सब दोष छिप जाते हैं। एडम्स स्मिथ ने संसार को अपने “राष्ट्रों की सम्पत्ति” नामक ग्रन्थ के द्वारा मितव्ययिता का पाठ पढ़ाया है, पर वह अपने गृह-कार्यों में मितव्ययी न हो सका।

संसार के महान् पुरुषों के जीवन-चरित्रों को पढ़ने से यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है कि बड़े-बड़े पुरुष अपने गृह-कार्यों में बहुत कुशल न थे। आइजक न्यूटन विश्व के रहस्य को समझ सका, किन्तु काम करते समय बिल्ली की आवाज से डर जाया करता था। बेटोवेन संसार-प्रसिद्ध संगीताचार्य था, पर छः कमीजों और आधे दर्जन रुमाजों के लिए उसने दर्जी को ३००) दे दिये और आगे के लिए भी उसको एक बड़ी रकम पेशगी दे दी। यह सब तो ठीक, पर कई बार उसको एक बिस्कुट और गिलास-भर पानी पर ही दिन बिताना पड़ा था। डीन स्विफ्ट सरीखा प्रतिभावान लेखक भूखों मरता था और वहीं उससे कम योग्यता वाले हलुआ-पूरी उड़ाते थे। नेपोलियन का एक सेनापति युद्ध-कला में अपने स्वामी ही के समान कुशल था, परन्तु उसमें उससे समान मनुष्यों की पहचान न थी, उसमें विवेक-बुद्धि नहीं थी।

दुनिया के बेजोड़ कानूनदां डेनियल को अपने एक मुकदमे की फीस

में एक हजार डालर के नोट मिले। उस समय वह पुस्तकालय में बैठा हुआ पुस्तकें पढ़ रहा था। दूसरे दिन उसे कुछ रुपयों की जरूरत पड़ी, पर उसे वे नोट न मिले। बहुत दिनों बाद उसने अपनी एक किताब के पन्ने पलटते समय एक नोट रखा हुआ पाया। कुछ पन्ने उलटने पर दूसरा मिला। इस तरह उसका खोया हुआ सारा धन मिल गया। वह पढ़ने की धुन में निशान लगाने के लिए रद्दी कागज के टुकड़े की जगह अपने नोट रखता चला गया था।

कुछ लोग कभी-कभी इतने ध्यानमग्न हो जाते हैं कि ऐसा मालूम होता है जैसे उनमें विवेक-बुद्धि बिल्कुल है ही नहीं। विचार-मग्न प्रोफेसर लेसिंग अपने घर गये और दरवाजे को खटखटाने लगे। ऊपर से नौकर ने उनकी ओर देखा, पर अंधेरे में उन्हें पहचान न सका। अतः उन्हें दूसरा कोई आदमी समझकर उसने कह दिया—“प्रोफेसर साहब घर पर नहीं हैं।”

“अच्छा!” कहकर प्रोफेसर महाशय वहां से चले गये।

वेन्डल फिलिप्स ने कहा है कि विवेक-बुद्धि आवश्यक बातों के सामने झुक जाती है और उनका उपयोग करती है।

ब्रिटिश भूमि पर पदार्पण करते समय सीजर को ठोकर लग गई और वह गिरनेवाला ही था कि झुककर किनारे की बालू को मुट्ठियों में उठाकर कहा—“देखो, यह हमारी विजय की सूचना है।”

इसी तरह नेपोलियन भी विवेक-बुद्धि और व्यवहार-बुद्धि का गजब का पंडित था। एल्बा टापू से भागकर जब वह फ्रांस पर पुनः अधिकार करने के लिए आया तब एक सेना उसे रोकने और पकड़ने के लिए भेजी गई। नेपोलियन सिंह के समान साहसी वीर था। अपने कोट के बटन खोलकर सिपाहियों के सामने जा खड़ा हुआ और जोर से बोला—“सैनिको ! क्या तुम अपने सम्राट् पर गोली चलाओगे ? तो जो, मेरा सीना तुम्हारे सामने है।” सिपाहियों का दिङ्ग बदल गया और वे नेपोलियन के पक्ष में हो गए।

शेक्सपियर और जर्मन कवि गेटे की किमीने तुलना की। उसपर विचार करते हुए गेटे ने लिखा है—शेक्सपियर हमेशा ठीक निशाना लगाता है, पर मुझे तो ठहरना पड़ता है, सोचना पड़ता है, उपयुक्त चुनाव करना पड़ता है; तब कहीं मेरा वार होता है।

समझदारी से मंचालित छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़े भयंकर तीरों और तोपों की चतुरता-हीन अग्निवर्षा से कहीं अधिक उपयोगी और सफल होते हैं।

थारलोवीड ने सबसे पहला पैसा एक सन्दूक की मरम्मत करके पैदा किया था। उसे संसार में पढ़ने के अवसर नहीं थे, सुविधाएं नहीं थीं, पर उसमें व्यवहार-कुशलता और निपुणता थी। वह मनुष्यों को खुली पुस्तक के समान पढ़ सकता था और उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार घुमा-फिरा लेता था। वह निःस्वार्थ था, उसकी पटुता के कारण उसे बड़े-बड़े कार्य सौंपे गये थे।

नेपोलियन सेना सहित एक नदी के किनारे पहुँचा। नदी पर पुल नहीं था। उसने अपने प्रधान इंजीनियर से पूछा—“इस नदी की चौड़ाई क्या है?”

त्रिवंशता के साथ इंजीनियर ने कहा—“श्रीमान्, मैं नहीं कह सकता। मेरे यन्त्रसेना के साथ हैं और हम लोग दस मील आगे आ गये हैं।”

“इस नदी की चौड़ाई को जल्दी से नापो,” नेपोलियन ने क्रोध से कहा।

“साहब……?”

“नदी की चौड़ाई अभी बतलाओ, नहीं तो तुम्हें नौकरी से अलग करता हूँ।”

अब इंजीनियर को अक्ल आई। उसने अपने हेमलेट (ऊँचे टोप) के सहारे गणित के एक प्रसिद्ध नियम का उपयोग करके बताया कि नदी की चौड़ाई लगभग इतनी होगी। नेपोलियन ने उसकी इस सूझ से प्रसन्न

होकर उसे ऊँचा पद दिया ।

कार्य-कुशलता न रहने से हमेशा बने-बनाये काम बिगड़ जाते हैं और मनुष्य मजाक की सामग्री बन जाता है ।

जिस कठिनाई को देखकर एक आदमी रास्ते से भटक जाता है वह कठिनाई व्यावहारिक बुद्धि वाले के सामने एक खेद उपस्थित करती है और वह हँसते-हँसते विजय पा लेता है ।

किसी आदमी का ठीक तौर से देखने के लिये यह बहुत जरूरी है कि हम ठीक जगह से उसे देख लें, उसे अच्छे प्रकाश में रखें । उसके गुण और दोष अच्छी दृष्टि को पाकर तुरन्त प्रकट हो जाते हैं ।

महाकवि शेक्सपियर में आश्चर्यजनक चतुरता थी । वह हरेक चीज को नाटक में परिवर्तित कर देता था । वह राजा और रंक को, मूर्ख और छैलों को, कुमार और किसान को, काले और गोरे को, गहरी कामनाओं और आचरण को, कीर्ति और अपकीर्ति को मिलाना जानता था और इनके जरिये ऐसा चित्र तैयार करता था कि देखने वाले दंग रह जाते थे ।

कुछ व्यक्ति जरा-जरा-सी बात पर क्रोध दिखलाकर अपनी विवेक-शून्यता का परिचय देते हैं । कुछ भले आदमी इतने आगे बढ़ जाते हैं कि किसीकी बात को पूर्ण रूप से सुने बिना ही उसका उत्तर देने की कोशिश करते हैं । परन्तु विवेक-बुद्धि वाले व्यक्ति दूसरों की बात अच्छी तरह से सुन-समझकर उत्तर देते हैं और दूसरों के मिथ्या आरोपों को और बिल्कुल ध्यान नहीं देते ।

—ग्यारह—

आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास

“आत्म-सम्मान मनुष्य के दुर्गुणों को वश में रखने की पहली लगाम है।” —बेकन

“आत्म-विश्वास की कमी ही हमारी बहुत-सी असफलताओं का कारण होती है। शक्ति के विश्वास ही में शक्ति है। वे सबसे कमजोर हैं, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों, जिन्हें अपने-आप तथा अपनी शक्तियों पर विश्वास नहीं।” —बोबी

स्कॉटलैण्ड का एक गरीब जुलाहा सदा ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि उसके विचार अच्छे हो जाय, क्योंकि जबतक मनुष्य अपने आचरण द्वारा लोगों को अपना अच्छापन न दिखा देगा तबतक वह लोगों से अपने साथ अच्छे व्यवहार की आशा कैसे रख सकता है ?

जब हम दूसरों का सम्मान नहीं करते तो हमारा सम्मान करने की दूसरों को क्यों चिन्ता होगी और वे क्यों हमारा सम्मान करेंगे ? आत्म-सम्मान तो उन्हीं सिद्धांतों पर आश्रित है जिनपर दूसरों का आदर करना अवलम्बित रहता है ।

लिंकन का कथन है कि तुम भले ही सब आदमियों को कुछ समय के लिए और कुछ आदमियों को सब समय के लिये धोखा दे दो, परन्तु सब आदमियों को सब समय के लिए तुम धोखा नहीं दे सकते । हम स्वयं अपने को ही कभी धोखा नहीं दे सकते । यदि हम सम्मान चाहते हैं तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे कार्य यह बतला दें कि हम उसके योग्य हैं । खोटे सोने की एक मुहर कबतक सच्चे सोने की कहलाकर पूजी जा सकती है ?

कालोना के स्टीफेन को जब उसके शत्रुओं ने कैद कर लिया तब उससे पूछा—“बताओ, तुम्हारा किला कहाँ है ?” हृदय पर हाथ रखते हुए उसने उत्तर दिया—“यहाँ।”

वार्शिंगटन अरविंग का कथन है कि अच्छी तरह तैयार की गई और अच्छी तरह से शिचित्त बुद्धि को सदा ही स्थान मिल जाता है, पर उसे अपने घर में छिपी न रहनी चाहिये। वह यह आशा न करे कि दूसरे उसे ढूँढ़ लेंगे। आगे बढ़ने वाले और साहसी आदमियों की सफलता के बारे में बहुत-सी गलत बातें फैली हुई हैं। अच्छी योग्यता वाले एक कोने में पड़े रह जाते हैं। सच बात यह है कि आगे बढ़ने वाले मनुष्यों के पास कार्य करने की विधि के वे गुण मौजूद होते हैं जिनके बिना केवल योग्यता किसी काम की नहीं होती। लोग कहा भी तो करते हैं कि भौंकने वाला कुत्ता सोये हुये शेर से अधिक उपयोगी है।

जान काब्रहम को दिन-रात अध्ययन में लगा देखकर कालेज के एक विद्यार्थी ने मजाक किया। उसे सुनकर कालहम ने कहा—“मुझे अपने समय को इस तरह से काम में लाने की आवश्यकता है, क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं कांग्रेस में अच्छी तरह काम कर सकूँ।” उसकी इस बात का स्वागत हँसी ने किया। तब उसने जरा जोर देकर कहा—“क्या तुम इसपर अविश्वास करते हो? मैं तुम्हें विश्वास दिखता हूँ कि यदि मुझे यह विश्वास न होता कि तीन बरस के भीतर ही राजधानी की ओर से कांग्रेस में चुना जाऊँगा तो मैं इसी समय कालेज छोड़ देता।”

किसी व्यक्ति को इस तरह की बातें कहते सुनकर हम उसे अहंकारी कहे बिना नहीं रह सकते। यह केवल विवेक-शून्यता की बात है। निस्संदेह अधिकांश मनुष्य अहंकारी ही होते हैं, परन्तु आगे चलकर महान् बननेवाले व्यक्तियों के ऐसे शब्द उनकी शक्तियों और उनके अपने विश्वास के आधार पर कहे जाते हैं। बड़े आदमी हमेशा ही अपनी योग्यताओं के मूल्य को समझकर उसीके अनुसार आत्म-विश्वास रखना जानते

हैं। कवि वर्ड्सवर्थ जानता था कि इतिहास में उसका कौन-सा स्थान होगा और वह हमेशा ही इस बात को कहा करता था। जर्मनी के महाकवि गेटे ने अपना भविष्य स्वयं ही बतला दिया था। तूफान से नौका को डगमगाती देखकर जब मल्लाह घबराने लगा तब मीजर ने कहा था—
“घबराओ मत, तुम्हारी नौका में सीज़र और उसका भाग्य है।”

नैतिक दृष्टि से उसी आदमी पर विश्वास करना निरापद है, जो स्वयं अपन ऊपर विश्वास करता है। जो आदमी अपनी ईमानदारी पर स्वयं ही विश्वास नहीं करता उसपर दूसरे क्यों करेंगे? सच है, नैतिक पतन का आरम्भ घर से ही होता है।

आजकल दुनिया के पास इतना समय नहीं कि किसी कोने में पड़ी हुई विद्वत्ता को खोज निकाले। मनुष्य का चुनाव उसके मुँह से बतलाई गई योग्यता ही पर किया जाता है। यदि भविष्य में वह योग्यता न दिखा सका तो इसमें उसीकी हानि है। संसार साहस और मरदानगी की प्रशंसा करता है और ऐसे व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से देखता है जो दुनिया में पैदा होने के अक्षम्य अपराध के लिये सदा क्षमा-प्रार्थी की सूची बनाये फिरता है।

सेचलिग ने क्या ही सत्य कहा है कि जो आदमी इस बात को जानता है कि वह क्या है वह शीघ्र ही यह भी जान लेगा कि उसे क्या होना चाहिए। पहले यह जरूरी है कि उसके विचारों में आत्म-सम्मान हो, फिर व्यवहार में तो वह अपने-आप आ जायगा। दृढ़ता के साथ सामग्रियों पर बार-बार अपना अधिकार घोषित करने वाला वास्तव में उसका अधिकारी हो जाता है। कोसूथ का कथन है कि “नम्रता बुद्धिमानी का एक अंग है और मनुष्यों के लिए शोभनीय है। परन्तु किसी-को भी अपना आत्म-विश्वास घटाना नहीं चाहिए। वही मनुष्य की मनुष्यता का सर्वश्रेष्ठ गुण है।” इसी तरह फ्राइड का कहना है कि फल और फूल से एक पेड़ के पूर्ण होने के लिए उसकी जड़ को खूब नीचे

तक जम जाना चाहिए। इसी बुनियाद पर मानसिक शिक्षण और सुधार की इमारत खड़ी की जा सकती है। एक नवयुवक को ऐसे आत्म-सम्मान की आवश्यकता है जो उसे नीची श्रेणी से ऊपर उठाता है और उसे दूसरों के तिरस्कार से मुक्त कर देता है।

कारान ने एक मुकदमे की पैरवी करते हुए कहा—“मैंने अपनी कानून की सब पुस्तकों का अध्ययन कर लिया है, पर मुझे एक भी ऐसा मुकदमा नहीं मिला जिम्में विपत्ती के द्वारा घोषित स्वत्व ठीक माना गया हो।”

जज राबिनसन ने बीच में टोककर कहा—“जनाब, मुझे मालूम होता है कि आपका पुस्तकालय छोटा है।”

नवयुवक बैरिस्टर ने शान्ति से जज के चेहरे की ओर देखते हुए कहा—“श्रीमान्, यह ठीक है कि मैं गरीब हूँ और परिस्थिति ने मेरे पुस्तक-संग्रह को छोटा ही रखा है। मेरी पुस्तकों की संख्या अधिक नहीं है, परन्तु वे चुनी हुई हैं और मुझे विश्वास है कि मैंने उन्हें अच्छी तरह पढ़ा है। मैंने अपने को इस ऊँचे धन्धे के लिये थोड़ी ही-सी पर अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करके तैयार किया है। मैंने खराब पुस्तकें नहीं पढ़ीं। मुझे अपने गरीब होने की शर्म नहीं है, पर यदि मैं बुरे तरीके से पैसा पैदा कर धनवान हुआ होता तो बड़ी लज्जा आती। यदि मैं बड़ा आदमी न हो सका तो कम-से-कम ईमानदार तो रहूँगा, और यदि इस मार्ग को त्यागकर मैं बुरे रास्ते से ऊँचा पद प्राप्त भी कर लूँ तो वह पद मुझे बहुत ही अधिक घृणा के योग्य बना देगा।” स्वाभिमान और आत्म-विश्वास से भरे इन शब्दों को सुनकर जज महाशय ने फिर कभी उस नवयुवक बैरिस्टर पर ध्यान नहीं किया।

माइकेल रेनाल्ड्स ने कहा कि “आत्म-निर्भरता चरित्र का एक बड़ा ही मूल्यवान् तत्त्व है।”

आत्म-निर्भरता कोई ईसी-गेल की चीज नहीं है। उसके लिये

कठिनाइयां भेड़नी पड़ती हैं, अपना तन, मन' धन सब निछावर कर देना पड़ता है ।

अतः मनुष्य की उन्नति के लिए उसे संसार के मनुष्यों में ऊंचा बनाने के लिए, उसके कार्यों में सफलता और सुन्दरता लाने के लिए आत्म-विश्वास एवं आत्म-सम्मान की अत्यन्त आवश्यकता है । आत्म-निर्भरता भी इन्हींके साथ रहनी चाहिये ।

महाकवि शेक्सपियर ने एक जगह कहा है—“जो कमजोर, परावलम्बी और आगा-पीछा करने वाले हैं वे आत्म-निर्भर रहने वालों के उदार अहंकार को समझ नहीं सकते । आत्म-निर्भर मनुष्य को इसकी खुशी रहती है कि मुझमें राज-मुकुट प्राप्त करने की शक्ति है ।” आगे चलकर वह कहता है—“यदि तुम अपने प्रति सच्चे रहोगे तो जिस तरह रात के बाद दिन का होना निश्चित रहता है उसी प्रकार तुम किसी आदमी को धोखा न दोगे ।”

—बारह—

चरित्र-बल

“चरित्र एक शक्ति है, प्रभाव है। वह मित्र उत्पन्न करता है, सहायक और संरक्षक प्राप्त कराता है, और धन, मान तथा सुख का निश्चित मार्ग खोल देता है।” —जे० हावेज

“चरित्र प्रत्येक वस्तु का पोषक और सहायक होना चाहिए—धर्म, उपदेश, कविता, चित्र, नाटक, बिना चरित्र के किसी भी वस्तु का रत्ती-भर मूल्य नहीं होता।” —जे० जी० हालैण्ड

“महान् बनो और अन्य मनुष्यों में होने वाली महानता तुम्हारी सहायता से मिलने के लिए उठ खड़ी होगी।” —लावेल

सिसरो से एक सरदार ने कहा—“तुम तो नीच कुल के हो; हमारी तुम्हारी क्या बराबरी !” रोम के उस महान् वक्ता ने नम्रता से जवाब दिया—“मेरे कुल की कुलीनता मुझसे शुरू होती है और आपकी कुलीनता का अन्त आप से होता है।”

स्पाार्टा का राजा और एक आगन्तुक बातचीत कर रहे थे। किसी विशेष बात के कहने का अवसर आता देख आगन्तुक ने राजा की दस वर्ष की सुकुमारी बालिका की ओर संकेत करके कहा—“इसे थोड़ी देर लिए बाहर भेज दीजिए।”

राजा ने कहा—“नहीं, जो कुल आपको कहना है इसीके सामने कहिए।”

जड़की पिता के पैरों के पास बैठ गई। आगन्तुक धन के बल पर बादशाह की मदद से पड़ोस के एक देश का राजा होना चाहता था। कन्या इन बातों को नहीं समझती थी, पर वह सुख के भावों को पहचानने की शक्ति रखती थी। पिता के चेहरे पर कुलवि के चिह्नों को देखकर वह

समझ गई कि कोई ऐसी बात है जिसे वे नहीं करना चाहते। उसने पिता का हाथ पकड़कर कहा—“बाबूजी, चलो यहाँ से चलें, यह आदमी आपसे न मालूम क्या करायेगा।” बालिका की बात को बादशाह न टाल सका। वह वहाँसे उठकर चला गया और स्वर्गदूत के हृदय में निवास करने वाली पवित्रता ने एक देश को कलंक से बचा लिया।

‘नंगे पैर चीथड़े लपेटे हुए लड़के ने आगे बढ़कर एक राह चलते सज्जन से कहा—“महाशय, दो-चार डिबिया दियासलाई खरीद लीजिए।”

उन्होंने कहा—“नहीं भाई, मुझे दियासलाई नहीं चाहिए।”

“ले लीजिए, एक ही पेंसा तो दाम है।” कहकर लड़का उनके मुँह की ओर देखने लगा। फिर भी उन्होंने कहा—“मुझे इनकी जरूरत नहीं है।”

“अच्छा, एक पैसे की दो डिबियां ले लीजिए।”

किसी तरह लड़के से पिंड छुड़ाने के लिए उस भले आदमी ने एक डिबिया ले ली; पर जब देखा कि पास में पैसा नहीं है तो डिबिया वापस कर दी और कहा “मैं कल खरीद लूँगा।” लड़के ने फिर नम्रता से कहा—“आज ही लीजिए, मैं पैसे भुनाकर ला दूँगा।”

बालक की बात सुनकर उन्होंने उसे एक शिलिंग दे दिया। थोड़ी देर तक वे खड़े रहे, पर लड़का न लौटा। उन्होंने सोचा कि शायद अब बाकी के पैसे न मिलेंगे, और कुछ देर और राह देखकर अपने घर चले गये।

शाम को नाँकर ने आकर खबर दी कि एक लड़का अ पसे मिलना चाहता है। उत्सुकता से उन्होंने उसे अन्दर बुलाया। देखते ही समझ गए कि शायद यह उस लड़के का भाई है। यह उसकी अपेक्षा और भी अधिक चीथड़ों से लिपटा हुआ था। उसके शरीर में हड्डियाँ ही दीख पड़ती थीं, पर चेहरे पर एक प्रकार की चमक थी। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने कहा—“क्या आपने ही मेरे भाई से दियासलाई की एक

डिबिया खरीदी थी ?”

“हां।”

“लीजिए ये बाकी के पैसे। वह खुद नहीं आ सका। उसकी तबीयत ठीक नहीं है। एक गाड़ी से वह टकरा गया और गाड़ी उसके ऊपर से निकल गई। उसकी टोपी, डिबिया और आपके बाकी पैसे न मालूम कहाँ गए, और उसकी दोनों टांगें टूट गईं। वह अच्छा नहीं है। डाक्टर कहते हैं कि वह बचेगा नहीं। उसने किसी तरह ये पैसे भेजे हैं,” कहकर बालक रोने लगा। उस भद्र-पुरुष का हृदय पिघल गया। वे उसे देखने गए।

जाकर देखते क्या हैं कि वह अनाथ बालक एक बूढ़े शराबी के घर में रहता है। लड़का फूस पर लेटा हुआ था। इन्हें देखते ही वह पहचान गया और लेटे-लेटे बोला—“मैंने पैसे भुना तो लिए थे, लेकिन लौटकर आ ही रहा था कि घोड़े से टकराकर गिर पड़ा और मेरी दोनों टांगें टूट गईं। इतना कहकर बालक दर्द से कराहते हुए अपने छोटे भाई से बोला—“प्यारे भैया, मेरी तो मौत आ रही है, पर तुम्हारी देख-भाल कौन करेगा ? मेरे न रहने पर हाथ तुम क्या करोगे !” यह कहते हुए उसने उसे गले से लगा लिया। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

उक्त सज्जन ने दुःखी बालक के हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा—
“बेटा, तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे भाई की रक्षा करूंगा।”

बालक समझ गया। उसको शक्ति क्षीण हो रही थी, फिर भी बची-खुची शक्ति के बल पर उसने उनकी ओर देखा। आंखों से धन्यवाद और कृतज्ञता के भाव साथ-साथ निकल रहे थे। हृदय कुछ कहना चाहता था पर शब्द मुंह से नहीं निकलते थे। उसी समय उसकी आंखें बन्द हो गईं और इस क्षण-भंगुर शरीर को त्यागकर उसकी आत्मा जगत्पिता की गोद में जा पहुँची।

भगवान् ने उस छोटे-से घायल और मरने हुए लड़के को बहुत बड़े

सिद्धान्त सिखाये थे। बड़े-बड़े धनियों की अपेक्षा वह ईमानदारी, सचाई, महानता, सहृदयता के मूल्य को कहीं अधिक समझता था। ये ही सद्गुण मनुष्य को देवता बना देते हैं। इन्हींकी बदौलत मनुष्य इस लोक तथा परलोक में पूजे जाते हैं।

पोले बुखार की महामारी के समय रोगियों की सेवा करने वालों की बढ़ी जरूरत थी। पर लोग मिलते न थे। रिलीफ कमेटी हैरान थी। एक दिन एक असभ्य भद्दी शक्ल वाले आदमी ने आकर कहा—“मैं यह काम करना चाहता हूँ।”

डाक्टर ने उसे नीचे से ऊपर तक सावधानी के साथ देखकर कहा, “तुम इस काम को न कर सकोगे।”

उसने निवेदन किया—“मैं इस काम को करना चाहता हूँ। मुझे एक सप्ताह तक रखकर देख लीजिए ! यदि आप मेरे काम से सन्तुष्ट न हों तो मुझे निकाल दीजिएगा और यदि प्रसन्न हों तो मेरी मजदूरी दे दीजिएगा।”

“अच्छा तो मैं तुम्हें रख लेता हूँ, पर सच्ची बात तो यह है कि मैं जरा हिचकता हूँ।” इसके बाद मन-ही-मन डाक्टर ने सोचा—“इस आदमी पर गुप्त रूप से निगरानी रखनी पड़ेगी।”

परन्तु कुछ दिन में वह आदमी सबसे अधिक सेवा करने वाला सिद्ध हुआ। काम करते वह कभी थकता ही नहीं था। उसे अपनी फिक्र न रहती थी। बीमारी के भयंकर-से-भयंकर स्थान में वह वीर की तरह चला जाता था और मौत के मुंह में पड़े हुए लोगों को जीवन-दान देने का यत्न करता था। उनकी सेवा में दत्तचित्त होकर काम करता था। अपने सगे-सम्बन्धियों से त्यागे हुए और बिना यार-मददगार के कोनों में पड़े सड़ने वालों को वह स्वर्ग का दूत दिखाई देता था। उसके चेहरे को देखकर बीमार एक बार जी-से उठते थे।

लेकिन जिस दिन तनख्वाह मिलती थी उस दिन उसकी विचित्र हालत

हांती थी। वह सबका आखें बचाकर जाता और रोगियों की सहायता के लिए दान इकट्ठा करने के संदूक में अपनी कमाई के पैसे डाल आता। कुछ दिनों में वह बीमार पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। अन्त्येष्टि-क्रिया के समय देखा गया कि उसके शरीर पर एक बड़ा-सा निशान था, जिससे यह मालूम होता था कि किसी समय वह किसी भयंकर दुष्कर्म में जेलखाने गया था।

यह युग एक प्रकार से पैसे का युग चारों ओर धन की ही पुकार मची हुई है। परन्तु फिर भी एक गरीब लेखक, एक कलाविद् तथा विद्वान व्यक्ति का करोड़पतियों से अधिक आदर होता है। धन हमेंशा ही बुरी बातों को प्रोत्साहन दिया करता है। पैसे की दुनिया में एक आदमी की सफलता हजारों का दुःख और असफलता में डाल देती है। बुद्धि की दुनिया में सफलता में समाज की उन्नति में सहायता मिलती है। धनी-निर्धन दोनों ही चरित्र के अधिकारी हैं। समाज के लिए दोनों से सुन्दर चरित्र की अपेक्षा है। लेकिन धनी धन के घमण्ड में अपने चरित्र को खो बैठता है और धनहीन उसे ही अपना सब-कुछ समझकर अपनाता है। एक तरह से दोनों ही भिन्न श्रेणी के किसी व्यक्ति को प्रसन्न करने अथवा किसी लाभ के लिए अपने चरित्र को पवित्र नहीं रखते। पर चरित्रवान् पुरुष तो चरित्र को ईश्वर का एक आदेश समझता है और निःस्वार्थ-भाव से अपने कार्य करता है।

हम सब चरित्रवान् पर भरोसा रखते हैं। एक महा-पुरुष के नाम में कैसा जादू होता है ? थियोडोर पार्कर कहा करते थे कि सुकरात की कीमत दक्षिण कारोबिना की रियासतों से बहुत ज्यादा है।

संसार में विजय पाने के लिए चरित्र बड़ा मूल्यवान् साधन है। लार्ड केनिंग ने लिखा है—“मैं चरित्र के मार्ग पर चलकर शक्ति प्राप्त करूंगा, मैं दूसरे मार्ग का सहारा न लूंगा, और मुझे विश्वास है कि यद्यपि यह रास्ता जल्दी से मुझे मेरे वांछित उद्देश्य को प्राप्त नहीं करा

सकता, फिर भी वही बिलकुल निश्चित मार्ग है।”

हरेक इंजिन की शक्ति का बारीकी से हिसाब लगाया जा सकता है, पर मनुष्य के अन्दर छिपे हुए चरित्र की शक्ति को कौन नाप सकता है ? एक लड़के अथवा लड़की पर स्कूल में पढ़ने वाले संस्कार का कौन अन्दाजा लगा सकता है ? एक-दो लड़के अपने कार्यों के द्वारा परम्परा की बातों और चालों को बदल देते हैं। रूढ़ियों को तोड़ने वाले इन वीरों के चरित्र को क्या कोई किसी यन्त्र से नाप सकता है ?

मास्को में एक सेना भाग रही थी। बर्फ गिर रही थी और खून को जमा देने वाली ठण्ड पड़ रही थी। इस सेना का नायक एक जर्मन राजकुमार था। उसके चरित्र के कारण सैनिक उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारा मानते थे। कड़क की सरदी की उस रात में उस सेना की एक टुकड़ी राजकुमार सहित एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में आकर ठहरी। सब थके और मूर्ख थे। राजकुमार को नींद आ गई। सवेरे वह अपने ऊपर पड़े हुए गरम कपड़ों को अलग फेंककर उठा। बर्फ का तूफान चल रहा था। उसने अपने सिपाहियों को पुकारा, पर कोई बोला नहीं। हवा की सनसनाहट में उसकी आवाज बिजलीन हो गई। उसने देखा तो मालूम हुआ कि उसके चारों ओर सिपाही ठण्ड से अकड़े पड़े हैं। उनके शरीर पर कपड़े नहीं थे। उन्होंने राजकुमार को शीत से बचाने के लिए उसे अपने कपड़ों से ढक दिया था। अपना जीवन देकर उन्होंने अपने प्यारे राजकुमार को बचाया।

वालटेयर उसी आदमी को महान् समझता था जिसने मानव-जाति का कुछ कल्याण किया हो, जिसके द्वारा किसी दुखिया का दुःख कम हुआ हो, जिसने अपने बाहुबल से अनार्थों और अबलाओं के उत्थान में मदद दी हो, जिसने नई बातों की खोजकर रोगग्रस्त मानव-जाति की सहायता की हो, जिसने सबको अपना भाई समझकर उनके आगम और सुख का प्रबन्ध किया हो, जिसका हृदय आपत्तिग्रस्त को देखकर

उसकी मदद को दौड़ पड़ता हो, जिसने किसी राष्ट्र के उद्धार के लिए अपना बलिदान कर दिया हो। वास्तव में मनुष्य अपने कृत्यों से ही परखा जाता है।

क्या तुम उस भद्रो सूरत वाले आदमी को सफल कहते हो ? क्या उसकी सूरत उसके धन-संचय की विधि को शोषित नहीं कर रही है ? क्या तुम उस बड़ी तोंदवाले को सफल कहते हो ? क्या ग़ीबों को धोखा देकर धन पैदा करने के उसके हथकंडों से तुम परिचित नहीं हो ? क्या तुम उसके चेहरे पर अनाथ बालकों और विधवाओं के दुःख का इतिहास नहीं पढ़ सकते ? क्या तुम उस आदमी को स्वयं-निर्मित पुरुष कह सकते हो जो दूसरों को मिटाकर बना है, जो दूसरे का घर गिराकर अपना घर बनाता है ? क्या दूसरों को गरीब बना देने वाला आदमी वास्तव में धनवान् है ? क्या वह आदमी कभी सुखी रह सकता है जिसकी नस-नस में लोभ भरा हुआ है। संसार जिन्हें सफल कहता है उनमें से बहुत ही कम मनुष्यों के चेहरे सुन्दर, शान्त और माधुर्ययुक्त दीखते हैं। प्रकृति उनके चेहरे पर उनके हृदय पर शासन करने वाली भावनाओं की छाप लगा देती है। हृदय की दुर्गन्ध चेहरे से निकल भागती है।

जीवन में असफल हो जाने वाला व्यक्ति सम्मान पाने योग्य नहीं है, पर खाने-पीने और पैसा इकट्ठा करने वाला व्यक्ति सचमुच सफल कभी नहीं कहा जा सकता। संसार को उसके रहने से क्या लाभ हुआ जिसने कभी दुखिया के आंसू नहीं पोंछे, कभी निराश हृदय को उत्साहित नहीं किया ? उसका हृदय पत्थर का है और उसका देवता सुवर्ण है।

संसार को ऐसे व्यक्तियों की बड़ी जरूरत है जो धन के लिए अपनी राय बेचते नहीं और जिनके रोम-रोम में ईमानदारी भरी है; जिनकी अन्तरात्मा दिशा-सूचक यंत्र की सुई के समान एक शुभ तारे की ओर देखा करती है; जो स्वर्ग से गिर जाने पर भी अपने अधिकार से नहीं हटते; जो सत्य को प्रकट करने में राजस का सामना करने से भी नहीं

डरते; जो कठिन कार्यों को देखकर हिचकते नहीं; जो अपने नाम पर दिंडोरा न पीटते हुए साहसपूर्वक काम करते हैं; जो अपने काम का समझते हैं और उसमें दत्तचित्त रहना जानते हैं; जो कभी हृदय की भावनाओं को नहीं छिपाते और सच्ची अवस्था को निस्संकोच प्रकट करने में नहीं डरते।

सर फिलिप सिडनी को एक बार बहुत बुरी चोट लग गई थी। रक्त-स्त्राव के कारण प्यास बढ़ी तेजी से सता रही थी। पानी उनके पास लाया गया। उसी समय एक घायल सिपाही को लोग डोली पर ले जा रहे थे। उसकी दृष्टि पानी से भरी बोतल पर पड़ी। सिडनी ने उसकी आंखों में पानी की प्यास देखी। पानी की बोतल उसे देते हुए उन्होंने कहा—“मेरी बनिस्बत तुम्हें पानी की जरूरत ज्यादा है।” सिडनी मर गये, पर उनके इस कार्य ने उन्हें अमर कर दिया। अपने समय, शक्ति और जीवन को जो दूसरों के लिए—चाहे वह देश हो, जाति हो, अथवा मनुष्य-समाज हो—अर्पण कर देता है, वह निश्चय ही महान् है।

हरेक देश में ऐसे स्त्री-पुरुष होते हैं जो मुख से वचन निकलाने के पहले ही लोगों के मन को जीत लेते हैं। उनका प्रभाव उनकी योग्यता से अधिक होता है। हरेक जाति के लिए चरित्र पर विश्वास करना स्वाभाविक है, क्योंकि चरित्र में ही शक्ति है। संगमरमर के फर्श पर छुरे से घायल सीजर रोम के लोगों पर पहले से अधिक प्रभाव डाल रहा था। प्रत्येक हृदय उसके लिए तड़प उठा था और लोग उसके लिए आंसू बहा रहे थे।

जेनरल शेरिडन के बारे में कहा जाता है कि यदि वह सिद्धांत का पाठन करने वाला व्यक्ति होता तो उसने सारे संसार पर शासन किया होता। कितने कम नवयुवक जानते हैं कि उसकी सफलता उसके ज्ञान की अपेक्षा उसके चरित्र, उसके आचरण पर अधिक अवलंबित थी।

चरित्र के कारण ही लिंकन और वाशिंगटन संयुक्तराष्ट्र के राष्ट्रपति चुने गए थे ।

महान् आदमियों के चरित्र में एक विशेषता होती है । वे ब्रज के समान दृढ़ रहते हैं । चारों ओर बवंडर उठते हैं, मूसलाधार वर्षा होती है, पत्थरों के प्रहार होते हैं, पर उनका एक रोम भी विचलित नहीं होता ।

तुर्की ने जब कोशूट को मुसलमान-धर्म ग्रहण करने की शर्त पर आश्रय देने की बात कही तब उस वीर ने कहा—“मृत्यु और शर्म, इन में से किसी एक को स्वीकार करने की उलझन में मैं कभी नहीं पड़ा । एक दिन मैं एक विशाल राष्ट्र का स्वामी था, आज अपने बेटों के लिए मेरे पास कुछ नहीं है । ईश्वर के उद्देश्य की पूर्ति होने दो, मैं मरने को तैयार हूँ । मेरे ये हाथ खाब्बी हैं, परन्तु इनपर कोई कालिमा नहीं लगी है ।

लिंकन किसी भी झूठे मुकदमे को न लेता था । एक दिन एक स्त्री ने दो सौ डालर अपने मुकदमे की फीस के रूप में दिये । मुकदमा देखने के बाद लिंकन ने कहा—“आपका मुकदमा टिक नहीं सकता, ये रुपये ले जाइए ।”

स्त्री ने कहा—“यह मुकदमा देखने की आपकी फीस है ।”

लिंकन—“नहीं, यह ठीक नहीं । मैं अपने कर्त्तव्य-पालन की फीस नहीं ले सकता ।”

मनुष्य के जीवन में उसके धन्धे से—धन कमाने से अरुढ़ी भी कोई चीज होनी चाहिए । वह चीज प्रतिभा से अधिक ऊंची और कीर्ति से अधिक टिकने वाली हो ।

यदि संसार में कोई शक्ति है जो अपने प्रभाव का अनुभव कराए बिना नहीं रहती तो वह चरित्र है । चाहे मनुष्य में शिक्षा न हो, चाहे उसमें बहुत ही थोड़ी योग्यता हो, चाहे वह अनधीन हो, चाहे समाज में

उसका कोई स्थान न हो, फिर भी यदि उसमें सचमुच महत् चरित्र है तो उसका प्रभाव जरूर पड़ेगा और उसे सम्मान प्राप्त होगा।

एक सच्ची घटना विश्व में फैले हुए एक तार को हिलाती है, सारे नैतिक ज्ञान को छूती है और संसार के कोने-कोने में पहुंच जाती है। उसकी गति ईश्वर के हृदय को भी गतिवान् कर देती है।

चौदहवें लुई ने कालवर्ट से कहा—“हम इतने बड़े धन-जन-शाली राष्ट्र का शासन करते हैं, पर छोटे-से हालैण्ड देश को नहीं जीत सके।”

मन्त्री ने नम्रता से उत्तर दिया—“महाराज, किसी देश की महानता उस देश की लम्बाई-चौड़ाई पर अवलंबित नहीं होती, बल्कि वहां के मनुष्यों के चरित्र पर आश्रित होती है।”

महापुरुषों का आचरण राष्ट्र के लिए एक विरामत है। इंग्लैण्ड के एक चमार ने, जिसकी चमड़ा कमाने की ख्याति बहुत हो गई थी, कहा था “अगर मैंने कारलाइल के ग्रन्थों का अध्ययन न किया होता तो मैं यह काम इतना अच्छा न कर सकता।” फ्रैंकलिन के कारण लन्दन की सब दूकानों को अपना व्यवहार बदल देना पड़ा। अरस्तू और टीटियन एक-दूसरे को स्फूर्ति देते थे।

एक विद्वान् का कथन है कि “यदि तुम मुझे बताओ कि तुम किसी मराहना करते हो तो मैं बतला सकता हूं कि तुम कैसे हो?” एक पुस्तक अथवा कोई कला-कृति उसका निर्माण करने वाले के विचारों में हमें डुबा दिया करती है। क्या माइकेल एंजिलो आज भी जीवित नहीं है? प्राचीन रोम के खंडहरों को देखकर हजारों दर्शक दांतों-तल्ले अंगुली दबाते हैं। क्या वाशिंगटन और अब्राहम लिंकन अब नहीं रहे? कौन देश उनके चरित्र को आदर्श मानकर नहीं पूजता?

यदि आप कल्पना कर सकते हों तो बिना मूसा के मिस्र, डेनियल-विहीन बेबीलोन, डेमास्थनीज, फीडियस, सुक्रात या प्लैटो से रहित

एथेन्स की कल्पना करें। ईसा के दो सौ वर्ष पूर्व कारथेज क्या था ? बिना सीजर सिसरो और मारकस आरेलियस के रोम क्या था ? ह्यूगो, इथासांत और नेपोलियन के बिना पेरिस क्या है ? बर्क, ग्लैडस्टन, पिट, मिल्टन और शेक्सपियर के बिना इंग्लैण्ड क्या है ?

इटली के पतन-काल की शताब्दियों में भी लोगों के मुंह से महाकवि दान्ते के शब्द निकलते थे। सिसरो और ग्राची के वचन गुलाम के हृदय में भी जीवन की उद्योति जगाते हैं। बायरन कहा करता था कि इटलीवाले ऐसे समय में भी दान्ते के बारे में इतनी अधिक बातें करते हैं, इतना अधिक लिखते हैं और विचार करते हैं। यह बात हास्यजनक तो है, लेकिन दान्ते इन लोगों की प्रशंसा का पात्र भी है। इस गिरी हुई दशा में भी ग्रीसवासी अपनी सार्वभौम प्रतिभा को भूलते नहीं हैं। हमारे दिमाग पर स्वर्ग में बसनेवाले और पृथ्वी पर रहनेवाले, दोनों ही प्रकार के मनुष्यों का असर पड़ता है। इन्हींके प्रभाव से हमारा मन तैयार होता है। हमारे धर्म को महान् बनाने में हमारे धर्म पर बलि होनेवालों का प्रभाव पड़ता है, पर हमारे कार्य ऐसे होते हैं जो उसी पूर्वकाल की परिस्थितिवालों के करने योग्य सिद्ध होते हैं।

हम तो कीड़ों के समान हैं। कीड़े जिस रंग के पत्तों और पौधों पर निवास करते हैं उसी तरह का उनका रंग हो जाता है। उसी प्रकार जैसी बातों से हमारे मन की भूख मिटाई जाती है उसी तरह के हम भी हो जाते हैं। हमारे जीवन का प्रत्येक कृत्य लोहे की कलम से हमारे ऊपर लिख जाता है। नष्ट किया हुआ अवसर, खोई हुई शक्तियाँ, गँवाया हुआ समय सदा ही हमें उलाहना देने के लिए खड़े रहते हैं। उन्हें हम किसी तरह दबा नहीं सकते। जो जैसा बोता है वह वैसा ही काटता है। बबूल के पेड़ से आम नहीं फलते।

भले आदमियों की संगति आदमी को भला बना देती है और दुष्टों की संगति बुरा बनाये बिना नहीं रहती। हम भले ही बुरे कृत्यों को गुप्त

रूप से करें और छिपकर दुष्टों से सम्बन्ध रखें, फिर भी समय आने पर ये बातें हमारे आचरण और चेहरे पर दिखाई दे ही जाती हैं। हमारे हृदय की मूर्त्तियां हमारे नेत्रों से भाँकती हैं, हमारे चाल-चलन में दीखती हैं। चेहरों पर कुटिल हृदयों की छाया कुटिल ही पड़ती है और कोई शक्ति उसे दूर नहीं कर सकती। दुराचार-पूर्ण जीवन के चेहरे के सामने कैसे चित्र आते हैं ? वहाँ आपको घृणित दृश्य विकारों की मांग और विजय के लिए होने वाला युद्ध, अनिश्चय और कष्टकारी पराजय दिखाई देगी। इसके विपरीत जिसने विकारों पर विजय पाकर संयम-पूर्ण जीवन बिताया है, जो अपनी शक्तियों को सुसंगठित रखकर आत्म-सुधार में लगा रहा, उसके चेहरे से कैसी सुन्दर ज्योति निकलती है।

मेरी दृष्टि में वही सबसे बड़ा आदमी है, वही व्यक्ति महान् है, जो मुझे मेरे आस-पास की बातों और प्रभावों के बन्धनों से मुक्त कर देता है, जो मेरी चाणी को स्वतन्त्र कर देता है और मेरे लिए सम्भावनाओं के दरवाजे खोल देता है।

क्रोध से क्रोध ही उत्पन्न होता है और ईर्ष्या ईर्ष्या को ही जन्म देती है। विकार छूत की बीमारी से किसी तरह कम नहीं।

हमरसन का कथन है कि “चरित्र सदा प्रकट हो जाता है। चोरी से कोई धनवान नहीं बनता; दान से कभी कोई कंगाल नहीं होता। थोड़ा-सा भी झूठ शीघ्र प्रकट हो जाता है। यदि तुम सच बोलोगे तो सारी प्रकृति और सब जीव तुम्हारी सहायता करेंगे।” चरित्र ही गरीब आदमी की पूंजी है।

किसी युग का इतिहास उस युग के राजाओं का इतिहास नहीं कहा जा सकता। उस युग के सेनापतियों की विजयें तोप-बन्दूकों की कहानी नहीं हो सकतीं। सैकड़ों युद्धों से मानव-जाति का कुछ लाभ नहीं होता। सच्चा इतिहास महान् पुरुषों के चरित्रों से भरा रहता है, जिन्होंने आने वाली सन्तानों के लिए अच्छी-अच्छी चीजों का निर्माण किया, जिन्होंने

नहरें तैयार कीं, समुद्र से समुद्र को जोड़ दिया, सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाये, अच्छे-अच्छे ग्रन्थों की रचना की, सत्य को खोज निकाला। ऐसी बातों का वर्णन राजाओं की सभा और रङ्गमहल के वर्णनों से हजार गुना अच्छा है। वॉलटेयर महान् पुरुषों को पहला और वीरों को दूसरा स्थान देता था। उसकी परिभाषा में महान् पुरुष संसार के लाभार्थ कार्य करते हैं और प्रदेशों को विजय करने वाले वीर कहलाते हैं।

मिश्र के सतयुग के एक शासक ने कहा है—“मैंने किसी बालक को कष्ट नहीं दिया, किसी विधवा को नहीं सताया, किसी किसान के साथ बुरा बर्ताव नहीं किया। मेरे समय में भिखारी नहीं थे। कोई भूखों नहीं मरता था। जब अकाल पड़ता था तब मैं अपने देश की सीमा तक की सारी भूमि को जुतवा-बोवा ढालता था और उसके निवासियों के भोजन का प्रबन्ध करता था। मेरे राज्य में विधवा को कभी मालूम नहीं होने पाता था कि वह अनाथ हो गई है।” क्या कोई शासक इस बीसवीं शताब्दी के सभ्यतामय समय में इसके एक अंश को भी करने का दावा कर सकता है ?

दुनिया में ऐसे आदमी हैं जो ईमानदारी को अपना एकमात्र साथी बनाते हैं। अपने जीवन में उसे वे ओत-प्रोत कर डालते हैं। उनकी वाणी से, उनके कार्य से, उनके रहन-सहन से ईमानदारी टपकती है। उनके हाथ ईमानदारी से सच्चे होते हैं। वे उसे प्यार करते हैं। उससे वे सुन्दर, कुलीन, महान् और बहादुर बन जाते हैं।

—तेरह—

यथार्थता

“यथार्थता और ईमानदारी दोनों सगी बहनें हैं।”—इमरसन

“अधूरे काम मैं पसन्द नहीं करता। यदि वे उचित हैं तो पूरे मन से करो, अनुचित हैं तो उन्हें छोड़ दो।” —गिलपिन

“यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की अपेक्षा अधिक अच्छी किताब लिख सकता है, अच्छा भाषण दे सकता है, अथवा अधिक अच्छी चीज बना सकता है, तो यदि वह जंगल में अपना मकान बनायेगा तो भी संसार उसके द्वार तक रास्ता बना लेगा।”

“महाशय, यह घड़ी मेरी बनाई हुई है। आप इसे चाहे जहां ले जाइए और सात बरस के बाद लौटकर आइए। यदि आप पांच मिनट का भी अन्तर पायें तो मैं आपके दाम वापस कर दूंगा।” कहते हुए ग्राहम ने अपने ग्राहक को घड़ी दी। सात वर्ष के बाद वह आदमी भारतवर्ष से लौटा और कहा—“लीजिए, मैं आपकी घड़ी लाया हूँ।”

ग्राहम—“हां, मुझे शर्त याद है। कहिए कैसी रही?”

ग्राहक—“मेरे पास यह सात वर्ष रही और मैंने पांच मिनट से अधिक का अन्तर पाया।”

ग्राहम—“अच्छा तो मैं आपके दाम लौटाये देता हूँ।”

ग्राहक—“लेकिन मैं घड़ी तो आपको दूंगा नहीं; चाहे आप इसकी दसगुनी कीमत दें।”

“पर मैं अपने वचन को तोड़ नहीं सकता।” यह कहकर ग्राहम ने घड़ी ले ली, दाम वापस दे दिये और घड़ियों को दुरुस्त करने में लग गया।

ग्राहम ने टामपियन से यह काम सीखा था। टामपियन बड़ा ही होशियार घड़ीसाज था। उसका नाम घड़ी की उत्तमता का प्रमाण-पत्र था। एक समय एक आदमी ने एक घड़ी उसे सुधारने के लिए दी। वह नकली थी और उसपर टामपियन का नाम लिखा था। देखते ही उसने हथौड़े से उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले और नई घड़ी देते हुए कहा—“लीजिए, यह मेरी बनाई हुई घड़ी है।”

ग्राहम ने कई चीजों का आविष्कार किया। ग्रीनविच की वेधशाला में उसकी बनाई हुई घड़ी लगी है जो दो सौ वर्षों से काम दे रही है। पन्द्रह महीने के बाद एक बार उसे सुधारना पड़ता है। टामपियन और ग्राहम मृत्यु होने पर वेस्टमिन्स्टर के गिरजे में दफनाये गए।

समुद्र में नौका छोड़ देने पर नाविक अपने मार्ग को बिना किसी यन्त्र के निर्दिष्ट नहीं कर सकता। दूर-दूर की यात्रा करने की समस्या सामने आते ही लोगों को एक ऐसे यन्त्र की जरूरत मालूम हुई जो कम-से-कम उन्हें इतना बता सके कि वे पेरिस, ग्रीनविच अथवा वाशिंगटन के किस ओर हैं। स्पेन की सरकार ने सोलहवीं शताब्दी में देशान्तर बतलाने वाला यन्त्र बनाने वाले को एक हजार क्राउन* देने की घोषणा की। दो सौ वर्ष बाद इंग्लैण्ड की सरकार ने भी विज्ञापन दिया कि जो व्यक्ति ऐसा यन्त्र बनायेगा, जिसके द्वारा स्वदेश से छः महीने पहले निकला हुआ जहाज अपने देशान्तर को ६० मील के घेरे में बतला सके उसे ५ हजार पाउंड इनाम दिया जायगा; ४० मील के घेरे में बतलाने वाले को ७५०० पाउंड, ३० मील के घेरे में बतलाने वाले को १० हजार तथा बिलकुल ठीक बतलाने वाले को २० हजार दिया जायगा। संसार भर के घड़ीसाजों ने ये इनाम पाने के लिए बड़े प्रयत्न किये। सन् १७६१ ई० तक किसीको कुछ न मिला। उसी वर्ष जॉन हेरिसन ने अपने क्रोनोमीटर यंत्र को परीक्षा के लिए उपस्थित किया। १४७ दिन

* एक क्राउन ५ शिलिंग अथवा ३ रुपये १२ आने के बराबर होता है।

की यात्रा में ११ सेकन्ड का अन्तर निकला और उसे २० हजार पौंड का पुरस्कार प्राप्त हो गया। इस व्यक्ति ने ४० वर्ष तक अपना यन्त्र बनाने में श्रम किया था और उसके हाथ तथा इन्द्रियाँ भी उसके यन्त्रों के समान ही सूक्ष्म संवेदनासूचक हो गई थीं।

एक बढ़ई ने एक लुहार से कहा—“मेरे लिए एक अच्छा-सा हथौड़ा बना दो। हम लोग छः आदमी बाहर से काम करने आये हैं। मेरा हथौड़ा भूल से घर पर रह गया है।”

लुहार ने कहा—“बना दूंगा, पर मुझे चीज अच्छी चाहिए।”

कुछ दिन में लुहार ने अच्छा हथौड़ा बनाकर उसे दिया। लोगों को वह इतना पसन्द आया कि दूसरे दिन और लोग भी हथौड़ा बनवाने के लिए आए। एक ठेकेदार ने भी कुछ हथौड़ों का आर्डर दिया, पर साथ ही यह भी कह दिया कि जरा पहले बनाए हुए हथौड़ों से अच्छे बनाना।

यह बात सुनकर लुहार ने कहा—“मैं उनसे अच्छे नहीं बना सकता। जब मैं कोई चीज बनाता हूँ तो उसमें कोई कमी नहीं रखता, चाहे कोई भी आकर बनवाये।” शीघ्र ही लोग उसके यहां से हथौड़े बनवाने लगे और उसका नाम चारों ओर फैल गया। वह चाहता तो कुछ दिनों में धनवान हो जाता। पर वह हमेशा अपनी बनाई हुई चीजों की उन्नति में लगा रहता था। उसके नाम की चीज बिना आनाकानी के बिक जाती थी। सचाई एक शक्ति है और वह संसार में मनुष्य का सर्वोत्तम विज्ञापन है।

एक बार एक बड़े भारी व्यापारी से एक ग्राहक ने कहा—“महाशय, आपके माल का दाम दूसरी जगह की बनिस्बत अधिक रहता है।”

उत्तर मिला—“निस्सन्देह। हमारा उद्देश्य तो अच्छा माल देने का रहता है। हम नहीं चाहते कि चाहे जैसा माल तैयार करके जिस-तिस भाव पर लोगों के गले मढ़ दें। हमारी हार्दिक इच्छा रहती है कि हमारा माल सर्वोत्तम हो और किसी ग्राहक को यह कहने का मौका न आये कि

अमुक व्यापारी का माल खराब था ।”

एक बार एक चित्रकार ने ऑलिवर क्रामवेल का चित्र बनाया । चित्रकार ने उसे प्रसन्न करने के लिए चेहरे पर के एक मस्से को नहीं बनाया । यह देखकर उस वीर ने कहा—“जैसा मैं हूँ वैसा ही बनाइए ।”

कामन्स-सभा के एक सदस्य ने वाद-विवाद करते समय, अपने प्रतिद्वन्द्वी से रुष्ट होकर कहा—“मुझे याद है, एक समय तुम मेरे पिता के जूतों पर पालिश किया करते थे ।” उस स्वावलम्बी वीर ने बड़े नम्रभाव से हजारों आदमियों के सामने कहा—“आपका कहना ठीक है, पर बताइए, क्या मैं अच्छी तरह पालिश नहीं करता था ?”

एक आदमी ने कहा—“अच्छे और बुरे नील को पहचानना कठिन नहीं है । एक डुकड़ा लो और उसे पानी में डाल दो । यदि नील अच्छा होगा तो या तो तैरेगा या डूब जायगा । मुझे यह ठीक तौर से नहीं मालूम है । लेकिन कोई बात नहीं, तुम प्रयोग करके तो देखो ।” वाह, कैसी उम्दा सलाह है !

विलिंगटन बहरेपन के कारण बड़े दुःखी थे । उन्होंने एक होशियार डाक्टर से सलाह ली । उसने एक बड़ी तेज दवा उनके कानों में डाल दी जिससे उनका जीवन भी खतरे में पड़ गया । डाक्टर बहुत डरा और अपनी भूल पर बड़ा पश्चात्ताप किया । साथ ही यह भी कहा कि “यह भूल मेरे जीवन को नष्ट कर देगी ।”

विलिंगटन ने कहा—“मैं कभी इस विषय में कुछ न करूँगा ।”

डाक्टर—“फिर आप मुझे अपने यहां रोज आने दीजिए, जिससे लोगों का विश्वास मुझपर से न उठे ।”

इस बात को विलिंगटन ने स्वीकार नहीं किया । उन्होंने कहा—“नहीं, यह झूठ बोलना कहलायेगा ।”

एक लड़के ने कहा—“पिताजी, मैंने बहुत-से कुत्ते देखे । ५०५ के

लगभग होंगे—बिल्कुल सच बात है—कल रात को—अपनी सड़क पर।”

बाप ने कहा—“इतने कभी नहीं हो सकते।”

लड़का—“अच्छा, सौ तो जरूर होंगे।”

बाप—“भूठ है, हमारे गांव में तो सौ कुत्ते हैं ही नहीं।”

लड़का—“दस से कम तो हो नहीं सकते।”

बाप—“मैं तुम्हारी दस की बात पर भी विश्वास नहीं कर सकता, क्योंकि जिस दड़ता से तुम २०० की बात कह रहे थे उसी दड़ता से दस की बात भी कह रहे हो।”

लड़का—“पिताजी, मैंने अपने कुत्ते तथा एक दूसरे कुत्ते को तो अवश्य ही देखा था।”

इस तरह की अतिशयोक्तिपूर्ण बात कहने के लिए लड़कों की हम भर्त्सना तो करते हैं, पर क्या हम खुद ही नहीं कहा करते—“ऐसा पानी कभी नहीं बरसा था”; “संसार में ऐसी बिल्खी है ही नहीं”; “सबसे अधिक भयानक गर्मी आज ही पड़ी है”? किसी भी चीज को सर्वोत्तम या बहुत अच्छी कह देना हमारे लिए मामूली बात है। इस तरह हमारी नस-नस में भूठ भरा हुआ है। इसे दूर करना ही सुखी और शान्त जीवन व्यतीत करने की पहली सीढ़ी है।

मानव-जाति सरल, आडम्बररहित सत्य को बड़े आदर की दृष्टि से देखती है। उससे चरित्र की दृढ़ता प्रकट होती है। दूसरे को अशुचिकर प्रतीत होने के डर से अच्छी बातें कहना, सत्य कहने के बदले बात को आवश्यकतानुसार घुमा-फिराकर कहना, दो अर्थ प्रकट करने वाली शब्द-रचना करना, अतिशयोक्ति का आश्रय लेना, दिखाने के लिए दूसरे के विचारों से सहमत होने का भाव दर्साना, आंखों से, मुस्कराहट से तथा हाव-भाव से हृदय के भावों को छिपाना, किसी बात को न जानने पर भी जानकारी दिखाने की कोशिश करना—ये सब खोखलेपन और

अमर्य के भिन्न-भिन्न रूप हैं और इनमें सचाई की कमी प्रकट होती है।

प्रकृति के कार्यों में कभी कहीं भी भूल नहीं दीखती और न यथार्थता का अभाव दिखाई देता है। गुलाब उसी तरह फूलते हैं, कण उसी तरह बनता है जिस तरह से वे सृष्टि के प्रारम्भ काल से फूलते-फलते चले आये हैं। एक रानी के बाग को सुशोभित करने वाला गुलाब अपने सौन्दर्य और सुगन्ध में एकान्त, निर्जीव झाड़ी में उत्पन्न हुए गुलाब से क्या अधिक सुन्दर होता है ? पृथ्वी के गर्भ में बनने वाले कण उसी आकार के बनते हैं जिस आकार के पृथ्वीतल पर तैयार होते हैं। एक बर्फ का छोटा-सा टुकड़ा—क्षण-भर में जल के अपार सागर में विलीन हो जाने वाला सुन्दर टुकड़ा—कैसी सुन्दरता से बनाया जाता है ! उसकी निर्मल मनोहारिता को देखकर हृदय सोचने लगता है कि क्या यह हीरे-सा टुकड़ा किसी प्रदर्शनी की शोभा बढ़ाने के लिए बना है ! नक्षत्र और तारे तूफान की गति से आकाश-मण्डल में घूमते हैं। हजारों मील प्रति सेकंड की गति से दौड़ने वाले नक्षत्र कितनी सावधानी से चलते होंगे, इसका क्या किमीको अनुमान है ? जरा-सी भूल हो जाने से एक तारा दूसरे से टकरा जायगा, सारी सृष्टि में उथल-पुथल मच जायगी और विश्व में प्रलय का दृश्य रच जायगा। परन्तु प्रकृति की रचना में कहीं भूल नहीं दीखती। ग्रहण ठीक समय पर लगते हैं, ऋतुएं समय पर ही आती हैं, दिन और रात ठीक घड़ी पर ही आते-जाते हैं। प्रकृति की ये सब घटनाएँ ईश्वर के कार्यों की यथार्थता को स्पष्ट रूप से बतलाती हैं।

जिन ज्ञांगों की आंखें और दिमाग बारीकी से देखने के आदी नहीं हैं उनसे संसार का कोई विशेष कार्य नहीं होता। बड़ी-बड़ी दूरबीनों का आविष्कार हो जाने पर भी ज्योतिष की विशेष उन्नति उन्हीं ज्ञांगों के हाथों हुई है जिनके पास ऐसे यन्त्र नहीं थे। उनके पास छोटे-छोटे यन्त्र थे, परन्तु उन यन्त्रों के पीछे बड़ी तीक्ष्ण एवं कुशल आंखें थीं।

नीन फुट व्यास के एक कांच को तैयार करने में ६० हजार डाखर

(करीब २ लाख रुपये) लग जाते हैं। उसको तैयार करना इतना कठिन है कि केवल मनुष्य का हाथ ही उसपर आखिरी पालिश कर सकता है। तनिक भी अधिक हाथ फेले से 'लेन्स' बिगड़ जाता है। एलबन क्लार्क इस तरह के लेन्स तैयार करने में बड़ा निपुण था। परीक्षा करते समय काम करने वालों ने जरा लेंस को एक ओर घुमा दिया। यह देखकर क्लार्क ने कहा—“ठहरो, दूसरी परीक्षा करने के पहले उसे ठण्डा हो जाने दो। वह इतना कोमल है कि तुम्हारे हाथों की गर्मी का असर उसपर पड़ जायगा।”

इसी तरह की सूक्ष्मता और सावधानता के कारण क्लार्क का नाम आज संसार-भर में फैला हुआ है।

कांग्रेस का अधिवेशन समाप्त होने के समय एक सज्जन ने वेस्टार् महोदय से एक प्रश्न पर बोलने के लिए कहा। उन्होंने उत्तर दिया—“मैं इस समय अन्य कार्यों में ऐसा फंसा हूँ कि मुझे इस विषय पर तैयारी करने का समय नहीं।”

“परन्तु आप तो हरेक विषय पर बड़ी उत्तमता से बोलते हैं।”

“हां, यही तो कारण है कि मैं इस विषय पर नहीं बोल सकता। जबतक किसी विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं कर लेता जबतक मैं नहीं बोलता और इस समय वैसा करने का मुझे अवकाश नहीं है। अतएव मैं आपकी बात स्वीकार नहीं कर सकता।”

एक प्रसिद्ध लेखक ने लिखा है—“जो कुछ ठीक है उसे अपनी पूरी सावधानी, शक्ति और विश्वास के साथ करना चाहिए। हमारे पास ऐसी कोई तराजू नहीं है जिसके द्वारा हम अपने कर्तव्यों के प्रति बरती हुई विश्वसनीयता को तौल सकें अथवा यह जान सकें कि ईश्वर की दृष्टि में उनकी सापेक्ष विशेषता क्या है। जो बात हमें मामूली दीखती है वह महत्त्वपूर्ण हो सकती है और उसपर किसीके जीवन-भरण का प्रश्न अवलंबित रह सकता है।”

दांते ने नरक का वर्णन इतनी सजीवता से किया था कि लोग उसे देखकर कहा करते थे—“देखो यह आदमी नरक हो आया है।”

कैनन फेरर का कथन है कि जीवन में एक ही वास्तविक असफलता है, और वह है मनुष्य जिस बात को जैसा भी जानता है उसमें उसका तल्लीन न रहना।

लेओनार्डो अपने प्रसिद्ध चित्र ‘लास्ट सपर’ को तैयार करते समय एक-एक रंग देने के वक्त मिलन का एकाध चक्कर लगा आया करता था। पोप प्रत्येक पंक्ति को दो बार लिखता था। गिबन ने अपने ‘संस्मरणों’ को नौ बार लिखा और अपने इतिहास के प्रथम अध्याय को अठारह बार लिखा। मान्टेस्कू अपनी एकरचना के विषय में लिखता है कि “आप तो कुछ घण्टों में पढ़ डालेंगे—परन्तु इसके लिखने में मुझे इतना समय लगा कि मेरे बाल सफेद हो गए।” उसने उसे अपने दिन के अध्ययन का विषय और रात के स्वप्न की सामग्री बना लिया था, वही उसके उद्देश्य का आदि और अन्त था।

एक सुविज्ञ प्राणि-शास्त्री ने सोचा कि थोड़े समय तक अगासीज के पास अध्ययन करने से मैं अपने ज्ञान को पूर्ण कर लूंगा। वह उनके पास आया। उन्होंने उसे एक मछली दी और कहा—“अपनी आंखों का उपयोग करो।” दो घण्टे के बाद उन्होंने अपने विद्यार्थी की परीक्षा की और कहा—“तुमने सचमुच मछली को अभी तक नहीं देखा, तुम्हें फिरसे प्रयत्न करना पड़ेगा।”

दूसरी परीक्षा करने पर उन्होंने कहा—“तुम्हारे कार्य से मालूम होता है कि तुम अपनी आंखों का उपयोग नहीं कर सकते।”

इन शब्दों को सुनकर विद्यार्थी की प्रयत्न करने की इच्छा जाग्रत हो गई और वह अपने कार्य में इतना मग्न हो गया कि जब प्रोफेसर ने फिर कमरे में प्रवेश किया तो उसे उनकी उपस्थिति का पता तक न चला। यह देखकर अध्यापक ने कहा—“ठीक है। बस, अब मैं

समझता हूँ कि तुम अपनी आंखों से काम ले सकते हो।”

सन् १८०५ ई० में नेपोलियन ने ब्रिटिश चैनल के पास के कैम्प तोड़कर अपने विशाल दल को डेन्यूब की ओर बढ़ने की आज्ञा दी। उसके दिमाग में बड़ी-बड़ी योजनाएं चल रही थीं। परन्तु वह आज्ञा देकर ही नहीं रह गया। उसने किसी भी कार्य की छोटी-छोटी बातें अपने अफसरों पर नहीं छोड़ीं। जिन बातों को उसके मतहत बिलकुल छोटी और ध्यान देने के अयोग्य समझकर उनकी उपेक्षा करते थे उनका भी उसे सदा ध्यान रहता था। चढ़ाई का बिगुल बजने के पहले उसने प्रत्येक सेना के जाने का मार्ग निश्चित कर दिया। किस सेना को कब किस स्थान पर पहुंच जाना चाहिए, यह भी तय हो गया। कितने बजे वे अपना पड़ाव छोड़ें और कितने बजे अपने लक्ष्य पर जा डटें, इत्यादि आदेशों का अक्षरशः पालन करने का उसका हुक्म था। इस सबका फल यह हुआ कि उसने आस्टेरलिन्स की विजय प्राप्त करके यूरोप के भाग्य पर दस वर्ष के लिए सुहर लगा दी।

सर वाल्टर स्काट जब किसी प्राचीन इमारत को देखने जाते थे तो अपनी नोटबुक में वहां पाई जाने वाली जंगली घासों के नाम लिख लेते थे, फूलों का वर्णन नोट कर लेते थे और कहा करते थे कि इसी तरह से कोई भी लेखक वनस्पति-शास्त्र का ज्ञाता हो सकता है।

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक मेकाले अपने प्रत्येक वाक्य को सर्वोत्तम रूप में लिखे बिना सन्तुष्ट न होता था।

बारीकी से काम करने वालों को सभी पसन्द करते हैं। मालिक हर बात में अपने नौकर के पीछे कैसे लगा रह सकता है। यदि उसे दिन-मर नौकर को काम के विषय में बतलाना पड़े तो उसे स्वयं ही कर लेने में सुभीता होगा। ऐसे नौकर को रखना कोई पसन्द नहीं करता। परन्तु जो लोग हाथ में लिये हुए कार्य का करने में अपनी समस्त शक्तियां लगा देते हैं, दिमाग खर्च करते हैं और सूक्ष्मता से काम लेते हैं, उन्हें

हर जगह काम मिल ही जाता है। एक मामूली चीज को उत्तमता से बनाने में जो सफलता और ख्याति होती है वह एक बड़ी चीज को अधूरी बनाने में कभी प्राप्त नहीं होती।

फील्ड्स का कथन है—“बहुत-सी स्त्रियां ऐसी हैं जिनके टांके कच्चे रहते हैं, जिनके सिये हुए बटन जरा-से फटके में निकल जाते हैं। लेकिन बहुत-सी ऐसी भी हैं जो उन्हीं सुइयों और धागों का उपयोग करके बटनों की इतनी उत्तमता से टांक देती हैं कि कपड़े फट जाते हैं पर बटन नहीं निकलते।”

जीवन में असफल होने वालों की कब्र पर ‘असावधानता’, ‘लापरवाही’, ‘आलस्य’ आदि शब्द लिखे जाते हैं। असावधानता और अयथार्थता से कितने ही क्लर्क, अध्यापक, डाक्टर आदि अपनी प्रतिष्ठा और स्थान खो बैठते हैं।

जोना चिकेरिंग ने जिस दिन से प्यानो बनाना शुरू किया था उसी दिन से वह अपने परिश्रम और सावधानता के लिए प्रसिद्ध हो गया था। बाजा बजाने में वह किसी भी बात को उपेक्षणीय न मानता था। बारीकी और ज्ञान की तुलना में समय और परिश्रम को वह कुछ न समझता था। शीघ्र ही उसने प्यानो का एक कारखाना खोल दिया। उसने ऐसे बाजे बनाने का ह्रादा किया जो बहुत थोड़े परिश्रम में मधुर राग निकाल सकें, किसी भी आबहवा का जिनपर असर न हो सके और जिनमें से सदा एक-सा सुर निकलता रहे। उसका प्रत्येक बाजा पहले बाजे से एक कदम आगे ही रहता था। जीवन के अन्तकाल तक वह अपने बाजे में सुधार करता रहा। उसने अपना काम किसी दूसरे के हाथ में नहीं सौंपा। किसी बात में अनियमितता को स्थान नहीं था। सारे प्रतिद्वन्द्वियों को उसने हरा दिया था। चारित्र्य का, व्यापारिक और नैतिक, दोनों दृष्टियों से मूल्य है।

जो जफ टर्नर के पिता की इच्छा थी कि वह नाई का काम करे, परन्तु चित्रकला की ओर उसकी प्रवृत्ति बहुत तीव्र थी, इसलिए आना-

कानी करते हुए उसे यह कार्य करने की अनुमति मिल गई। वह शीघ्र ही इस कार्य में कुशल हो गया। उसके पास साधन नहीं थे। फिर भी वह पंचांगों और 'गाइड-बुक' (किसी नगर के दर्शनीय स्थानों का वर्णन करने वाली पुस्तक) के लिए चित्र बनाया करता था। यद्यपि उसे बहुत कम काम मिलता था फिर भी उसके काम में कोई असावधानता दृष्टिगोचर न होती थी। उसके काम का मूल्य मिलनेवाले पारिश्रमिक से कई गुना अधिक होता था। धीरे-धीरे कीमत बढ़ने लगी और उसे ऊँचे दरजे का काम मिलने लगा। अब उसके परिश्रम का भी ठिकाना न रहा। वह बड़ी बारीकी से संसार के बाजार के लिए अपनी कृतियों को तैयार करने लगा। उसके चित्रों से सजीवता फूटी पड़ती थी। उसके प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बड़े-बड़े चित्रकारों को भी शर्मिन्दा करते। जो महत्त्व साहित्य में शेक्सपियर को प्राप्त है वही टर्नर को इस क्षेत्र में प्राप्त है।

किसी भी काम के करने में यथार्थता और सावधानता की आदत ढाल लेनी चाहिए। यथार्थता का अर्थ चारित्र्य और चारित्र्य का अर्थ शक्ति होता है।

—चौदह—

अध्यवसाय

“प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असम्भव रहता है।”—कारलाइल

“हमेशा आगे बढ़ते रहने और विश्वास करने से कठिनाई दूर हो जाती है और दिखाई देने वाली असम्भाव्यता नष्ट हो जाती है।”
—जेरमी कोलियर

“पानी-जैसी चंचलता से मनुष्य ऊंचा नहीं उठता।”—बर्क

शेरिडन की पार्लमेण्ट में भाषण कर चुकने के बाद एक ने कटाक्ष करते हुए उससे कहा—“मुझे कहते हुए अफसोस होता है कि यह कार्य आपकी शक्ति के बाहर है।” शेरिडन थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर मुंह ऊंचा करके उसने कहा—“जनाब, यह काम मेरी शक्ति के भीतर है और इसकी सचाई आप शीघ्र ही देखेंगे।” इसी शेरिडन के बारे में हेस्टिंग्स के विरुद्ध किये गए भाषणों को सुनकर प्रसिद्ध वक्ता फाक्स ने कहा था कि ऐसा भाषण कामन्स-सभा में आज तक कभी नहीं हुआ।

कारलाइल ने ठीक ही कहा है कि पहले अपने काम को जान लो, फिर उसे करो और उसके करने में अपनी सारी ताकत लगा दो।

किसी भी कार्य की सफलता के लिए यह बहुत जरूरी है कि जिस काम को हम हाथ में ले लें उसीमें अपनी सारी शक्ति लगा दें। केनार्ल्ड कहता है कि कोई व्यक्ति यदि किसी भी कला में श्रेष्ठ होना चाहता है तो उसे चाहिए कि अपने मन की सब शक्तियों को उसीमें लगा दे। सोकर उठने से लगाकर रात को बिछौने पर जाने तक केवल उसीका विचार करे। यही बात टर्नर ने अपनी सफलता की कुंजी बताते समय कही थी कि मेरे पास कठिन परिश्रम के सिवाय कोई दूसरा तरीका नहीं है।

आदमी अक्सर इस उलझन में पड़ा रहता है कि यह करूँ या वह

और इसीमें सफलता से हाथ धो बैठता है। वह एक बार यह तय कर लेता है कि इस कार्य को करूंगा; लेकिन फिर दोस्त की सलाह से हरादा बदल देता है। एक विचार से दूसरे विचार की ओर बढ़ता है, एक तरीके को छोड़कर दूसरे तरीके को पकड़ता है। हवा का हरेक झोंका उसे अपनी ओर खींच लेता है। ऐसे व्यक्ति से संसार का कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। किसी एक पथ में अग्रसर होने के बदले वह अपने स्थान से एक इंच आगे नहीं बढ़ सकता। इतना ही नहीं बल्कि वह सब बातों में पिछड़ता ही जायगा।

इसके विपरीत जो आदमी पहले दीर्घ दृष्टि से विचार एवं संकल्प करके किसी काम में लगना है, अध्यवसाय से छोटी-बड़ी कठिनाइयों को पार कर जाता है और हिम्मत नहीं हारता, वह हरेक क्षेत्र में—हरेक काम में ऊंची-से-ऊंची जगह प्राप्त कर लेता है।

सतत परिश्रम के द्वारा ही मिस्र के मैदान में पिरामिड तैयार किये गए। सतत परिश्रम के द्वारा ही यरूशलेम के विशाल और भव्य मन्दिर बने चीन-साम्राज्य की सीमा का रक्षण करने वाली दीवार खड़ी की गई, बादलों से ढके हुए आल्प्स पर्वत पर चढ़ाई हुई, विशाल और तूफानी एटलाण्टिक महासागर का मार्ग खुला, जंगल और पहाड़ों को काटकर नई दुनिया में नगर, राज्य और राष्ट्रों का निर्माण हुआ। उद्योग ने संगमरमर की चट्टानों को सुन्दर मूर्तियों में परिवर्तित किया है और धातु पर अदृश्य और छायामयी वस्तुओं का निर्माण किया है। उद्योग के द्वारा ही हजारों मशीनें चलती हैं। रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि इधर-उधर दौड़ने लगे हैं। दूरी का प्रश्न ही मिटा जा रहा है। उसीने विशाल चट्टानों को छेदकर सुरंगें तैयार की हैं। सागर की छाती को जहाजों से पाट दिया है और अज्ञात देशों को ढूँढ़ निकाला है। उसने प्रकृति को विज्ञान के अगणित रूपों में परिवर्तित कर दिया, उसे नियमों का पाठ पढ़ाया, उसकी भविष्य की हलचलों का ज्ञान प्राप्त किया, जिसपर कोई न जा सका। ऐसे स्थानों का परिमाण निकाला,

अनन्त लोहों के समूह को गिन और उनके अन्तर, आकार एवं गति का पता लगाया ।

कौड़ी-कौड़ी करके आने वाला पैसा जल्दी से आने वाले रुपये की अपेक्षा अधिक टिकाऊ होता है । धीरे-धीरे चलने वाला घोड़ा दौड़ के घोड़े से अधिक लम्बी और निश्चित यात्रा कर सकता है । इसी प्रकार प्रतिभा तीव्र गति से आगे बढ़ती है, विचलित हो जाती और अन्त में थक जाती है । जीवन की घटनाओं और विजयों का भी यही हाल है । परिश्रमी मनुष्य की अन्तिम चोट विजय की सोमा पर पड़ुंचा देती है ।

एक दिन एक पत्र-प्रतिनिधि ने प्रसिद्ध विज्ञान-शास्त्री टामस एडिसन से पूछा—“क्यों जनाब, क्या आपके सारे आविष्कार उच्च प्रेरणाओं के परिणाम हैं ? रात को जब आप जागते हैं तब क्या उन्हीं-को सोचा करते हैं ?”

“नहीं भाई, केवल ग्रामोफोन को छोड़कर करने लायक और कोई भी काम मैंने अचानक नहीं किया । मेरे सब आविष्कार सतत प्रयत्नों के फलमात्र हैं । पहले मैं देख लेता हूँ कि कौन-सी बात लाभजनक होगी और फिर जान का मोह छोड़कर उसके पीछे पड़ जाता हूँ । जिस बात को मैं शुरू करता हूँ वह सदा मेरे दिमाग में रहती है और जब-तक वह पूरी नहीं हो जाती, मुझे चैन नहीं पड़ता ।”

इसी तरह जो व्यक्ति अपनी सारी शक्तियों को एक कार्य में लगा देता है उसे सफलता अवश्य मिलती है । इसके अतिरिक्त यदि उसमें योग्यता और बुद्धि है तो उसे विजय मिले बिना नहीं रहेगी ।

बुलवर ने किस प्रकार देव से युद्ध करके अपने भाग्य को बदल दिया ? उसका पहला उपन्यास असफल रहा । उसकी प्राथमिक कविताएं अच्छी सिद्ध न हुईं । उसके यौवन-काल के भाषणों ने विरोधियों को उसकी खिली उड़ाने का मौका दिया । परन्तु उसने अपनी असफलता हार और व्यंग्य-उपहास के बादलों को भी अपनी चमक दिखाई ।

प्रसिद्ध इतिहासकार गिबन ने अपने ‘रोम-साम्राज्य का पतन’ नामक ग्रन्थ की रचना में २० वर्ष लगाये । वेब्स्टर को अंग्रेजी का कोष तैयार

करने में २६ वर्ष लग गए। शब्दों और परिभाषाओं के संग्रह में उसने कैसे सराहनीय धैर्य का परिचय दिया। अमेरिका का इतिहास लिखने में जार्ज बेनक्राफ्ट ने २६ वर्ष लगाये थे। प्राचीन राष्ट्रों की वंश-परम्परा का हाल पन्द्रह बार लिखा था। टिटन ने अपनी रचना पाँचवें चार्ल्स के पास भेजते हुए लिखा था कि इसे लिखने में सात वर्ष लगे हैं। जार्ज स्टिफेंसन ने १५ वर्ष रेलगाड़ी का सुधार करने में खर्च किये। वाट ने बीस वर्ष तक भाप-इंजन का अध्ययन किया था। हारवे ने आठ वर्ष शरीर की रक्त-संचालन क्रिया का पता लगाने में व्यय किये। उसके साथी उसे पागल कहा करते थे। २५ वर्ष तक लोगों की गालियाँ और कटाक्ष सहने के बाद उसके आविष्कार को डाक्टरों ने अपनाया।

प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में शक्ति मिलती है, क्योंकि विरोध से प्रतिकार करने की अधिक-से-अधिक ताकत पैदा होती है। एक बाधा को दूर करने से उसमें कठिन दूसरी बाधा को दूर करने की शक्ति आ जाती है।

कोलम्बस ने कहा—“जब सूर्य और चन्द्रमा गोल हैं तब पृथ्वी गोल क्यों नहीं हो सकती?”

एक आदमी बोल उठा “जब पृथ्वी गेंद के समान गोल है तब वह लटकी किसके सहारे है?”

कोलम्बस—“सूर्य और चन्द्रमा को कौन थामे हुए है?”

एक पादरी ने कहा—“लेकिन यह सिद्धान्त ही बाइबिल के विरुद्ध है। बाइबिल कहती है कि आकाश तम्बू के समान ऊपर तना है और वह चपटा है, उसे गोल कहना धर्म की अवमानना करना है।”

यह सुन निराशा से कोलम्बस ने अपना देश छोड़ दिया और सातवें चार्ल्स की शरण लेनी चाही। परन्तु उसी समय एक धीमी आवाज उसके कानों में पड़ी। एक पुराने दोस्त ने रानी इजाबेला को सुझाया कि इस मांझी का कथन सच हो तो थोड़े-से खर्च में आपकी बड़ी ख्याति ही जायगी और आपको भी श्रेय मिलेगा। तब रानी ने हिम्मत करके

कहा—“अच्छा, बुलाओ उसको। मैं अपने निज के हीरे-जवाहरात गिंची रखकर उसे रुपये दूंगी।”

कोलम्बस लौटा और उसके साथ ही दुनिया भी लौट पड़ी। कोई नाविक उसके साथ जाना न चाहता था। मौत के मुंह में किमे जाने की पड़ी थी? धुंधली-सी आशा के प्रकाश में अपना जीवन फेंक देनेवाले वीर संसार में बिरजे ही हांते हैं। फिर भी राजा और रानी के जोर देने पर कुछ लोग तैयार हुए।

तीन दिन और रात ‘मिल्टा’ नाम का एक छोटा सा जहाज महा-सागर की लहरों से टकर लेता रहा। ऊपर आकाश और नीचे आकाश से बातें करने वाली लहरें, चारों ओर अनन्त जलराशि! ऐसे विकट समय में सहसा एक मस्तूल खराब हो गया। मांफियों ने बलवा करना चाहा और देश को लौट जाने पर जोर देने लगे। परन्तु उद्योगी और दृढ़-निश्चयी कोलम्बस कब हटने वाला था? उसके जीवन का एक काम, एक लक्ष्य और एक आशा थी। उसने साथियों को भारत की धनराशि और हीरे-जवाहरात का लोभ दिया। केनरीज द्वीप के २०० मील दूर पश्चिम में एक स्थान पर कुतुबनुमा यंत्र बिगड़ गया और उसकी सुई ने उत्तरीय ध्रुव को बताना बन्द कर दिया। तब उपद्रवी मल्लाहों को उसने समझाया कि ध्रुव तारा बिलकुल उत्तर में नहीं होता। घर से २३०० मील की दूरी पर होने पर भी उसने साथियों को समझाया कि अभी तो हम १७०० मील ही चले पाये हैं, अभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। थोड़े समय में उसे भाड़ियों की कुछ लकड़ियां तैरती हुई दिखाई दीं। आकाश में कुछ पक्षी उड़ते हुए दीख पड़े। स्वप्न सत्य हो गया! १२ अक्टूबर १४९२ को पश्चिमी दुनिया में जाकर कोलम्बस ने अपना झण्डा गाड़ दिया। उसे ‘नई दुनिया’ मिल गई।

अपने चुने हुए कार्य में बार-बार असफलता मिलने पर भी उसमें हारने से मनुष्य जीवन-संग्राम में विजय पाता है। उसकी विजय मित्रों की सहायता, अनुकूल परिस्थिति अथवा अपनी स्वाभाविक

शक्तियों की अपेक्षा बराबर उद्योग करते रहने पर कहीं अधिक अवलंबित रहती है। योग्यता की भी आवश्यकता अवश्य रहती है, पर उद्योग किसी हालत में कम उपयोगी नहीं होता।

बाइबिल में एक वाक्य है—“जो मुसीबतों पर विजय प्राप्त करता है, अपने तख्त पर मैं उसके लिए जगह करता हूँ।”

एक चीनी विद्यार्थी बार-बार अपने प्रयत्नों में असफल होने के कारण निराश हो गया। किताबों को उसने दूर फेंक दिया। लेकिन उसकी दृष्टि एक बूढ़ी औरत पर पड़ी। वह एक लोहे के टुकड़े का घिसकर सुई बनाने में लगी हुई थी। उसके धैर्य को देखकर विद्यार्थी ने भी एक नया निश्चय किया और अन्त में चीन के तीन प्रसिद्ध विद्वानों में उसकी गणना होने लगी।

सिडनी स्मिथ का कहना है कि साधारणतः प्रायः सभी महान् पुरुषों का जीवन अत्यन्त अविरत परिश्रम का होता है। जिन्दगी का पहला आधा भाग वे गरीबी और परिश्रम में बिताते हैं। लोगों का ध्यान उनकी ओर जाता ही नहीं। जब लोग नींद में सपने देखते होते हैं तब वे वर्तमान की परिस्थिति में से रास्ता निकालकर भविष्य के महान् व्यक्ति बनने का मार्ग ढूँढ़ते रहते हैं। उनकी अन्तरात्मा उनसे यही कहा करती है कि तुम जगन् के इस उपेक्षित कूड़े में हमेशा डरगिज नहीं रह सकते, तुम एक दिन जरूर चमकाओगे।

मिलिब्रान कहा करता था कि “यदि एक दिन मैं अपने काम का अभ्यास करना छोड़ देता हूँ तो मुझे अपने अभ्यास की कमी स्पष्ट मालूम होने लगती है; यदि दो दिन निकल गये तो मेरे मित्र देखते हैं; और यदि एक सप्ताह तक यही हाल रहा तो मेरी असफलता को संसार देखता है।” बात ठीक है। बार-बार प्रयत्न करते रहने से दिमाग की शक्तियाँ जाग्रत अवस्था में रहती हैं।

कारलाइल ने फ्रांस की राज्यक्रान्ति का इतिहास लिखा। उसका प्रथम भाग छपने को जानेवाला था कि एक मित्र ने उसे पढ़ने के लिए मांगा।

उसने दे दिया। मित्र की भूल से वह काफी फर्श पर पड़ी रह गई और दासी ने उसे रद्दी कागज समझकर आग जलाने का काम ले लिया। कितनी निराशाजनक बात थी! परन्तु दृढ़व्रती कारलाइल ने हिम्मत न हारी। कई कहीने तक सैकड़ों ग्रन्थों, अनेक हस्तलिखित पत्रों और विश्वसनीय घटनाओं से भरी दर्जनों रचनाओं का अध्ययन करने के बाद उसने फिरसे उस ग्रन्थ को लिख डाला।

बड़े-बड़े लेखक सदा अपनी अदम्य दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध होते हैं। उनकी रचनाएं दिमाग की प्रतिभा की चिनगारियों का परिणाम नहीं होतीं किन्तु बार-बार के सुधार का परिणाम होती हैं। इस रचना-कौशल के द्वारा उनमें विचित्र सौन्दर्य और महानता आ जाती है।

गतिशील पत्थर को काई नहीं लगती; काम में आने वाले लोहे पर जंग नहीं लगता। बार-बार प्रयत्न करने वाला असफल नहीं होगा। बारह वर्ष घर में नियम से प्रतिदिन १ घंटा काम करना स्कूल के चार वर्षों के अध्ययन से कहीं अच्छा है। एक अच्छे ग्रन्थ के पढ़ने से मनुष्य का जीवन सुधर जाता है। बुलवर कहता है कि धीरज विजेता का साहस है। वह सर्वोत्तम गुण है जो मनुष्यके भाग्यके विरोधके आगे खड़ा होता है।

अपने हाथ में लिये हुए कार्य पर जमे न रहने के कारण ही असफलता मिलती है। क्या तुम एक भी ऐसा उदाहरण बता सकते हो जहां सच्ची सफलता की जड़ में दृढ़ता न छिपी हो? अमर चित्रकारों को अपनी कूचियां कागज पर चलाते-चलाते क्या बरसों नहीं बीत जाते? अमर लेखक क्या यों ही बन जाते हैं? क्या उन्होंने बरसों अभ्यास के बाद अपनी रचना पूर्ण नहीं की है? जिस समय संसार ऐश-आराम में मग्न था उस समय वे अपने हाथ में कलम लिये अपने दिमाग और अध्ययन को चिरस्थायी कर रहे थे। बर्क कहता है कि "निराश मत होओ। अगर निराश होओ भी तो अपना काम बन्द मत करो। निराशा में भी काम करते जाओ।"

—पन्द्रह—

संक्षेप

“चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे, संक्षेप में कहना हमेशा ही अच्छा है।” —बटलर

“शब्द पत्तों के समान हैं जहां वे बहुतायत से रहते हैं वहां फलरूपी ज्ञानयुक्त बातें कठिनाई से दिग्वार्ड पड़ती हैं।” —पोप

“जो-कुछ तुम्हें कहना या लिखना हो उसे थोड़े ही में कहो या लिखो।” —जॉन नील

एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है !” —चार्ल्स वक्सटन

संक्षेप में अपनी बात कह डालो। बुद्धिमता और विनोद में खास ध्यान देने योग्य बात संक्षेप है। सांस के वेग से भी दूर हट जाने वाली वायु को एक जगह खूब दबाकर रखने से उसमें इतनी ताकत आ जाती है कि वह अपने सामने की चट्टान के भी टुकड़े-टुकड़े कर देती है। यदि तुम कोई महत्त्वपूर्ण काम करना चाहते हो तो एकाग्रता पर ध्यान दो। यदि तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी बातों से लाभ उठायें तो उसके सार को एकत्र करके रखो।

‘न्यूयार्क ट्रिब्यून’ में होरेस ग्रील जिस विषय पर एक लेख लिखता था उसी विषय पर थरली बीड एक अन्य पत्र में कुछ शब्द ही लिख देता था। उसके ये शब्द चिनगारियों का काम करते थे।

साइरस प्रील्ड्स अपने मुलाकातियों से कहा करता था—“जो कुछ आपको कहना हो, संक्षेप में कहिए। समय अमूल्य है। ठीक समय पर काम करना, ईमानदार रहना और संक्षेप में काम निकालना, ये तीनों ही जीवन की कुंजियां हैं। लम्बी छिट्ठी मत लिखा कीजिये। एक कामकाजी

आदमी के पास उसे पढ़ने के लिए समय नहीं है। ऐसी कोई भी बात नहीं है जो एक कागज़ पर न लिखी जा सकती हो। बरसों पूर्व जब मैं एटलान्टिक महासागर में समुद्री तार डालने में लगा हुआ था तब मुझे एक महत्वपूर्ण पत्र इंग्लैण्ड को लिखने का मौका आया। मुझे मालूम हुआ था कि रानी और प्रधानमन्त्री उसे पढ़ेंगे। अपने विचारों को मैंने लिखा। कई कागज़ भर गये। मैंने उसको बीस बार पढ़ा। हर बार कुछ-न-कुछ अनावश्यक शब्दों को दूर कर देता था। होते-होते सारी बात कागज़ के एक टुकड़े में आ गई। फिर मैंने उसे ठीक करके समय पर भेज दिया। उसका उत्तर सन्तोषजनक आया। क्या आप सोचते हैं कि लम्बा पत्र भेजता तो उसका भी यही फल होता? उस पत्र को पढ़ने के लिए उनके पास समय कहाँ से आता? संक्षेप एक बड़ी मूल्यवान वस्तु है।”

ए० टी० स्टुअर्ट अपने समय को पूंजी समझता था। उसके दफ्तर में कोई भी व्यक्ति दरबान को बिना सूचना दिये प्रवेश न कर पाता था। इसके बाद दफ्तर के पास खड़े रखने वाले नौकर को भी सूचना देनी पड़ती थी। यदि आगन्तुक ‘अकेले’ में मिलने की इच्छा प्रकट करता तो नौकर कह दिया करता कि मि० स्टुअर्ट किसीसे अकेले में नहीं मिलते। जब इतनी आपत्ति उठाने के बाद कोई स्टुअर्ट के सामने पहुँचता था तब उसे बिजकुल संक्षेप में बातचीत करनी पड़ती थी। स्टुअर्ट के भारी कार-बार का समस्त कार्य योग्य प्रणाली और शीघ्रतासे होता था। प्रतिद्वन्द्वी व्यापारी उसे देखकर आश्चर्य में पड़ जाते थे। इधर-उधर कुछ नहीं होता था। व्यापारिक ढंग ही उसके जीवन की कुंजी थी। सुबह से शाम तक यही बात आँखों के सामने रहती थी। वह काम-काज के समय में अपने मित्रों से बातचीत तक न करता था। उसके पास एक क्षण भी व्यर्थ जाने के लिए नहीं था।

साउदी ने ठीक कहा है कि यदि तुम तीव्र होना चाहते हो तो संक्षेप

को ग्रहण करो। सूर्य की किरणों के एकत्र होने से आग लग जाती है, संक्षेप का भी ऐसा ही फल होता है।

स्टील ने कहा है कि जब किसीको केवल स्पष्ट ही कहना है तब वह थोड़े में कह सकता है।

ग्रीस के सात विद्वानों का नाम संसार में आज तक उनके दो अथवा तीन शब्दों के छोटे-छोटे वाक्यों के कारण ही बना है।

एडवर्ड ट्रायन ने भी कहा है—“राष्ट्रों की विद्वत्ता उनकी कहावतों में है। हमेशा इसको ध्यान में रखना चाहिए कि पहले कहने के लिए कुछ सामग्री हो। सामग्री होने के बाद अपने कथन को संक्षेप में कह दो और चुप हो जाओ।”

